हे भगवन् एतु म्हारी होउ त्रिलोकी के मंगलरूप औरं तापन के दूरि करवे कौं और मत्युके जीतवे कुं है ऐसे ही या विश्व की रक्षा कौं और हम अनेक मार्जिन कोध रो हो या विश्व कौं रजो हूं उनिसे धारो हो हे उरो नाम ३३ स्थावरजंग म के ईश्वर अरूपालक ऐसे जु म्हारे चरण कमल कौं तम भजन करे है जिन चरणकमल के प्राप्त ते जनन कौ काल कर्मगणन के नालिम्पता पादिक जन कौं कोई परमबर सबै वेरवे ता मुनि सब जिनेचरन की प्रस्तुत मरन मल्हार करे जे जनन करनि निरंतर ध्यान करें जिन चरनन की प्राप्ति कौ है ईस अपवर्ग मार्जि सब और नतें भय पढे जिन कौ ऐसे जनन

स्मार्त्तेश्मे भगवतो भगवन्नस्त्रिलोक्याः हे माय तापविरमाय च मत्युजित्यै नानाविनर्ष्वि वितुमन्यत नूर्ये घे दं स्रष्टा पुनर्गसासि सर्व भिवोर्णनाभिः ३३ नस्पाविन्तुः स्थिरचरेशितुरेंद्रिमूलं यस्थन कर्म गणकाल रजसा संति यद्वेस्तु वंति निनमंति पजंस्य भीत्स्यं ध्यायंति वेद हृदयो मञयस्तु तस्यै नान्यंत वांछयनयाद पवर्गमूर्ते: हे मं जनस्य परितो भियई सविश्वः ब्रह्मा विभेत्यलमतो द्विपराध्यधिष्णा कालस्य ते किमुत चक्रनत्क्रुत भौतिकानां सद्भजाम्युता धियस्तव पादमूलं हित्वे हमात्म च्छिदि चात्मगुरो: परस्य देहाद्य पार्थमसदंत्यमभिज्ञमात्रं विदेतते नर्हि सर्वमनीषितार्थम् ३४

कौ तुम्हारी चरन कमल की प्राप्ती तें और अधिक मंगल हम नहीं जानै हैं द्विपरार्द्ध हैं प्राबल्य जाकी ऐसो ब्रह्मा तुम्हारी भृकुटी रूप काल तें अति सय करउर पैरे तिन के सजे प्राणी डरपै है यामें कहा आश्चर्य है आत्म के प्रावरनक रनहारे जु छुनश्वर निरफल ऐसे देहादिक भजन कौं छोड कै सत्यज्ञान सरूप हे ईस रूप सब जिवन के नियंता सवन तें परे ऐसे तुम्हारे तिन चरन कमल कौं हम भजन करें हैं तिन चरनन के भजन तें हम तें सब मनोरथन की प्राप्ति होहे ३४

हे ईश सत्वरजतम ए तीनोगुण मायामय पालनउतपत्तिसिंहारकों होत विरंचिआदिसव तुम्हारीही लीलारूप
हैं तथापि सत्वहीमूर्त्तितें मनुष्यन कैं सांति होती हैं रजतममूर्त्तिनसों तिनरजतमगुणनतें दुःषमोहभय आ
दि होत हैं ३५ हे भगवान् तातें चतुरजन तुम्हारी शुद्धिसत्वमूर्त्तिकौं भजैं हैं तातें संतसव सत्वकौं पुरुषकौ स्वरूप

सत्वं रजस्तम इति त्रिवृदात्मबंधो मायामया स्थितिलयोदयहेतवोऽस्य लीलाधृतायदपिसत्वमयि
प्रसांत्यै नान्ये नृणां व्यसनमोहभियश्च याभ्यां ३५ तस्मात्तवेह भगवन्नथतावकानां शुक्लां तनुं स्वद
यितां कुशलाभजंती यत्सात्वताः पुरुषरूपमुशंतिसत्वं लोकोयतोभयमुतात्मसुखं नचान्यत् ३६
तस्मैनमोभगवते पुरुषाय भूम्ने विश्वाय विश्वगुरवे परदेवतायै नारायणाय ऋषये च नरो
त्तमाय हंसाय संयतगिरे निगमेश्वराय ३७

करिकैं जासत्वगुणतें जन निर्भैसुखीहैं तुम्हारे लोककौं प्राप्तिहोइहैं रजोगुणतमोगुणतें नहीं ३६
विश्वकेगुरु विश्वरूप सवनतें श्रेष्ठपुरुष देवतानके देवता शुद्धस्वरूप वृथावाणीकरहीन वेदो
नके प्रवर्तक ऐसे भगवान् नरनारायन ऋषि तुमकौं हमारी नमस्कार है: ३७

कपटई इंद्रीनके मारग करि विषिमतें वाद्धिजिनकी औरतुम्हारी मायाकरि आवृत है मतिजिनकी ऐसेजनअ पने हृदयआकास में और नेत्रनके पेटमें विराजमान हू तुमको न जानैं सोजन अखिलके गुरु तुम्हारे प्रकाश वेदनकौं पायकें तुमको साक्षात जानें हैं ३८ रहस्यतत्व जोहै प्रकाश जामें ऐसौ तुम्हारो दर्शन एक वेदहीमें है या हीतें सांख्ययोगादिकन करि जतनकेकरनहारे ब्रह्मादिकहू तुम्हारे दर्शनकौं न पावें निर्गुण सगुणादि सबनके

यंवैनवेदवितथाक्षपथैर्भ्रमद्धिः संतंस्वखेष्वपिहृद्यपिदृक्पथेषु तन्मायायावृतमतिः सउएव साक्षात्दाद्यस्तवेऽखिलगुरोरुपसाद्यवेदम् ३८ यद्दर्शनंनिगमआत्मरहःप्रकाशंमुह्यंतियत्रकवयोऽजपरायतंतः तंसर्ववादविषयप्रतिरूपशीलंवंदेमहापुरुषमात्मनिगूढबोधम् ३८ इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेअष्टमोध्यायः ८ श्रीसूतउवाच संस्तुतोभगवान्नित्थंमार्कंडेयेनधीमता नारायणोनरसखः प्रीतआहभृगूद्वहम् १

वचननके अनुकूल हैं स्वभाव जिनकौं और देहादिकनमें अभिनिवेशकरि गूढहै तत्वज्ञान जिनको ऐसे महापुरुष तुमकौं नमस्कार है ३८ इतिश्रीभागवते द्वादशस्कंधे अष्टमोध्यायः ८ श्रीसूतजी कहतेहैं सौनकसौं या प्रकार बुद्धिमान मार्कंडेयनें अस्तुति जिनकी करी ऐसे भगवान नरनारायण प्रसन्नहै तिन सौं बोलत भए १ ॥८॥

हे ब्रह्मरिषिन मैं श्रेष्ठ मन की एकाग्रता करि और तप अध्येन संजम करि और अनुपायनी हमारी भक्ति करि तु
म सिद्ध भये २ तुम्हारो मंगल होउ तुम्हारे नैष्ठक ब्रह्मचर्य्य करि हम बहुत संतुष्ट भए ताते वरदातान के ईश्वर
हमते तुम मन वांछित फल मांगो सो हम दें ३ यह वचन सुनि के मारकंडेयजी बोले हे देवन के देव हे ईश हे

श्रीभगवानउवाच॰ भो भो ब्रह्मऋषिवर्य्योऽसि सिद्ध आत्मसमाधिना मयि भक्त्यानुपायिन्या तपः
स्वाध्यायसंयमैं २ वयं ते परितुष्टास्म त्वद्बृहद्व्रतचर्य्यया वरं प्रतीक्ष भद्रं ते वरदेसादभीप्सितम् ३
मारकंडेयउवाच॰ जितं ते देवदेवेश प्रपन्नार्तिहराच्युता: वरेणैतावतालं नो यद्भवा
न्समदृश्यतः ४ गृहीत्वाजादयो यस्य श्रीमत्पादाब्जदर्शनम् मनसा योगपक्वेन स भवा
न्मेऽक्षिगोचरः ५

भक्तन के दुख नास करनहारे अच्युत सदां जय पाओ तुम जो साक्षात दर्शन दीयो इतो हम कों बडो वर है ४ जो
गसो पक्व भयो मन करि जा तुम्हारे स्वभावकृत चरन कमलन के दर्शन पाइ के प्राकृत जन ब्रह्मादिक ते
होजाइ सो तुमहीं हमारे आगे साक्षात भये ५

हे कमलदललोचन हे पुण्यश्लोकशिखामणि तथापि जो वर दीयो चाहो तो यह वर देहु अपनी जो माया ताय हम कों दिखाओ
जा माया कर लोकन सहित लोकपाल सब मोहित होहैं ६ तब सूत सौनकन सों कहै हैं हे मुनी ऐसें भांति रिषि करिकर
हैं रिषिश्वर भगवान की अस्तुति करै हैं जिनकी सो भगवान् ईश्वर तिन मुनीनकर पूजित तरैं तुसक्षायके सोइ वर देत

अथाप्यंवुजपत्राक्ष पुण्यश्लोकसिखामणे द्रक्ष्ये मायां यया लोका सपालो वेद सद्भिदाम् ६॥ श्री सूत उवाच।
इतीडितोर्चिताकाम: ऋषिणा भगवान मुने तथेति सस्मयन्प्रागाद्बदर्य्याश्रममीश्वर: ७॥ तमेव चिंतय
न्नर्थ: ऋषि: स्वाश्रम एव च: सवसन्नग्न्यर्क सोमांबुभूवायुर्विदात्मसु ध्यायन्सर्वत्र च हरिं भावद्रव्यैर
पूजयत् ८ कुचित्पूजां विसंस्मार प्रेमप्रसरसमुना: ९ श्रीरामकृष्णाभ्यां नम: श्रीकृष्णाय नमो नम:॥

भये तब तो वर देकैं बद्रिकाश्रम कों जाते भये ७ तदनंतर कहीये ताके अनंतर सो ऋषि ता वर कों चिंतवन
करतो अपने आश्रम मैं वैठिकैं। अग्नि। सूर्य्य। चंद्रमा। जल। भूमि। पवन। आकास। मन। इन सबन विषे भा
वना सु पद्रव्य करि हरकों पूजन करतो भयो कब भय एक भक्ति के आवेश कर पूजा हू कों भूल जाहु: ९ श्री हरि:

भा॰ध्व॰ सूतजीसौनकादिकनसोकहैहैं हे भृगुवंसीनमैंश्रेष्ठ हे मुनी हे ब्रह्मन एपएकदिनसंध्यासमैंपुष्पभद्रानदीकेतट विषें
३४ वैठे तिनमुनिनकेआगेहोवडीपवन चलतभई १० सवओरहैंवेगजाकोवडेशद्बकोंकरैं ऐसेतापवनकेपीछेविः
जुरीनसहितभयानकमेघप्रघटेहैं अथगर्भेहैं रथकेपैयासीधारासवओरनतेछोडतभयो ११ उगरतेंश्राऋजामें

तस्यैकदाभृगुश्रेष्ठपुष्पभद्रातटे मुने उपासीनस्यसंध्यायां ब्रह्मन्वायुरभून्महान् १० तंचंडशद्बं
समुदीरयंतवलाहकाअन्वभवन्कराला अक्षस्थविष्ठमभचुस्तडीद्भिःस्वनंतउच्चैरविवर्षधारा ११
ततोव्यदृश्यंतचतुःसमुद्राःसमंततःक्ष्मातलमाग्रसंतः समीरवेगोर्मिभिरुग्रनक्रमहाभयावर्तगभी
रघोषा १२ अंतर्वहिश्चाद्भिरतिद्युभिःखरैःशतह्रदाभिरुपतापितंजगत चतुर्विधंवीक्ष्यसहा
त्मनामुनिर्जलाप्लुतांक्ष्मांविमनाःसमत्रसत् १३

अरुमहाभयानकहैंभमरजामें वडेगंभीरसद्बकरतऐसेंसमुद्रपवनकेवेगतें तरंगनकरकेसवओरन
तेपृथवीकोवोरतदिखाईदेतभएँ १२ आकासकेअतिक्रमकरनवारे जलकीरैं असनीस्वरापवन
वीजुरीनकरचारप्रकारकेजगतकोंवाहरभीतरतेंपीडतदेखकेअरुआपसमेंपृथ्वीकोनाजलकर वूडतदेखकैंअतिविमन

तामुनकेदेषतनहीतरंगभयानकपवनकर उछलेजलजाको ऐसेसोसमुद्रवर्षातेमेघनाकरअतिएरएहैंसबओरन
तेद्वीपखंड परवतनसमेतएथ्वीकोडुवावनभयो १४ भूमिअंतरिक्षस्वर्गनक्षत्रदिसानसहितत्रिलोकीजलमयहोत
भई ताजलमेंइकलोहीसोमहामुनिवडीजटानकोफैलाएं जडअंधसोहैं भ्रमतभयो १५ भूषप्यासकरपीडीतमकर

नसेवमुदीक्षत ऊर्मीभीषणाःप्रभंजनाघूर्णितवामिताणवःआप्लूर्यमाणोवर्षद्भिरंबुदैःक्ष्मा मप्यधाद्द्वी
पवर्षाद्रिभिःसमं १४ सक्ष्मांतरीक्षंसदिवंसभागणंत्रैलोक्यमासीत्सहदिग्भिःराप्लुतं सएकएवो
र्वरितोमहामुनिर्बभ्रामविक्षिप्यजटाजडांधवतः १५ क्षुत्तृट्परीतोमकरैस्तिमिंगिलैरुपद्रुतोवीचीन
भस्वताहतः तमस्यपारेपतितोभ्रमन्दिशोनवेदखंगांचपरिश्रमेषितः १६ क्वचिन्मग्नोमहाव
र्तेतरलैस्ताडितःक्वचित पादोभिर्भक्ष्यतेक्वापिस्वयमन्योन्यघातिभिः १७ श्रीरामकृभाः

तिमिंगलेनकरिभयभीतीपवनकीझकोरनैओरतरंगनतेंताडियैं अपारअंधकारमेंपर्योभ्रमकरमा
निहैदिसाआकासभूमिकोइनकोनज्ञानतभयो १६ कवहुतोवडेभोरमेंपरेकवहुंतरंगनकरमारि
यै याकेघायवेकेनिमितआपसमैंलरैं ऐसेजलजंतुनकरिकवहुंभक्षितहोतभयो १७ श्रीहरिः

भा·द्वा· कवहुं शोक कवहूं मोह कवहूं दुःख कवहुं सुख कवहूं भय कवहूं रोग कवहूं रोष कवहूं रोगादिकनि करि पीडित होई है १८
३५ हरकी मायाकरि आवृत कहै चित जाको असे ता मुनि को ता जल विषैं भ्रमत अयुतायुत हजारन सैकरान वर्ष विती
नि भरें १९ सो द्विज एक समें ता जल मे भ्रमत पृथ्वी के एक कटायुन मे पल्लवनकरि शोभित एक वट को पेड पोदद

क्वचिछोकं क्वचिन्मोहं क्वचिदुःखंसुखंभयं क्वचिन्मृत्युमवाप्नोति व्याध्यादिभिरुतार्दिता १८ अयुत
युतवर्षाणां सहस्राणिशतानि च: व्यतियुर्भ्रमतस्तस्मिन् विष्णुमायावृतात्मनः १९ सकदा
भ्रमंस्तस्मिन्पृथिव्याककुत्नी द्विजः न्यग्रोधपोतंददृसे फलपल्लवशोभितं २० प्रागुत्तर
स्यांसाखायांतस्यापिददृसेशिशुं सयानंपर्णपुटिके ग्रसंतंप्रभयातमः २१ महामरकत
स्यामंश्रीमद्वदनपंकजंम् कंबुग्रीवंमहोरस्कं सुनासंसुंदरभ्रुमं २२

षत भयो २० तावरके पूर्व उत्तर के वीच की साखा के पात मैं सोयो अपनी कांति मैं अंधकारको ग्र
सैं असो एक बालक देषत भयो महा मरकत मणि से स्याम सोभा जुत मुख तीन रेषा जुत ग्रीवा
विशाल वक्षस्थल सुंदर नासा और सुंदर हैं भ्रकुटी जाकी २२ ३५

स्वासनतैं हलती अलकनकर षोभित हैं मुखारविंद जिनको संखकीसी रेखानकर सोभित कं
ठविषैं अनारके फूलनको धरें मूंगाकैसी अधरनकी कांतिकरि अरुण हैं अमृतसी मंद मुसिक्यानि
जाकी हृदयकमलके बीचदलकैसे अरुण हैं नेत्रनके कोण जिनके सुंदर हास्य जु लसै है चितवन जाकी
स्वासके लेन हलें ऐसो त्रवलीकरि सोभित गंभीर नाभिकरि सोभित जु सू पीपरके पात सो उदर है जाको

श्वासैजदलकाभातं कंबुश्रीकर्णदाडिमम् विद्रुमाधरभासेषच्छोणायितसुधास्मितम् २०
पद्मगर्भारुणापांगं हृद्यहासावलोकनम् श्वासैजद्वलीसंविग्ननिम्ननाभिदलोदरम् २१
चार्वंगुलिभ्यां पाणिभ्यां मुन्नीय चरणांबुजम् मुखे निधाय विप्रेंद्रो धयानं वीक्ष्य विस्मितः २२
तद्दर्शनाद्वीतपरिश्रमो मुदा प्रोत्फुल्लहृत्पद्मविलोचनांबुजः प्रहृष्टरोमाद्भुतभावशंकितः
प्रष्टुं पुरस्तं प्रससार बालकं २३

मनोहर हैं अंगुरी जिनमें ऐसे दोऊ हाथनकरि उठायकैं अपने चरनकमलकों मुखमें राखकैं
पानकरै है ऐसे ता बालककों देखिकें विप्रेंद्र [illegible]स्मित होत भए २२ तिनके दर्शनके आनंदक
रि दूरभयो है श्रम जाको और प्रफुल्लित है हृदयकमल और नेत्रकमल जाके और रोमांचन जु
क्त अंग है जाको अद्भुत भावसों संका जु लसै है पूछवेके लीयें ना बालकके पास जात भए ॥ २३ ॥

ना॰द्वा॰ ३६ ताके भीतर तासमैं भृगुवंसी मुनि ताबालक के स्वासकर मछरसो ताबालक के भीतर जात भयौ. तहां या वि
श्व कौं पैहैलें के सो देखि के अति विस्मित हैं मोहित होत भयौ २७ आकास भूमि स्वर्ग नक्षत्र गण पर्व
त समुद्र दीप खंड दिशा देवता असुर वन देश नदी पुर सान ब्राह्मनन के आस ग जन के विरक्त व
र्ण आश्रम तिन की जीविका इन सबन कों देखत भयौ पंच महाभूत तिन के रचे प्राणी जुग कल्पादि रूप

तद्विष्णोर्विश्वसितेन भार्गवोऽन्तःशरीरं मशकोयथाविसत तत्रापिदोन्यस्तमचष्ट कृत्स्न
शो यथा पुरामुह्यदतीव विस्मितः २७ खं रोदसी भगणानद्रिसागरान् द्वीपान् सवर्षान् ककुभः
सुरासुरान् वनानि देशान् सरितः पुराकरान् खेटान् व्रजानाश्रमवर्णवृत्तयः महान्तभू
तान्यथ भौतिकान्यसौ कालं च नानायुगकल्पकल्पनं यत्किंचिदन्यद्व्यवहारकारणं द
दर्श विश्वं सदिवावभासितं । हिमालयं पुष्पवहां च तां नदीं निजाश्रमं तत्र ऋषीनपश्यत् २५
विश्वं विपश्यन् श्वसिताच्छिशोर्वै बहिर्निरस्तो न्यपतल्लयाब्धौ २६

जो काल और हूं जो कछु व्यौहार कौं कारन यह सब विश्व मिथ्या हैं सांचौ सो भासत देखत भयौ।
हिमालैं पुष्पभद्रा नदी अपनो आश्रम ता आश्रम मैं जे रिषि इन सबन को देखत भयौ २५ पां
सो ति विश्व कौं देखतो मार्कंडेय जू ताबालक के स्वास तैं बाहर निकस के समुद्र मैं तरत भयौ २६ ३६

तहांपृथ्वीकेएकस्थलमैं जोवटजाकेपातमैंसोवतेबालकमुनिदेखतभयें सोबालकहूंप्रेमरूपअमृतजुतमुसी
क्यानहैं जिनमैं ऐसेनेत्रनकीकोरमार्कंडेयकूंदेखतभये तदनंतरहृदैमैंचुभनेहारैं ताबालककोंदोउ
नेत्रनकरिकैं देखकेअतिकलेशपाकरसोमार्कंडेयजू तिनअधोक्षजकेआलिंगनकरवेकोंसन्मुखजात

तस्मिन्पृथ्व्याःककुदिप्ररूढंवटंचतत्पर्णपुटेशयानं तोकंचतत्प्रेमसुधास्मितेननिरीक्षितो
पांगनिरीक्षणेन अथतंबालकंवीक्ष्यनेत्राभ्यांधिष्ठितंहृदि अभ्ययादतिसंक्लिष्टःपरिष्व
क्तुमधोक्षजं २७ तावत्सभगवान्साक्षाद्योगाधीशोगुहाशयः अंतर्दधेऋषेःसद्यो यथे
हानीशनिर्मिता २८ तमन्वथवटोब्रह्मन्सलिलंलोकसंप्लवः तिरोधायिक्षणादस्यस्वा
श्रमेपूर्ववत्स्थितः २९ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेनवमोध्यायः ९ सूतउ
वाचः सएवमनुभूयेदंनारायणविनिर्मितं वैभवंयोगमायायास्तमेवशरणंययौ १ श्रीरंग:

भयो २७ तवताईजोगकेईश्वरसबनकेहृदैमैंरहनहारेसोसाक्षात्भगवान् तदपिऋषिकेदेखतही
अंतरध्यानहोतेभऐं जैसेंईश्वरविमुखकीक्रीया २८ हेब्रह्मनएतदनंतरसोवटअोरप्रलयकोजल लोकनकोंबुड-
प्रहोदे: २ वोछिनएकमैंजातरह्यो सोऋषियहलेअपनेआश्रममेंरहतभयो २९ इतिबारहेंनवमोअध्याय ९ सूतजीक
दो॰ २ हैंहैं सोमुनिनारायणकरनिर्मितजोगमायाकोंवैभवदेखकेतिनहरकोंसरनजातभयो १

भा॰ म॰ मार्कंडेजीबोले अहोज्ञानसी भासे ऐसी जिनकी माया करकें बडे बडे ज्ञानी मोहित होय ऐसे तिन हरके सरण आव
३७ नहारेन के अभयके दाता ऐसे चरन कमल के दाता हम सरन है २ श्री सूतजी कहै हैं एकाग्र है चित्त जाको ऐ
से ता मुनि को वृषभ पै चढे भवानी सहित भगवान रुद्र आकास में गणन करवे छिन परयटन करत देषत भए ३
देवी नाऊ ऋषि को देषिके सिवजू सो बोलत भई हे भगवान एकाग्र है मन चित्त इंद्री जाकी सो या विप्र को देखो॥

मार्कंडेय उवाच: अपन्नोऽस्म्यंघ्रिमूलं ते प्रपन्नाभयदं हरे यन्मायया पि विबुधा मुह्यंति ज्ञानकाशया २
सूत उवाच॥ तमेवं निभृतात्मानं वृषेण दिवि पर्यटन् रुद्राण्या भगवान् रुद्रो ददर्श स्वगणैर्वृतः ३
अथोमा तमृषिं वीक्ष्य गिरिशं समभाषत: पश्येमं भगवन् विप्रं निभृतात्मेंद्रियाशयं ४ निभृतोद
झषव्रातो वातापाये यथार्णवः कुर्वस्य तपसः साक्षात् संसिद्धिं देहि भवान् ५ श्री भगवानुवाच: नैव
वांछत्यासिष: क्वापि ब्रह्मर्षिर्मोक्षमप्युत भक्तिं परां भगवति लब्धवान् पुरुषेऽव्यये ६॥

विना आधार को निश्चल जल जंतु हैं जाके ऐसो समुद्र सो ४ सो या मुन को तप को फल देहु या तें तुम सिद्धन के
दाता हो ५ अब श्री महादेवजी पार्वतीजी सों अब कहै हैं अव्यय पुरुष भगवान विषें भई है प्रेम लक्ष
णा भक्ति जाकी ऐसो यह ब्रह्मरिषि: मुक्ति परंजंत काम नान को नहूँ न चाहें हैं ६

हे भवानी तथापि यासाधुके शहत संवाद करैंगे जाते साधनकौ संगमनुष्यनकौ परमलाभ है ७ सो छनि सावधा
न साधुनकी गति सब विधानके अरु सब देहधारीनके ईश्वर ऐसे भगवान् शिवजू देवि सो हरजोरिकैं ताछनि कैनि के
हजात भए ८ रोकि है बुद्धि की वृत्ति जानें ऐसे मार्कंडेयजू जगतके आत्मा ईश्वर तिन दोउनकौ साक्षात् आयवौ न जा
नतभयो अपुनपेकों और विश्वहू कौन जानत भयो ९ ता शिषिकों समाधि निष्ठ जानिके कैला सवासी ईश्वर

तथापि संवदिष्यामो भवान्येतेन साधुना अयंहि परमोलाभो नृणां साधुसमागमः ७ श्रीसूत उवाच। इत्
थापि संवदिष्यामो भवान्येतेन साधुना अयंहि परमोलाभो नृणां साधुसमागमः ७ श्रीसूत उवाच। इत्यु
क्त्वा तमुपेयाय भगवान् स सतां गतिः ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वदेहिनाम् ८ तयोरागमनं साक्षादीश
योर्जगदात्मनोः नवेद रुद्धधीवृत्तिरात्मानं विश्वमेव च ९ भगवांस्तदभिज्ञाय गिरिशो योगमायया
आविशत्तद्गुहाकाशं वायुश्छिद्रमिवेश्वरः १० आत्मन्यपि शिवं प्राप्तं तडित्पिंगजटाधरं त्र्यक्षं दशभुजं
प्रांशुमुद्यंतमिव भास्करं॥ व्याघ्रचर्मांबरं शूलं धनुरिष्वसिचर्मभिः अक्षमालाडमरुककपालं परशुं सह
बिभ्राणं सहसा भातं विचक्ष्य हृदि विस्मितः ११

भगवान् जो माया करिकैं ताके हृदय आकाश में प्रवेश करत भए जैसे पवन छिद्र में प्रवेश करै १० तीन नेत्र
दशभुजा ऊंचो शरीर बिजुरीसी पीलजटानकों धरैं जैसे प्रातके सूर्य से सुहावन व्याघ्र चर्मके वस्त्र शूल धनु
ष बान खड्ग ढाल डोंरू रुद्राक्ष और कपालनकी माला फरसा इन सबनकौ धरैं ऐसे शिवजूकों आकाशमै ते हृदय
मे आये प्रकाशमान देखिकैं मार्कंडेयजू अचरज पाय ११

१ मताहे

भा॰ द्वा॰ इतें कहांतें आय प्राप्ति भये इह विचारतें मुनि समाधितें नीवृत्त है नेत्रन कों खोलि कें गण और पारवती सहित
३८ आए शिव जू कों देखितें भयो १२ त्रिलोकी के एक ही गुरु रुद्र जू कों सो मुनि माथे सों नमस्कार करि कें भलें आये इ
त्यादि आसन चरन धोयवे कों जल अर्घ सुगंध माला धूप दीप इन सबन करि कें देवीगण सहित तिनकी पूजा
करत भयो १३ तहनंतर सो मुनि तिन सों बोलत भयो हे विभो हे ईश आपने प्रभाव करि पूरणकाम तुम कों हम कहा

किमिदं कुत एवेति समाधेर्विरतो मुनिः नेत्रे उन्मील्य ददृशे सगणं सोमयागतम् रुद्रं त्रिलोकैकगुरुं
ननाम सिरसा मुनिः १२ तस्मै सपर्यां व्यदधात्सगणाय सहोमया स्वागतासनपाद्यार्घगंधस्रग्धू
पदीपकैः १३ आह त्वात्मानुभावेन पूर्णकामस्य ते प्रभो करवाम किमीशान येनेदं निर्वृतं जगत् १४
नमः शिवाय शांताय सत्वाय प्रमृडाय च रजोजुषेथ घोराय नमस्तुभ्यं तमोजुषे १५ सूत उवाच
एवं स्तुतः स भगवान् आदिदेवः सतांगतिः परितुष्टः प्रसन्नात्मा प्रहसंस्तमभाषत १६

जिन तुम करि इह जगत सुखी है १४ सत्वगुण कों अंगीकार करौं तातें सबन कों सुखदाई हौ और रजोगुण तमो
गुण कों अंगीकार करै तें भयानक ऐसे हौ कें भिन्न गण शांति सों ऐसें तुम कों नमस्कार करै हैं १५ अब श्री सूत जी कहै हैं
या भांति करि कें अस्तुत जिन की ऐसे सों भगवान् साधुन की गति आदिदेव संतुष्ट हैं प्रसन्न है हसि कें बहु
त प्रसन्न तातें जा मुनि सौं बोलत भये १६

अव मृतादेव जी कहै है हे मुने हम तैं मन वांछित वर मागो जाते हम तीनों वरदाता न के ईश्वर हैं सुफल है दर्शन जिनकौं ऐसे तुम तीन्यौ मर्त्य धर्मी मनुष्यन कौ अमृत स्वरूप है १७ साधु शांति निःसंग प्राणीन पै दयाल हम तैं नविषै एकांत भक्ति निर्वैर समदर्शी ऐसे जे ब्राह्मण है तिनकौं लोक औ लोकपाल भगवान् ब्रह्मा औ हम अरु आप श्री हरि ईश्वर दंडोत करैं पूजन करैं उपासना करैं १८ ते ब्राह्मण हम अच्युत ब्रह्मा इन तिनन

श्रीभगवानुवाच: वरं वृणीष्व नः कामं वरदेशा वयं त्रयं : अमोघं दर्शनं येषां मर्त्यो यद्विंदतेऽमृत
म् १७ ब्राह्मण: साधव: शांत: निःसंगा भूतवत्सला: एकांतभक्ता: अस्मासु निर्वैरा: समदर्शिनः
सलोका लोकपालास्तान् वंदंत्यर्चंत्युपासते अहं च भगवान् ब्रह्मा स्वयं च हरिरीश्वर: १८ न ते
मय्यच्युतेऽजे च भिदामण्वपि चक्षते नात्मनश्च जनस्यापि तद्युष्मान् वयमीमही १९ न ह्यम्मयानि
तीर्थानि न देवाश्चेतनोज्झिता ते पुनंत्युरुकालेन यूयं दर्शनमात्रत: २०

विषैं तनक हू भेद दृष्टि न देखैं और अपनपें मे और सब जनन मैं तनक हू भेद दृष्टि न देखैं ताते तुम सा रखे ब्राह्मण कों हम सब भजन करै है १९ जलमय जे तीर्थ नदी और मृत्तिका स्वरूप जे देवता न है ते सब बहुत काल करि पवित्र करैं तुम दर्शन मात्र ही ते पवित्र करो हो २० 

मा॰ भा॰ चित्तकी एकाग्रताकरकें तप स्वाध्याय संजम इनसबन करि वेदत्रैमयरूप मारे रूपाको जो आत्मनाधार लख
३६ रें तिनकों हम सबन नमस्कार करें २१ तुम्हारे श्रवणतें अथवा दर्शनतें मायापतकी ओरहू अेतजनम हूं होई
यामें कहा कहतनों हैं २२ अब श्री सूतजी कहे हैं याभांति चंद्रभालशिवजूके गुह्यधर्मप अमृतरूप वचनको कर्ण
करि पान करकें शिथिरपतन नहीं होत भयो २३ विष्णुकी मायाकरि बहुत हीनन ताई भ्रमतो दुखितसो मुनि शिव

आत्मने भो नमस्यामो येस्म हुपं त्रयीमयम् वित्रस्यात्मसमाधानतपस्वाध्यायसंयमे २१ श्रवणा
द्दर्शनाद्वापि महापातकिनोपि वः शुद्ध्येरन्नंत्यजाश्चापि किमु संभाषणादिभिः २२ सूत उवाच
इति चंद्रललामस्य धर्मगुह्योपबृंहितम् वचोमृतायनमृषिर्नातृप्यत्कर्णयोः पिबन् २३ सचिरं मा
यया विष्णोर्भ्रामितः कर्शितो भृशं शिववागमृतध्वस्तक्लेशपुंजस्तमब्रवीत् २४ ऋषिरुवाच
अहो ईश्वरचर्येयं दुर्विभाव्या शरीरिणां यन्नमंतीशितव्यानि स्तुवंति जगदीश्वरः २५

जीके अमृतवचन नकरि समस्त क्लेशके निवृत्ति हुँ तिनशिवजूसों बोलत भयो २४ अब मार्कंडेय
ऋषि कहैं हैं अहो ईश्वरनकों चरित्र देहधारीनकों अतर्क्य हैं जातें जगतके ईश्वर हैं ते अपने आधीन प्रजा
नकी अस्तुति करें औरतिनको नमस्कार करें २५ ३८

अथवा धर्मकौ उपदेश ईश्वर करत हैं धर्म एक मनुष्यन राय वेनौं देहधारीनकी जो या अस्तुति करैं अरु मोदन करैं और आ
पुहविन जीयननौं करैं २६ अपनी मायामय वृत्तिनसुं काराटी करि भगवानकौ प्रभाव दुखित नहीं होइहै जैसे मा
यावी अपनी मायाकी क्रिया करि दूषित न होइहै २७ जो ईश्वर अपुरी मन करि गुणन द्वारा या जगत कूं सृजिकें
तामें प्रवेश हू करता सो भासै है जैसें स्वप्नको जो उ नगर वनाइ वैं तामें प्रवेश हू कें करता सो भासै नुणएमयत्रग

धर्मं ग्राहयितुं प्राता मवत्या रथ्य देहिनां आचरं स्तन्न मोदं ते क्रियमाणं स्तुवंतिच २६ नैतावता भगवतः
स्वमायामयवृत्तिभिः न दुष्येतानुभावस्तैर्मायिनः कुहकं यथा २७ स त्विदं मनसा विश्वमात्मनानुप्रवि
श्य यः गुणैः कुर्वद्भिराभाति कर्तेव स्वप्नदृग्यथा तस्मै नमो भगवते त्रिगुणाय गुणात्मने केवलायाद्विती
याया गुरवे ब्रह्ममूर्तये २८ कं वृणे नु परं भूमन् वरं त्वद्वरदर्शनात् यद्दर्शनात्पूर्णकामाः सत्यकामः
पुमान्भवेत् २८ वरेमिकं कर्णो धापिपर्वाल्मामाभिवर्षेणात्र भगवत्पद्मनाभिकं न परं सुयथापरि त्वपि ३०

एकौं नियेताकौ द्वरूप अद्वितीय सवनकौ गुरु ब्रह्ममूर्ति ऐसे भगवान तुमकौं नमस्कार है २८ हे सवनतें श्रेष्ठ तुम्हा
रे दर्शनतें और कहा वर है जातें तुम्हारे दर्शनतें पुरुष सत्यकाम और पूर्णकाम होइहै २९ तथापि सवकामनानके
वर्षनहारे ईश्वर ऐसे तुमकौं मैं एक वर तुमसौं मांगे हैं भगवान विषें और तिहारे भक्तन विषें तैसें ही तुम विषें प्रवल भक्ति होइ ३०

न

अवश्रीसूतजीकहैंहैं याभांतिनामुनि करिकरीअस्तुत औरपूजाजिनकी ऐसेभगवानुशिवजू देविकरिप्रसन्नभोद
तहैंतिनमुनिसोंबोलतभए ३१ हेमहर्षितुम्हारीकामनापूरनहोइ अधोक्षजविषैंतुम्हारीभक्तितोंपहिलेंहोही और
औरकल्पपरजंततुम्हारोजसहोहि औरअजरअमरताहोइ हेब्रह्मन् औरतुमत्रिकालज्ञहोउ औरविज्ञानसहितवै

श्रीसूतउवाच॥ इत्यर्चितोभिष्टुतश्चमुनिनासूक्तयागिरा तमाहभगवान्शर्वः शर्वयाचाभिनंदितः
३१ कामस्तेयंमहर्षेऽच्युतेभक्तिर्मास्त्वमधोक्षजा आकल्पांतायशः पुण्यमजरामरतातथा ज्ञानंत्रैकाल
कंब्रह्मन्विज्ञानंचविरक्तिमत् ब्रह्मवर्चस्विनोभूयात्पुराणाचार्यतास्तुते ३२ सूतउवाच॥ एवंवरान्
समुनयेदत्त्वागात्त्र्यक्षईश्वरः देव्यैतत्कर्मकथयन्ननुभूतंपुरामुना॥ ३३ सोप्यवाप्तमहायोगमहि
माभार्गवोत्तमः विचरत्यधुनाप्यद्धाहरावेकांततांगतः॥ ३४

राग्यहोउ ब्रह्मतेजसहोइ पुराणनकेआचार्यहोइ ३२ श्रीसूतजीकहैंहैं याभांतिमुनिकोंवरदैंयकैंत्रिलोचन
ईश्वरतामुनिकोंपहलोअनुभूततदेवीसोंकहतेंकहतेजातभये ३३ याहूतैंमहायोगमहिमाजानैंहरकोएकां
तभक्ति ऐसोमुनिभृगुवंसीनमेश्रेष्ठ मार्कंडेय अबहूलाईपृथ्वीपेंविचरैहैं ३४

बुद्धिमान मारकंडेय कौं भगवान की माया वैभव आदि अद्भुत जो देखौ चरित्र सो तुम सों वरणन कीयौं ३५ मा
र्कंडेय के माया अनुभव कौं जो ईश्वर कि माया मोल वरण नहीं जानैं सो तो वहुत काल करि कहतैं और जे माया के वेत्ता
हैं ते काल कौं छिन मात्र कहैं ३६ हे भृगुवंसीन मैं श्रेष्ठ तौं भगवान के प्रभाव करि युक्त मार्कंडेय को यह चरित्र जो कोई॥

अनुवर्णितमेतत्ते मार्कंडेयस्य धीमतः अनुभूतं भगवतो माया वैभवमद्भुतम् ३५ एतत्केचिदविद्वां
सो माया संसृतिरात्मनः अनाद्यावर्तितं नृणां कदाचित्कं प्रचक्षते ३६ य एवमेतद्भृगुवर्य वर्णितं र
थांगपाणे रनुभावभावितम् संश्रावयेत्संशृणुयादु ताबुभौ तयोर्न कर्माशयसंसृतिर्भवेत् ३७ इति
श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे मार्कंडेयाख्यानो नाम दशमोऽध्यायः १० शौनक उवाचः अथेमम
र्थं पृच्छामो भगवंतं बहुवित्तमम् समस्ततंत्रराद्धांते भवान्भागवततत्ववित् १

सुनै सुनावै तिन दोउन कौं कर्म वासना मय संसार न होई ३७ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे टीका
यां दशमोऽध्यायः १० अब शौनकादिक श्रीसूतजी सों मंत्र रूप कै प्रश्न करैं तैं हे भागवतन मैं श्रेष्ठ बहुत वेत्ता
न मैं उत्तम तुमसों कछु प्रश्न करै हैं जु सव तंत्रन के तत्व वेत्ता हैं॥१॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥

ना॰ घ॰ सवनंत्रनकेउपाधिक केवलहरिकेपरचर्णविषैं प्रेमकरीयें पादहिकेउपांगकहीयें भरतआदिकआसन आउधचक्रा
४२ दिककाकल्पअलंकार इनकीरचना जोजाभांतिकरै सोभांतिक्रियाजोगजानौं चारन्ताकेहमनुमसोंकहें तेनुम्हा
१२ रोंमंगलहोउ जोक्रियाजोगकीनिपुनताकरिमनैधर्माजनअमतीकोंप्रापतहोई २ अवश्रीसूतजीसौनकादिक
नसोंउत्तरदेहेतें गुरुनकोंनमस्कारकरिकैं विश्वकीविभूतिनमसोंकहेंहैं जाविभूतकेब्रह्मादिकआचार्यवेदतंत्र

मंत्रिका: परिचर्यायां केवलस्य श्रियःपतेः अंगोपांगायुधाकल्पं कल्पयंति यथैव यैः तन्मोवर्णाय
भद्रंते क्रियायोगं बुभुत्सतां येन क्रियावैदर्शेन मर्त्यो यायादमर्त्यताम् २ श्रीसूत उवाच : नमस्कृ
त्य गुरून्वक्ष्ये विभूतीर्वैष्णवीरपि : याः प्रोक्ता वेदतंत्राभ्यामाचार्यैः पद्मजादिभिः ३ मायाद्यैर्नवभि
स्तत्वैः सविकारमयो विराट् निर्मितो दृश्यते यत्र सचित्को भुवनत्रयम् ४

नमैकहतुनभए ३ पहिली अवस्थामाया महत्तत्व अहंकार पंचतन्मात्रा एनवतत्वरूप पंचमहाभूत ५
एकादशइंद्रीयः इसोयहविकारइनपचीसनकरिनिर्मितजोविराटरूपकेप्रवेशभएतें चैतन्याविराटवि
षैंत्रिलोकीकीरचनादेषियेहै ४

यहविराट्पुरुषकेरूपहैं पृथ्वीतोपांवहैं औरस्वर्गहैसोमाथोहैं अंतरिक्षनाभहैं सूर्यहैसोनेत्रहैं पवनहैसोनासि
काहैं दिशाहैसोईकर्णकहीयेंकानहैं प्रजापतिसिस्नेंद्रीहैं मृत्युहैसोगुदेंद्रीहैं लोकपालहैंतेभुजाहैं चंद्रमाहै
सोमनुहैं जमभृकुटी लज्जाउपरलोहोठ लोभनीचलोहोठ चांदनीदंत भ्रमहास्य वनास्पतीरोम मेघके

एतद्वैपौरुषंरूपंभूःपादौद्यौःसिरोनभः नाभिःसूर्योक्षिणीनासेवायुःकर्णौदिशःप्रभो प्रजापतिःप्रज
ननमपानोमृत्युरीशितुः तद्बाहवोलोकपालामनश्चंद्रोभ्रुवौयमः लज्जोत्तरोधरोलोभोदंताज्योति
स्नास्मयोभ्रमः रोमाणिभूरुहाभूम्नोमेघाःपुरुषमूर्द्धजाः ५ यावानयंवैपुरुषोयावत्यासंस्थ
यामितः तावनसावपिमहान्पुरुषोलोकसंस्थया ६ कौस्तुभव्यपदेसेनास्वात्मज्योतिर्बिभर्त्य
जः तत्प्रभाव्यापिनीसाक्षाच्छ्रीवत्समुरसाविभुः ७

शहैं ५ जैसेयहजीवपुरुषअपनेकर चरणादिअंगनकरप्रमानीयहैं ऐसेहीविराटरूपमहापुरुषपृ
थ्वीचरणादिकरिउनमानकरीयेहैं ६ अजन्माविभुकौस्तुभकेमिसकरशुद्धजीवनकोधारैंताकौ
स्तुभकीजोकांतिसोश्रीवत्सकरउरमेंधारैहैं ७

निज मायासोई नानागुणमई वनमालाहैं देवहैसोई पीतांबरहैं त्रिमात्रा ऊँकारसोई जज्ञोपवीतहैं ९सां
ख्ययोगओरजोगदोऊमकराकृतकुंडलहैं सवलोकनकरनमस्कृत जोवंसलोकसोमुकटहैं १० वहुरी
मायासोई अनंत आसनहैं धर्मज्ञानादिसहितसत्वगुणसोई आसनकमलहैं इंद्रीनकी निपुनतामन

स्वमायांवनमालाख्यांनानागुणमयींदधत् वासश्छंदोमयंपितं ब्रह्मसूत्रंत्रिवृत्स्वरम् ८ विभ
र्तिसांख्यंयोगंचदेवोमकरकुंडले मौलिंपदंपारमेष्ठ्यंसर्वलोकनमस्कृतम् ९ अव्याकृतमनं
ताख्यमासनंयदधिष्ठितः धर्मज्ञानादिभिर्युक्तंसत्वंपद्ममिहोच्यते १० ओजःसहोवलयुतंमः
मुख्यतत्वंगदांदधत् आयांतत्वंदरवरंतेजस्तत्वंसुदर्शनं ११ नभोनिभंनभस्तत्वमसिंच
र्मतमोमयंम् कालरूपंधनुःशार्ङ्गंतथाकर्ममयेषुधीः १२ इंद्रियाणिसरानाहुंराकूतीर
स्यस्यंदनंम् तन्मात्राण्यस्याभिव्यक्तिंमुद्रयार्थक्रियात्मवान् १३ १३ १३ १३ १३ १३

उत्साह सरीरकोवलईनसहितप्राणसोविराटपुरुषकीगदाहैं ओरजलकोतत्वसोई संखहैं ओ
रतेजकोतत्वसोईसुदर्शनचक्रहैं ११ आकाससोई खड्गहैं अंधकारसोढालहैं कालसोई सारंग
धनुषहैं कर्मसोईतरकसहैं १२ ईद्रीवान तन्मात्रासोईतारथकीचालहैं अभयवरदैनोसोई विराटपुर्षकीमुद्रा १३

सूर्ज अग्नि चंद्रमा इनको मंडल पुरुषको पूजाको स्थान हैं गुरु शिक्षा पूजा करनहारेको संस्कार हैं भगवान् कीपरचर्या सोई आत्माके पापनको नास करें १३ षट्प्रकार भगवत शब्दको अर्थ सोई लीलाकमल हैं धर्म औ यश दोऊ चमर अरु विजना हैं १४ हे द्विज होनिर्भै धाम वैकुंठ सोई छत्र हैं रिग जुज साम ऐ तीनो वेद जाको

मंडलं देवजयनं दीक्षा संस्कार आत्मना: परिचर्या भगवत आत्मनो दुरतक्षया: १३ भगवान् भग शब्दार्थं लीलाकमलमुद्वहन् धर्मं यशश्च भगवान् चामरव्यजने ऽभवत् १४ आतपत्रं तु वैकुंठं द्विजा धामाकुतोभयं त्रिवृद्वेद: सुपर्णा: ख्यो यज्ञं वहत पुरुषं १५ अनपायनी भगवती श्रीसा क्षादात्मनो हरे विष्वक्सेनस्तंत्रमूर्तिर्विदित: पार्षदाधिप: नंदादयो ऽष्टौ द्वास्थाश्च ते ऽणिमाद्या हरेर्गुणा: १६ वासुदेव: संकर्षण: प्रद्युम्न: पुरुष: स्वयं अनरुद्ध इतीव ब्रह्मन् मूर्तिव्यूहो ऽभिधीयते १७ स विश्वस्तैजस: प्राज्ञ: स्तुरीय इति वृत्तिभि: अर्थेंद्रिया सयज्ञानै भगवान परभाव्यते १८

रुषको गरुड वाहन हैं १५ साक्षात भगवती लक्ष्मी हरकी अनपायनी अयनी शक्ति हैं पार्षदनमे सुखी याविष्वकेन तंत्र मूर्ति हैं अन मादि अष्ट सिद्ध सोई सुनंदादि हरके द्वारपाल हैं १६ है वृह्मन एप वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध ऐ चार पुर्षकी मूर्ति हैं १७ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीय इन चार अवस्थाकर औरन केकर्ण विषै मन अज्ञान अरु ज्ञान सो भगवान जाने जापर हैं १८

भा॰ ५३ अंगउपांगादिक उपांग गरुडादिक आयुध अकल्प कहीयें अलंकार इनच्यारनकरजुक्त हैं चतुर्मूर्ति भगवान हरी ई
ईश्वर जाग्रतादिच्यारो अवस्थानको धारण करै है १९ हे द्विजनमें श्रेष्ठ हो वेदनको कारन स्वप्रकास अपनी मा
याकरिकें याजगतको सृजै पालै संहारकरै इनकरजीनकों ज्ञान आवतन होयहै विधि शिव विष्णु इन मूर्तिकरभा
सै श्रेकविसवकहै है २० हे कृष्ण हे अर्जुनके सखा हे यादवनमें श्रेष्ठ हे पृथ्वीके द्रोही राजानके वंसजरावनिहारे।

अंगोपांगायुधाकल्पैर्भगवानस्तच्चतुष्टयं बिभर्तिस्मचतुर्मूर्तिर्भगवान हरिरीश्वरः १९ द्विजऋषि
भिसएषब्रह्मयोनिस्वयंदृक्स्वमहिमपरिपूर्णोमायया चस्वयैतत सृजतिहरतिपातीत्याख्यायना
वृताक्षोविवृतइवनिरुक्तस्तत्परैरात्मलभ्या २० श्रीकृष्णकृष्णसखावृष्ण्यृषभावनिध्रुग्राजन्य
वंसदहनानपवर्गवीर्यो गोविंदगोपवनितावृजभृत्यगीततीर्थश्रवःश्रवणमंगल पाहिभृत्यान्
२१ यइदंकल्यउत्थायामहापुरुषलक्षणं तच्चित्तःप्रयतोजप्त्वाब्रह्मवेदगुहाशयम्ः २२ श्रीयस्तु

अग्निरूपहै एकरसपराक्रमी हे गोविंद हे श्रवणमंगल हे गोपवनतानके समुहनकरयुक्त और नारद
भृत्यादिकनकरिगाई रें पवित्रजसजिनकों ऐसे तुम अपने भृत्यननकी रक्षाकरो २१ प्रातःकाल
उठिकें जोकोई एकाग्रहै महापुरुषके यालक्षणकोतिनमें चित्तराषिकें जपैं सो सवके हृदै मैं रहनहारे भग ५३
वानकों जानैं २२

शौनकादिक पूछै हैं सुननहारे विष्णुराति कों भगवान शुकदेवजी महीना महीना विषैं नाना भांति को जो सूर्य के
सात गण हैं इश्वर करि कर्म मैं लगाये ऐसे तीन गणन के नाम अरु कर्म छह्वा बारे महीनान कों हम सो सबन सो
कहौ २३ सूतजी कहै हैं देहधारीन की अनादि अविद्या ऐसी विष्णु की माया करि निर्मित सब लोकन कों क्रियामैं
प्रवर्त करावन हारे ऐसे सूर्य लोकन मैं फिरो करो हौं २४ सब लोकन को आत्मा आदिकर्ता ऐसे एक ही सूर्य रूप हरि को

शौनक उवाचः शुको यदाह भगवान्विष्णुरातायशृण्वते सौरो गणो मासि मासि नाना वसति सप्तक
गतेषां नामानि कर्माणि संयुक्तानामधीश्वरैः ब्रूहि नः श्रद्दधानानां व्यूहं सूर्यात्मनो हरेः २३ सूत उवाचः
अनाद्यविद्यया विष्णोरात्मनः सर्वदेहनाम् सर्ववेदक्रीयामूलाः मृषाभिर्बहुधोदिता २४ एक एव हि लोका
नां सूर्य आत्मादिकृद्धरिः निर्मितो लोकतंत्रोयं लोकेषुपवर्तते २५ कालोदेशः क्रीया कर्ता करणं कार्यमा
गमः द्रव्यं फलमिति ब्रह्मन् नवधोक्तोज या हरिः २६ मध्वादिषु द्वादशसु भगवान् कालरूपधृक् लोकतं
त्रापि चरति पृथग्द्वादशभिर्गणैः २७

सर्ववेद क्रीया और तिन क्रीयान के कारण कों करि कैं बहुत प्रकार रिषि कहै हैं २५ हे ब्रह्मन् काल देश क्रिया कर्ता:
कारण कारज मंत्र द्रव्य ये नौ प्रकार हर की माया करि कैं है ऐसे कवि कहै हैं २६ चैत्रादि बारह महीनान विषै सू
र्य रूप भगवान ही लोकन को कर्मन विषैं प्रवर्तित करिवे कों गणन सहित न्यारे न्यारे हू विचरै हैं २७ रामजी॥

भा॰सू॰ ५५ धातासूर्यपुलस्तमुनिरथकृतयक्ष्यहेतराक्षसवासुकीनागतुंबुरगंधर्वक्रतस्थलीअप्सराएसबमिलचैत्रम
हीनाकोंव्यतीतकरेहैं २८ अर्यमासूर्यपुलहमुनिअथौजयक्षप्रहेतराक्षसकछनीरनागनारदगंधर्वपुंज
स्थलीअप्सराऐंसबमिलवैशाषमहीनाकोव्यतीतकरेहैं २९ मित्रसूर्यअत्रमुनिरथस्वनयक्षपौरषेयराक्ष
सतक्षकनागहाहागंधर्वमेनुकअप्सराऐंसबमिलकरकैजेष्ठकोजोमहीनानातापव्यतीतकरेहैं ३० वरुण

धाताकृतस्थलीहेतुःवासुकीरथकृन्मुने पुलस्त्यस्तुंबुरुरितिमधुमासंनयंत्यमी २८ अर्यमापु
लहोथौजःप्रहेतपुंजकस्थली नारदःकछनीरश्चःनयंत्येतेस्ममाधवम् २९ मित्रोत्रिःपौरुषेयो
ऽथतक्षकोमेनकाहाहाः रथस्वनइतीह्येतेशुक्रमासंनयंत्यमी ३० वसिष्ठोवरुणोरंभाःसह
जन्यस्तथाहुहुं शुक्रश्चित्रस्वनश्चैवःशुचिमासंनयंत्यमी ३१ इंद्रोविश्वावसुःश्रोताएला
पत्रस्तथांगिरा प्रम्लोचाराक्षसोवर्योनभोमासंनयंत्यमी ३२ श्रीकृष्णायवासुदेवायः॥

सूर्यवसिष्ठमुनिसहजन्ययक्ष्यचित्रस्वनराक्षसशुक्रनागहुहुंगंधर्वरंभाअप्सराऐंसबमिलअषा
ढमहीनाकोव्यतीतकरेहैं ३१ इंद्रसूर्यअंगिरामुनिश्रोतायक्षतक्षकनागवर्यराक्षसश्रोतातक्षक
वर्जराक्षसएलापत्रनागविश्वावसुगंधर्वप्रम्लोचाअप्सराऐंसबमिलसामनमहीनाकोव्यतीतकरेहैं ३२ राम ५४

विवस्वान सूर्ज भृगु मुनी। असारण जक्ष। व्याघ्र राक्षस। संखपाल नाग। उग्रसैन गंधर्व। प्रमुम्लोचा अप्सरा। ए सब
मिल भादौं महीना व्यतीत करै हैं ३३ पूषा सूर्य गोतम मुनी। सुरुचि जक्ष। वात राक्षस। धनंजय नाग। सुषेन गंध
र्व। घृताची अप्सरा। ए सब मिल आस्विन महीना को व्यतीत करै हैं ३४ पर्जन्य सूर्ज भारद्वाज मुनि। क्रतु जक्ष। ऐराव
त नाग। विश्व गंधर्व। सेनजित अप्सरा। ए सब मिल कार्तिक महीना व्यतीत करै हैं ३५ अंसु सूर्ज कस्यप मुनि। तार्क्ष जक्ष।

विश्ववस्वानुग्रसेनश्च व्याघ्र आसारणो भृगुः। अनुम्लोचा संखपालो नभस्याख्यं नयंत्यमी ३३ पूषा ध
नंजयो वातः सुषेणः सुरुचिस्तथा घृताची गौतमश्चेति तपो मासं नयंत्यमी ३४ ऋतुर्वर्चा भारद्वाजः
पर्जन्यः सेनजित्तथा विश्व ऐरावतश्चैव सहो मासं नयंत्यमी ३५ अथांशुः कस्यपस्तार्क्ष्य ऋतसेन
स्तथोर्वसी विद्युच्छत्रुर्महासंखः सहो मासं नयंत्यमी ३६ भगः स्फूर्जोरिष्टनेमिरूर्ण आयुश्च पंचमः
कर्कोटकः पूर्वचित्तिः पुष्यमासं नयंत्यमी ३७

विद्युत शत्रु राक्षस। महासंख नाग। ऋतसेन गंधर्व। उर्वसी अप्सरा। ए सब मिल अगहन महीको व्यतीत करै हैं
३६ भग सूर्य। आयु मुनि। उर्णा जक्ष। स्फूर्ज राक्षस। कर्कोटक नाम नाग। अरिष्टनेमी गंधर्व। पूर्वचित्ति अप्सरा।
ए सब मिल करिकै पौष मास को व्यतीत करै हैं ३७

त्वष्टासूर्य जमदग्निमुनि प्रातज्ञनक्ष ब्रह्मापेतराक्षस कंवल नाग धृतराष्ट्रगंधर्व तिलोत्तमा अप्सरा एस
व मिलकै माहकेमरी नाकौंव्यतीतकरैहैं ३८ विष्णुसूर्य विश्वामित्रमुनि सतजितजक्ष मखापेतराक्षस अस्व
तरोनाग सूर्यवर्चीगंधर्व रंभाअप्सरा एसव मिलकै फाल्गुणमासव्यतीतकरैहैं ३९ ऐसैसवसूर्जरूपविष्णु
कीविभूतिदिनदिनकीहोऊसंध्यानविषैंस्मरनहारेजनके पापनकोंहरतैं ४० येसूर्य देवइनछहन सहित

त्वष्टाऋषिर्जमदग्निः कंवलश्चतिलोत्तमा। ब्रह्मापेतोऽथशतजिद्धृतराष्ट्र इषंभरा ३८ विष्णुरश्व
तरोरंभासूर्यावर्चाश्चसत्यजित विश्वामित्रोमखापेतः ऊर्ज्जमासंनयंत्यमी ३९ एताभगवतोविष्णो
रादित्यस्यविभूतयाः स्मरतांसंध्ययोर्नृणांहरंत्यंहोदिनेदिने ४० द्वादशस्वपिमासेषुदेवोसौषड्भिरस्य
वै चरनसमंतात्तनुतेपरत्रेहचसन्मतिम् ४१ सामर्ग्यजुर्भिस्तल्लिंगैऋषयःसंस्तुवंत्यमुं गंधर्वा
स्तंप्रगायंतिनृत्यंत्यप्सरसोग्रतः ४२ उन्नह्यंतिरथंनागः ग्रामण्योरथयोजकाः चोदयंतिरथंपृष्ठेनैर्ऋ

वारेहूं महीनानविषैंसवओरविचरतेजननकौं यालोकपरलोककी उत्तममतिदेहैं ४१ ऋषिसवजिनमैंसूर्य
कीअस्तुतीहैं ऐसैतिनवेदनकर तिनसूर्जकोंआगेहीतिनकीअस्तुतकरैहैं गंधर्वसवगानकरैहैं अप्सरा
नाचेहैं ४२ नागसवरथकोवांधे जक्षरथकोंजोरै वलवानराक्षसरथकोंपाछैतैंठेलेहैं ४३ श्रीराम॥

साठ हजार निर्मल वालषिल्य ब्रह्मऋषि । अस्तोत्र करि तिन विभु के सन्मुख व्है पिछले पायन चलते । अस्तुत क-
रे हैं ॥ ४४ ॥ आदि । अंत जाको नहीं । ऐसे भगवान अजन्मा हरि ईस्वर या भांति कल्प कल्प विषे । आप कों सृष्टि रूप विभा-
ग करि कैं लोकन की रछा करे हैं ॥ ४५ ॥ इती श्री भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे एकादशो आध्याय ११ अथ ॥

वालखिल्यासहस्राणी षष्टिर्निर्मलाः पुरतोभिमुखं यांति स्तुवंति स्तुतिभिर्विभुः ४४ एवं ह्य-
नादि निधनो भगवान हरिरीश्वरः । कल्पे कल्पे स्वमात्मानं व्यूह्य लोकानवत्यजः ४५ इती श्री भाग-
वते महापुराणे द्वादशस्कंधे एकादशो आध्याय ११ सूतोवाचः ॥ नमो धर्माय महते नमः कृष्णाय
वेधसे ब्राह्मणेभ्यो नमस्कृत्य धर्मान वक्ष्ये सनातनान् ॥ १ ॥ एतद्वः कथितं विप्रा विष्णोश्चरितम-
द्भुतं ॥ भवद्भिर्यदहं पृष्टो नराणां पुरुषोचितम् ॥ २ ॥ अत्र संकीर्तिते साक्षात सर्व पापहरो हरिः ॥

श्री सूतजी कहे हैं । ऐसे धर्म कों नमस्कार । और सर्व कर्त्ता श्री कृष्ण जू कों नमस्कार । अरु अब तुम सब ब्राह्मणन
कों नमस्कार करि सनातन धर्म कहों ॥ १ ॥ हे ब्राह्मणो नरन के श्रवण को योग्य यह विष्णु कों अद्भुत
चरित्र तुम सों कहों । कराकरो हो जो तुम । अब वे हम सों पूछों हो । सोई अब हम तुम सों कहत सो तुम सुनो ॥ २

यापुराण विषैं सब पापन के नासक भक्तिन के पालक ऐसे रिषिके पाव भगवान् नारायण हरि साक्षात गाये हैं ३ जि
नतें जगत की उत्पत्ति पालन नास सोई ऐसे गुह्य परत्त्व तिन नारायण पद्दां गाये ४ और तिन परत्त्वन को प्रकासक ज्ञान तासौं
विज्ञान सहित ज्ञान गायो है ७ और भक्तियोग गायो और भक्तियुक्त वैराग्य गायो परीक्षत कौं आख्यान कह्यो ५

नारायणोहृषीकेशो भगवानसात्वतांपति ॥३॥ अत्रब्रह्मपरंगुह्यंजगतःप्रभवाप्ययं ज्ञानंचतदुपा
ख्यानंप्रोक्तं विज्ञानसंयुतं ॥ भक्तियोगसमाख्यातो वैराग्यंचतदाश्रयं ॥४॥ परिक्षितमुपाख्यानंना
रदाख्यानमेवच ॥ प्रायोपवेशोराजर्षेर्विप्रसापात्परीक्षिता ॥५॥ शुकस्यब्रह्मर्षभस्यसंवादश्च परिक्षितः
योगधारणयोक्रांतिसंवादोनारदाजयोः ॥६॥ अवतारानुगीतंचसर्गःप्राधानिकोग्रत विदुरोद्धवसं॰

ब्रांह्मण के साप ते राजरिषि परीक्षत कौं अनसन लेबो कह्यो तिन राजरिषिन कौं सहित ब्रह्मरिषि श्री शुक
देवजी कौ संवाद कह्यो यह प्रथम स्कंध मैं कथा भई ६ जोगधारना करि प्रसन कौ छोडवो तं ब्रह्मा नारद कौं संवा
द अवतारन कौ वर्णन और विराट् की उत्पत्ति यह सब दूतीय स्कंध मैं कथा भई ७ ॥

विदुर उद्धव को संवाद पुन विदुर मैत्रेय को संवाद न हां पुराणसंहिता को प्रश्न वो विराट पुरुष की रचना करी ॥८॥ पहले मायाते महत्तत्वादि सात कारण की सृष्टि होत भई ॥ तिनसो पुन याब्रह्माण्ड की उत्पत्ति है सोई पुरुष को रहवे को स्थान है ॥९॥ स्थूल सूक्ष्म काल की गति नाभि ते कमल की उत्पत्ति समुद्र ते पृथ्वी को उद्धार हिरण्याक्ष को वध करयो ॥१०॥ वृक्ष पशु पक्षी मनुष्य ईन तीनन की सृष्टि रुद्र की सृष्टि ब्रह्मा के आधे अंग ते नर आधे ते नारी भई ॥ तिनमे नर तो स्वा

पुराणसंहिताप्रश्नो महापुरुषसंस्थिते ॥ ततः प्राकृतकाः सर्गाः सप्त वैकृतिकाश्च ये ॥८॥ ततो ब्रह्माण्डसंभूति वैराजपुरुषो यतः ॥ कालस्य स्थूलसूक्ष्मस्य गतिः पद्मसमुद्भवः ॥९॥ भुव उद्धरणं मोधेर्हिरण्याक्षवधो यथा ॥ ऊर्ध्वतिर्यगवाक्सर्गो रुद्रसर्गस्तथैव च ॥१०॥ अर्द्धनारीनरस्याथ यतः स्वायंभुवो मनुः ॥ शतरूपा च या स्त्रीणां माद्या प्राकृतिरुत्तमा ॥११॥ संतानो धर्मपत्नीनां कर्दमस्य प्रजायते ॥१२॥ अवतारो हि देवस्य कपिलस्य महात्मनः ॥ देवहूत्या च संवादः कपिलेन च धीमता ॥१३॥ नवब्रह्मसमुत्पत्तिर्दक्षयज्ञविनाशनम् ॥

यंभुव मनु ॥ स्त्रीन मैं श्रेष्ठ नारी सो सतरूपा भई ॥११॥ कर्दम प्रजापति ते धर्मपत्नीन की संतान ॥ जा प्रजापति कर्दम ते महात्मा ॥ भगवान कपिलदेव जू को अवतार लेवो ॥ और तिन बुद्धिमान कपिलदेव सहित देवहूति ताको जो संवाद सो सब संवाद कह्यो है ॥ यह जो कथा है सो तीसरे स्कंध विषे कथा भई ॥१३॥ श्री रामकृष्ण ॥

भरद्वादिकत्रोंमरणनकीसंतानकीउत्पत्ति।दक्षके जज्ञकोंविनाश।ध्रुवकोचरित्र।पृथु।ओरप्राचीनबर्हिको
चरित्रकहों।हेद्विजहो।नारदप्रीयव्रतकोंसंवाद।पुनिप्रीयव्रतकोचरित्र।नाभकोचरित्र।रिषिभदेवकोचरित्र॥
भरथकोचरित्रकहो॥१४॥द्वीप।समुद्र।पर्वत।नदी।षंड।इनकोवर्णन।पुनिज्योतिचक्रकोवर्णन।पातालकीरचना

ध्रुवस्यचरितंपश्चात्पृथोःप्राचीनबर्हिषः॥१४॥नारदस्यसंवादस्ततःप्रीयव्रतंद्विजाः।नाभेस्ततोनुचरितं
ऋषभस्यभरतस्यच॥१४॥ततोद्वीपसमुद्रादिवर्षाणांसुवर्णनं।ज्योतिश्चक्रस्यसंस्थानंपातालनरक
स्थिती॥१५॥दक्षजन्मप्रचेतोभ्यःतत्पुत्रीणांचसंततिः।यतोदेवासुरनरास्तिर्यङ्नगखगादयः॥१६॥
त्वाष्ट्रस्यजन्मनिधनंपुत्रयोश्चदितेर्द्विजाः।दैत्येश्वरस्यचरितंप्रह्लादस्यमहात्मनः॥१७॥मन्वंतरानु
चरितंगजेंद्रस्यविमोक्षणम्।मन्वंतरावतारश्चविष्णोर्हयशिरादयः॥१८॥ १८॥ १८॥ १८॥

नर्कनकोवर्णन।यह।चतुर्थपंचमस्कंधमेंकथाभई॥१५॥प्रचेतानतेदक्षकेजन्म।पुनतदक्षकीबेटीनकीसं
ताननकोवर्णन।जासंतानतेदेवता।असुर।नर।तिर्यक्।वृक्ष।पर्वत।पक्षी।आदिहोतभयेहैं॥१६॥हेद्विजहो।त्वष्टासु
रकोजन्म।अरनासादिककेपुत्रनकीउत्पत्ति।हिरण्यकश्यपकोमरण।महात्माप्रह्लादकोचरित्रकहो।अष्टमेंसप्तमे॥१७॥मन्वं
तरनकोवर्णन।गजेंद्रकोछुडायवो।विष्णुकोहयसिरादिमन्वंतरनमेंअवतारनकोंवर्णनकहोहै॥१८॥ ॥

तिन विस्नुके अवतार ही। कूर्म मत्स नरहरि वामन इनको वर्णन देवतानको अमृतके लीयें क्षीरसमुद्रको मथ
न कह्यो। १९ देवता असुरनको महायुद्ध होत भयो। राजानके वंसको वर्णन। प्रथम इक्ष्वाकुको जन्म। और ताके वंशको
वर्णन। और महात्मा प्रद्युम्नको चरित्र कह्यो। २० इला और ताराको याख्यान सस्मादि नृगादि सूर्यवंसी राजानकों व

॥कौर्म्यमात्स्यंनारसिंहवामनं च जगत्पतेः क्षीरोदमथनं तद्वदमृतार्थे दिवौकसां ॥१९॥ देवासुरमहायु
द्धं राजवंशानुकीर्तनं इक्ष्वाकुजन्म तद्वंशो सुद्युम्नस्य महात्मनः॥ २०॥ इलोपाख्यानमत्रोक्तं तारोपा
ख्यानमेव च। सूर्यवंशानुकथनं शशादाद्या नृपादयः॥ २१॥ सौकन्यं चाथ शर्यातेः ककुत्स्थस्य च धीमतः खट्वां
गस्य च मान्धातुः सौभरेः सगरस्य च॥ २२॥ रामस्य कोशलेन्द्रस्य चरितं किल्बिषापहं निमेरंगपरि
त्यागो जनकानां च संभवः॥ २३॥ रामस्य भार्गवेन्द्रस्य निःक्षत्रीकरणं भुवः ऐलस्य सोमवंशस्य ययातेर्नहुषे

र्णन कीयो। २१ सुकन्याको चरित्र सर्जातको चरित्र धुद्रवान ककुत्सको चरित्र खट्वांग मांधाता सौभर सगर इन
को चरित्र कह्यो। २२ कोसलेश श्रीरामजीको चरित्र सब पापनको नाशक निमेके सरीरको त्याग जनकवंसी
नकी उत्पत्ति कही। २३ भृगुवंसी परसराम जू करि क्षत्रीनको नाश चंद्रवंसी ईला दिज जात नहूस व इनको चरित्र

भा॰ द॰ दुष्यंत भरत संतन ॥ तासंतनके पुत्र ईन सबनको चरित्र कह्यो ॥ और राजा अजानके ज्येष्ठ पुत्र यदु ताके वंसको वर्णि
न कह्यो ॥ यह अष्टम नवममें कथा भई ॥ जा जदुके वंसमैं भगवान श्रीकृष्ण जगधीश्वर अवतीर्ण भये ॥ वसुदे
५८ वके घरमैं अवतीर्ण हूं गोकुलमैं जायके वढत भये ॥ असुरनके वैरी तिन श्रीकृष्णजूके अपार चरित्र दसम वर्णायें
वाल अवस्थामें पूतनाके प्रानन समेत स्तननकौ पान करवौ ॥ और सकटकौ डार देवौ ॥ तृणावर्त वका कौ तैसे ही व

दौष्यन्तेर्भरतस्यापि शंतनोस्तत्सुतस्य च ययातेर्ज्येष्ठपुत्रस्य यदोर्वंशोनुकीर्तितः ॥ यत्रावतीर्णो भग
वान्कृष्णाख्यो जगदीश्वरः ॥ ३५ ॥ वसुदेवगृहे जन्म ततो वृद्धिश्च गोकुले तस्य कर्माण्यपाराणि कीर्ति
तान्यसुरद्विषः ॥ ३६ ॥ पूतनासुपयःपानं सकटोच्चाटनं शिशोः ॥ तृणावर्तस्य निष्पेषस्तथैव बकवत्स
योः ॥ ३७ ॥ अघासुरस्य च वधो वत्सपालावहे रुतं ॥ धेनुकस्य सहभ्रातुः प्रलंवस्य च संक्षयः ॥ गोपानां च परि
त्राणं दावाग्नेः परसर्पतः ॥ ३८ ॥ दमनं कालियस्याहेर्महाहेर्नन्दमोक्षणं व्रतचर्या तु कंन्यानां यत्र तुष्टोच्युतो

त्सको मारवो कह्यो ॥ ३७ ॥ अघासुरको वध ब्रह्माकरकै वत्सानको हरन ॥ धेनुक प्रलंव इनको वध करत भये ॥ स
व ओर फैली ऐसी दावाग्नकी गोपनकी रक्षा करी सो कह्यो ॥ ३८ ॥ कालीको दमन ॥ महासर्पतें नंदजूकों छुडा
वौ कह्यो ॥ व्रतकंन्यानको व्रत करवौ ॥ ताव्रतकर अच्युतको संतुष्ट होईवौ तैसो पर कह्यौ ॥ ३९ ॥ ५८

यज्ञपत्नीघेमसंन्नहोवो।वांलगनकौपछ्णनायकरवौ।गोवर्द्धनकोंधरवो।सुरभीनसहितइंद्रकौंरिकृस्नकोअभि
षिसेखा।रात्रीविषैंस्त्रीनसहितकृस्नकीक्रीडाकरी।तहांदुष्टशंखचूडकोवध।।औरअरिष्टकेसीइनकोवधकरैं
।अक्रूरकोव्रजमेंआयवो।रामकृस्नकोंश्रीमथुराकोप्रस्थानो।ब्रजसुंदरीनकोविलाप।मथुरादेखवोकह्यो

प्रसादोयज्ञपत्नीभ्यांविप्राणांचानुतापनं।।गोवर्द्धनोद्धरणंचशक्रस्यसुरभेरथ।।यज्ञाभिषेकंकृस्न
स्यस्त्रीभिःक्रीडासुरत्रिषु।।३०।।शंखचूडस्यदुर्बुद्धेर्वधोरिष्टस्यकेशिनः।।३१।।अक्रूरागमनंपश्चात्प्रस्था
नेरामकृस्नयोः।।व्रजस्त्रीणांविलापश्चःमथुरालोकनंततः।।३२।।गजमुष्टिकचाणूरकंसादीनांच
योवधः।मृतस्यानयनंसूनेपुनःसांदीपनेर्गुरुः।।३३।।मथुरायांनिवसतायदुचक्रस्यचेत्प्रियं।कृतमुद्ध
वरामाभ्यांयुतेनहरिणाद्विजा।।३४।।जरासंधसमानीतसैन्यस्यबहुशोवधः।।घातनंयवनेंद्रस्यकुशस्थ

।औरमुष्टकचांडूरकंसादिकनकौवधः।सांदीपकोंमरेपुत्रनकोफिरल्यायदेवो।मथुरामेंवसकेंउद्धववल
देवसहित।मिलकेंजादवनकोप्रियकरवौंहेद्विजहो।।३४।।जरासंधकरवेरवेरल्याईवडीसेनाकोवेरवेरहरि
करमारिवौं।औरमुचुकुंदद्वाराकालजमनकोमारवो।औरद्वारिकामेंहरकोप्रवेसहूवोकह्यो।।३५।।

भा॰द॰ ८८ इंद्रलोकतेंपरजात॥ और सुधर्मासभाकों ल्यायवो॥ और युद्धमें बैरीनकों जीतके हरि रुक्मिनीकों हरलायवो॥३६॥ जुद्धविषैजं भास्त्रकर शिवकों जंभाई लैवो॥ बानासुरकी भुजानकों काटिवो॥ नरकासुरकों मारकैं सोरै हजार एकसौ कंन्याकों लायवो॥३७॥ शिशुपाल औ श्याल वासुदेव शाल्व दुर्बुद्धि दंतवक्र संवर द्विविद पीठ मुर पंचजन इनकों मारिकैं कृतार्थ करवो और कासीकों जरायवो॥३८॥ और पांडवनकों निमित्तमात्र करिकैं पृथ्वीकों बोझ उतार

आदानं परजातस्य सुधर्मायाः सुरालयात्॥ रुक्मिण्या हरणं युद्धे प्रमथ्य द्विषतो हरेः॥३६॥ हरस्य जृम्भणं युद्धे बाणस्य भुजकृन्तनम्॥ प्राग्ज्योतिषपतिं हत्वा कन्यानां हरणं च यत्॥३७॥ चैद्यपौण्ड्रकसाल्वानां दंतवक्रस्य दुर्मतेः॥ संवरो द्विविदः पीठो मुरः पंचजनादयः॥ माहात्म्यं च वधस्तेषां वाराणस्याश्च दाहनम्॥३८॥ भारावतारणं भूमेर्निमित्तीकृत्य पांडवान्॥३९॥ विप्रशापापदेशेन संहारः स्वकुलस्य च॥ उद्धवस्य च संवादो वासुदेवस्य चाद्भुतः॥४०॥ यत्रात्मविद्या ह्यखिला प्रोक्ता धर्मविनिर्णयः ततो
॥मर्त्यपरित्यागः आत्मयोगानुभावतः॥४१॥

वो यह दसमस्कंधकी कथा भई॥ द्विजनके शापकों मिसकरकैं अपने कुलकौ संहारवो वासुदेव उद्धवको अद्भुत संवाद भयो॥ जा संवादके विषैं आत्मतत्वकों निर्णय और धर्मकों निर्नय कह्यो॥४०॥ तदनंतर आपनी जोगमायाको प्रभाव करि मनुष्यलोककौ छोड़देवो॥ यह कथा एकादसमैं भई॥४१॥ श्रीहरिः॥

जुगनकोलक्षण॥ तिनजुगनमैंजीवकाकोवर्णन॥ कलजुगमैप्राणीनकोंउपद्रह॥ औरचारप्रकारकीप्रलै॥
मायातेऔरवृह्मातेनिजजन्मे॥ इनतीनप्रकारकीउत्पतिकही॥ ५२॥ बुध्मानराजरिषीविस्तुरातिकीदे
हकोत्यागवो॥ औरव्यासजूकरवेदकीसाषानकोविस्तारवो॥ मार्कंडेयत्रिषिकीसुंदरकथाकही॥ ५३॥
हेद्विजनमैश्रेष्ठहो॥ जगतकेआत्मासर्वज्ञजूको॥ महीनामहीनाकोवर्णनकह्यो॥ ५४॥ तुमजोकछुहम॥

जुयुगलक्षणवृतिष्चकलौनृणांमुपप्लवः॥ चतुर्विधिष्चप्रलया उत्पतिस्त्रिविधातथा॥ ५२
देहत्यागष्चराजर्षेविस्नुदतष्चधीमता॥ साषाप्रणायनमृषेमार्कंडेयस्यसत्कथा॥ ५३॥ महापु
रुषविन्यासासर्जस्यजगदात्मनाः॥ ५४॥ ईतीचेसं द्विजश्रेष्ठायत्पृष्टोहमिहास्मिवः॥ हरयेनम
इत्युचैर्मुच्यतेसर्वपातकान्॥ ५५॥ लीलावतारकर्माणिकीर्तितानी इसर्वशः॥ पतितस्खलि
तोवार्तःक्षुत्वावाविवशोग्रणान्॥ हरयेनमइत्युचैर्मुच्यतेसर्वपातकान्॥ ५६॥ संकीर्त्यमानोभग
वान्नंतः श्रुत्यानभावोव्यवनंनपुंसां प्रविस्यचित्तंविधुनोत्ययोषंयथोतमोर्कोभ्रमिवातवातः

सोप्रछोसोसवकहमकह्यौं॥ यापुराणविषैंलीलाअवतारकर्मनकोंगायोहै॥ ५५॥ गिरतेपरतेआरतसमैंविव
सतामैंऊंचेस्वरसंजोहरकोंउच्चारनकरै॥ सोसवपापनतेछुटजायहैं॥ ५६॥ जोभगवानकोंकीर्तनकरे
अथवातिनकेगुणनकोंसुनै॥ तोअनतभगवानजिनकेचित्तमैंप्रवेशहेकै॥ सवपापनकोदूरकरै॥ जैसे

सो असत मिथ्या वानी है॥ जा वानी विषैं असत कथा है॥ भगवान अधोक्षज के गुन को गायवो॥ सो ई सत्य मंगलरू
भा·द्वा· पवित्र वानी हैं॥ सो ई वानी रमनीक रुचिर सदा नतेई नित मनको महा उत्सव॥ रूप मनुष्यन के शोक समु
५० द्रन की सुखावन हारी॥ जा वानी ने उत्तम श्लोक को जस गाई ये है॥४९॥ जा वानी विषै चित्र पद रच नाहै॥
परंतु जगत के करन हारे॥ हर को जस कछु न होतु है॥ तो ता वानी विषैं को ऊवा की तुल्य विषय ही मन करै गो॥ ह

मृषा गिरस्ता ह्यसतीरसत्कथा न कथ्यते यद्भगवानधोक्षजः॥ तदेव सत्यं तदु हैव मंगलं
तदेव पुण्यं भगवद्गुणोदयम्॥४८॥ तदेव रम्यं रुचिरं नवं नवं तदेव शश्वन्मनसो म
होत्सवम्॥ तदेव शोकार्णवशोषणं नृणां यदुत्तमश्लोकयशोनुगीयते॥४९॥ न य
द्वचश्चित्रपदं हरेर्यशो जगत्पवित्रं प्रगृणीत कर्हिचित्॥ तद्ध्वांक्षतीर्थं न तु हंससे
वितं यत्राच्युतस्तत्र हि साधवो मलाः॥५०॥ स वाग्विसर्गो जनताघसंप्लवो यस्मिन्प्रतिश्लो
कमबद्धवत्यपि॥ नामान्यनन्तस्य यशोंकितानि यः शृण्वंति गायंति गृणंति साधवः॥५१॥

स की तुल्य साधु नर मैं गे॥ ता वाणी विषैं अच्युत को वर्णन है॥ ता ही वाणी विषे निर्मल चित्त साधु रम
ण करै है॥५०॥ जा वानी विषे श्लोक श्लोकन में अबद्ध पद रचना॥ नाम ती केवल हर जस अंकित ता नाम वर्ण
नहै॥ सो वानी समस्त जनन के पापन की नाशक ही है॥ ता वानी को साधु सब सुने॥ गा मैं है॥ कहै है॥५१॥ राम ५१

ब्रह्मकौप्रकासक निर्मल ऐसैंहु ज्ञान जो अच्युतके भावजुक्त नहीं सो तौऊ अज्ञान सोभित नहीं होतैं उत्तम हू कर्म ईश्वरकौ अर्पे विना सदां अमंगलरूप हैं सो कैसें सोभित होइगो ५१ वर्णाश्रमके आचार तप वेद अध्येनो दिकिवैं जो वडो श्रम ताकरिवैं केवलजस और संपति ही होइ और तहरिके गुणनकौं कथन श्रवणादिकरि श्रीकृ ष्णजूके चरनकमलनकौं होतनहैं सदां सुमिरन रहित जो कर्म सो श्रम ही है ५२ श्रीकृष्णके चरणकमलनकौं

नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं न शोभते ज्ञानमलं निरंजनं कुतः पुनः शश्वदभद्रमीश्वरे न ह्यर्पितं कर्म यदप्यनुत्तमम् ५१ यशःश्रियामेव परिश्रमः परो वर्णाश्रमाचारतपःश्रुतादिषु अविस्मृतिः श्री धरपादपद्मयोर्गुणानुवादश्रवणादिभिर्हरेः ५२ अविस्मृतिः कृष्णपदारविंदयोः क्षिणोत्यभद्राणि शं तनोति च सत्वस्य शुद्धिं परमात्मभक्तिं ज्ञानं च विज्ञानविरागयुक्तं ५३ यूयं द्विजाग्र्या बत भूरिभागा यच्छश्वदात्मन्यखिलात्मभूतं नारायणं देवमदेवमीशमजस्रभावा भजताविवेश्या ५४

जो सदां स्मरन सो अमंगलकौं नाशक मंगलकौ विस्तारक अंतःकरणकौ शुद्ध करै परमात्मा विषै प्रेमकौ वढा वै विज्ञान वैराग्य जुक्त ज्ञान उपजावै है ५३ हे द्वीजनमें श्रेष्ठ हो तुम सव वडे भागवान हो जाते अखिलके आत्मा नारा यण देव देवनमें श्रेष्ठ ऐसे ईश्वरकौं निरंतर हृदयमैं प्रीत पूर्वक राषिकें सदां भावजुक्त हैं भजो हो ५४

भा॰म्हा॰ जो भागवत ब्रह्म राजा परीक्षित के अनसन लेवे में बडे ऋषीन की सभा विषें जिन के सुनत परमरिषि श्रीशुकदेवजी के मु
५१ खतें हमनें पहिलें सुन्यों सो भागवततत्व तुमनें तुम पै प्रगट करयो ५५ हे विप्र हों कहिवे जोजोग ऐसे सुंदर
अनेक कर्म तो जिन के ऐसे वासुदेव कों जो महात्म सब अशुभन कों नासक सो महात्म हम तुम सबन कों कह्यो ५६
जो कोई अनन्य बुद्धि है कें नित्य एक पहिर वा एक छिन या महात्म कों सुनावे और जो कोई श्रद्धावान है के सुनें ते अपन

अतं च संस्मारित आत्मतत्वं श्रुतं पुरा मे परमर्षिवक्त्रात् प्रायोपवेशे नृपतेः परीक्षितः सदस्यृषीणां मह
तां च शृण्वताम् ५५ एतद्वः कथितं विप्राः कथनीयोरुकर्मणः महात्म्यं वासुदेवस्य सर्वाशुभविनाशनं ५६
य एवं श्रावयेन्नित्यं यामक्षणमनन्यधीः श्रद्धावान्योऽनुशृणुयात् पुनात्यात्मानमेव सः ५७ द्वाद
श्यामेकादश्यां वा शृण्वन्नायुष्मान् भवेत् पठत्यनश्नन्प्रयतस्ततो भवत्यपातकी ५८ पुष्करे मथुरा
यां च द्वारवत्यां यतात्मवान् उपोष्य संहितामेतां पठित्वा मुच्यते भयात् ५९ देवता मुनयः सिद्धाः पितरो
मनवो नृपाः यच्छन्ति कामान् गृणतः शृण्वतो यस्य कीर्तिताः ६०

पे को पवित्र करै ५७ जो कोई एकादशी विषें
सुनें सो वडी आरबल वन्त होई और जो कोई विना भोजन करें एकाग्रचित्त है या को पढे सो निःपाप होई ५८ पु
ष्कर में मथुरा में द्वारिका में उपासो रहके एकाग्रचित्त है जो संहिता को पढे सुनें सो सब भय तें छूटें ५९ जो कोई यासं
हिता को कहे सुनें की र्तन करें ता कों देवता मुनि सिद्धि पितर मनु नृप ए सबन कों वांछित मनोरथ को फल देवें ६०॥ ५१

रिग्जजुसामइनकेपढतेंद्विजजोंफलपावैं औरसततवीनदी घृतकीनदी दूधकीनदी इनकेदानकीयेतेजोफल
होय सोफलसवपाउराणसंहिताकेपढतेंहोइ हेद्विजवरहो जोजनशुद्धहैकें पुराणसंहिताकोंपढें सोसवभगवान
करिकह्योंजोपरमपदताकोंप्राप्तिहोइ ६१ यासंहिताकोंब्राह्मणपढिकें उत्तमबुद्धिकोंप्राप्तहोइ क्षत्रीपढिकेंसमुद्र
परजंतपृथ्वीकेराज्यकोंप्राप्तिहोई वैश्यपढिकें धनवाचहोइ शूद्रपढिकेंपापनतेंछूटें ६२ कलिकेमलसमूहनकें

ऋचोयजूंससामानि द्विजोऽधीत्यानुविंदते मधुकुल्याः घृतकुल्याः पयःकुल्याश्चतत्फलं पुराणसं
हितामेतामधीत्यप्रयतोद्विजाः प्रोक्तंभगवतोयत्तु तत्पदंपरमंव्रजेत् ६१ विप्रोधीत्याप्नुयात्प्रज्ञां राजन्यो
दधिमेखलाम् वैश्योनिधिपतित्वंच शूद्रशुध्येतपातकात् ६२ कलिमलसंहतिकालनोऽखिलेशो
हरिरितरत्रनगीयतेह्यभिक्ष्णम् इहतुपुनर्भगवानशेषमूर्तिः परिपठितोनुपदंकथाप्रसंगे ६३
तमहमजमनंतमात्मतत्वंजगदुदयस्थितिसंयमात्मशक्तिं द्युपतिभिरजशक्रशंकराद्यैर्दुरव
सितस्तवमच्युतंनतोस्मि ६४

नासक आखिलकेईशः ऐसेहरि औरसास्त्रनमैंनिरंतरनहीगाये यापुराणकेकथाप्रसंगनकरि पदपद
विषैंअसेसमूर्तिभगवानहीयगायेहे ६३ जगतकीउत्पत्तिपालन संघारकरनहारीअपनीशक्तिहेजिन
की औरब्रह्माईद्रशिवादिदेवतानकोंदुर्गोपयहैं अस्तुतजिनकी ऐसेतिनअजन्मा अनंतआत्मतत्व अच्युतकों
नमस्कारहे ६४

इ भिंतन नव शक्तिन करि आपही विषैं रचतौ जो थावर जंगम सो है रहिवे को स्थान जिनु कैं और ज्ञान मय है स्वरूप जिनकौ
देवतान मैं श्रेष्ठ ऐसें सनातन भगवानु कौं नमस्कार है ६५ भगवत तत्व के मनन सों आनंद करि कैं पूर्ण है चित्त जिनकौ
याही तें दूरि भयौ और ठौर तें भाव जिनकौ और अजित की सुंदर लीलान करि आकर्षित है मैं धीर्य जिनकौ ऐसे जो श्री
सुकदेवजी तत्व कौं प्रकास करै ऐसो भागवत पुराण जीनि जीनि कृपा विस्तारो है अखिल पापन के नासिक तिन व्यासपुत्र

उपचित नव शक्तिभिः स्व आत्मन्युपरिचित स्थिर जंगमालयाय भगवत उपलब्धि मात्र धाम्ने सुर ऋष
भाय नमः सनातनाय ६५ स्वसुख निभृत चेतास्तद्व्युदस्तान्य भावोप्यजित रुचिर लीलाकृष्ट सारस्तदी
यम् व्यतनुत कृपया यस्तत्व दीपं पुराणं तमखिल वृजिनघ्नं व्याससूनुं नतोस्मि ६६ इति श्रीमद्भागवते
महापुराणे द्वादशस्कंधे द्वादशोध्यायः १२ श्रीसूत उवाच यं ब्रह्मा वरुणेंद्र रुद्र मरुतः स्तुन्वंति
दिव्यैः स्तवैः वेदैः सांग पद क्रमोपनिषदैर्गायंति यं सामगाः ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यंति यं
योगिनो यस्यांतं न विदुः सुरासुर गणा देवाय तस्मै नमः १

मको नमस्कार है ६६ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे भाषा द्वादशो ध्यायः १२ श्री सूत उवाच
ब्रह्मा वरुण इंद्र रुद्र मरुद्गण ए सब दिव्य स्तवन करि जिनकी अस्तुती करै हैं और अंगोपांग पद क्रम उपनिषद
इन सहित वेदन करि साम वेद के गायन हारे जिनकौ गावैं और ध्यान विषैं स्थित तिन हर सों लग्यौ ऐसें मन करि
जोगी सर्व जिनकौ देखैं हैं देवता असुर गण जिनकौ अंत न ही जानैं सो ऐसें तिन देव कौं हमारो नमस्कार है १॥ 

पीठपैं भ्रमै श्रेष्ठ जो मंदिराचल ताकी शिलानके अग्र अग्रनकर मानो खुजाइ हैं। ऐसें सें वसस्वेक रनिद्रासी पावैं जिनकों
ऐसें कछपस्वरूप भगवानके। स्वासनकी पवन तुम सबनकी रछ्या करो। जा पवनके संस्कारके लीये सकोजो अनुवर्तन
ताके वसतें समुद्रके छोभ कोभि सकरनि रंतर जो घटे वढै। अवनाय विश्राम नहीं लेहै। २ पुरानकी संख्याको निरूप
और श्री भागवतकों आश्रै अरु प्रयोजन दान। औरदानको महात्म। और पाठादिकनको माहात्म अवइ मतेस्तुनो १

पृष्ठे भ्राम्यदमंदमंदरगिरिग्रावाग्रकंडूयना। निद्रालोः कमठाकृतेर्भगवतः श्वासानिलाः पांतु वः। यत्संस्कार
कलानुवर्तनवशाद्वेलानिभेनांभसां। यातायातमतंद्रितं जलनिधेर्नाद्यापि विश्राम्यति। २। पुराणसं
ख्यासंभूतमस्य वाच्यप्रयोजने। दानं दानस्य माहात्म्यं पाठादेश्च निबोधत। ३। ब्राह्मं दशसहस्राणि
पाद्मं पंचोनषष्टिश्च। श्रीवैष्णवं त्रयोविंशच्चतुर्विंशति शैवकं। ४। दशाष्टौ श्रीभागवतं नारदं पंचविं
शतिः। मार्कंडं नव वाह्नं च दशपंचचतुःशतं। ५। चतुर्दश भविष्यं स्यात्तथा पंचशतानि च। दशाष्टौ ब्रह्म
वैवर्तं लैंगमेकादशैव तु। ६। चतुर्विंशति वाराहमेकाशीति सहस्रकं। स्कांदं शतं तथा चैकं वामनं दश कीर्तितम्।

ब्रह्मपुराण दशहजार। पद्मपुराण पचपन हजार। विष्णुपुराण तेईस हजार। शिवपुराण चोवीस हजार। ५। श्रीभा
भागवतपुराण अठारे हजार। नारदपुराण पचीस हजार। मार्कंडेयपुराण नो हजार। अग्निपुराण पंद्रह हजार
चारसो। ५। भविष्यपुराण चोदह हजार पांचसो। ब्रह्मवैवर्तपुराण अठारे हजार। लिंगपुराण ग्यारे हजार। वाराह
पुराण चोवीस हजार। स्कंधपुराण इक्यासी हजार एकसो। वामनपुराण दस हजार ७

कूर्मपुराणसत्रहहजार ॥ मत्स्यपुराणचौदहहजार ॥ गरुडपुराणउनीसहजार ॥ ब्रह्मांडपुराणबारहहजा
र ॥ ८ ॥ याभांतिसबपुराणमिलकैच्यारलाषकविसबकहैहै ॥ जिनमैंश्रीभागवतपुराणअठारैहजारहै ॥ ९ ॥
अष्टणीनाभकमलमैस्थितसंसारडरपो ॥ ऐसेब्रह्माकौपुराणप्रलैमैंभगवानकृपाकरकहतभये ॥ आदि
मध्यअंतविषैवैराग्यकथीजामें ॥ औरहरिकीकथालीलानकेसमूहअमृतकरआनंदितकरैहै ॥ साधुरूप

कौर्मंसप्तदशाख्यातंमात्स्यंतच्चतुर्दश ॥ एकोनविंशतसौपर्णंब्रह्मांडंद्वादशैवतु ॥ ८ ॥ एवंपुराण
संदोहश्चतुर्लक्षउदाहृतः ॥ तत्राष्टादशसाहस्रंश्रीभागवतमिष्यते ॥ ९ ॥ इदंभगवतापूर्वंब्रह्मणेनाभि
पंकजे ॥ स्थितायभवभीताय ॥ कारुण्यात्संप्रकाशितं ॥ आदिमध्यावसानेषुवैराग्याख्यानसंयुतं ॥
हरिलीलाकथाव्रातामृतानंदितसत्सुरम् ॥ सर्ववेदांतसारंयद्ब्रह्मात्मैकत्वलक्षणं ॥ वस्त्वद्वितीयं
तन्निष्ठंकैवल्यैकप्रयोजनं ॥ १० ॥ प्रोष्ठपद्यांपौर्णमास्यांहेमसिंहसमन्वितं ॥ ददातियोभागवतंसया

देवतानकौजानै ॥ सोयहपुराणहैं ॥ सबवेदांतकौसार ॥ ब्रह्मकीतुल्यतलक्षणहैजामैं ॥ अद्वीयजोवस्तुता
हीमेंनिष्ठाहैजाकी ॥ केवलएकमुक्तीप्रयोजनहैजाकौ ॥ ऐसोयहपुराणहैं ॥ १० ॥ भादौंपूरणमासी
विषैसोनेकेसिंहासनसहितजोकोईयाश्रीमत्भागवतकौदानकरै ॥ सोपरमगतकौपावै ॥ ११ ॥ श्री ॥

नवलाई ओर पुराण साधुगणन मैं विराजमान हैं ॥ अव लाई अमृत को समुद्र यह श्री भागवत नहीं सुनो ॥ १२ ॥
सब वेदांत कौ सार जो भागवत ताके अमृत रस करि जे तृप्त भए हैं ॥ तिनकी रति और ठौर न रीझत है ॥ १३ ॥ जैसे
नदीन मैं गंगा देवतान मैं अच्युत वैष्णवन मैं शंभु ॥ तैसे पुराणन मैं यह भागवत ॥ १४ ॥ हे द्विज जैसे सब क्षेत्र

राजन्ते तावदन्यानि पुराणानि सतां गणे ॥ यावद्भागवतं नैव श्रूयतेऽमृतसागरम् ॥ १२ ॥ सर्ववेदां
त सारं हि श्रीभागवतमिष्यते ॥ तद्रसामृततृप्तस्य नान्यत्र स्याद्रतिः क्वचित् ॥ १३ ॥ निम्नगानां यथा
गंगा देवानामच्युतो यथा ॥ वैष्णवानां यथा शंभुः पुराणानामिदं तथा ॥ १४ ॥ क्षेत्राणां चैव सर्वेषां
यथा काशी ह्यनुत्तमा ॥ तथा पुराणव्रातानां श्रीमद्भागवतं द्विजाः ॥ १५ ॥ श्रीमद्भागवतं पुराण
ममलं यद्वैष्णवानां प्रियं यस्मिन्पारमहंस्यमेकममलं ज्ञानं परं गीयते ॥ तत्र ज्ञानविरागभ
क्तिसहितं नैष्कर्म्यमाविष्कृतं तच्छृण्वन्विपठन्विचारणपरो भक्त्या विमुच्येन्नरः ॥ १५ ॥ श्रीहरिः

न मैं कासी श्रेष्ठ है ॥ तैसे पुराणन मैं श्री भागवत श्रेष्ठ है ॥ परमहंसन कौं श्रेष्ठ प्यारो निर्मल ॥ श्रेष्ठ ज्ञान कही जा
मै गायौ ॥ जाविषै वैष्णवन को अति प्यारौ ॥ ज्ञान वैराग्य भक्ति सहित ॥ भगवत्तत्व ती प्रकाश्यो है ॥ ऐसे भागवत
पुराण कौं ॥ जो कोई जन भक्ति कर सुनै ॥ पढै ॥ विचारै ॥ सो जन संसार ते छूटै हैं ॥ श्रीकृष्णजी सत्य १५

जोभगवानपैहेलैं अतुलयहज्ञान रूपीदीपक याकूं ब्रह्माकौं प्रकाशन भयें। ओरजो ब्रह्मारू[illegible] नार
दमुनकौप्रकाशन भयें। ओरजो नारदरूपहैं जो व्यासजूकौप्रकाशन भयें। ओरजो व्यासरूपहूं जो श्रीशु
कदेवजूकौप्रकाशन भयें॥ ओरजो शुकदेव रूपहू करुणाकरकैं विष्णुरात राजापरीक्षितकौप्र

कस्मैयेन विभाषितोयमतुलोज्ञानःप्रदीपःपुरा॥ तद्रूपेणचनारदायमुनयेकृष्णायतद्रू
पिणा॥ योगींद्रायतदात्मनाथभगवद्रातायकारुण्यतः॥ तच्छुद्धं विमलं विशोकममृतंस
त्यंपरंधीमहि॥१९॥ नमस्तस्मैभगवतेवासुदेवायसाक्षिणे॥ यइदंकृपयाकस्मैव्याच
॥ चक्षेमुमुक्षवे॥२०॥

काशित भयें॥ शुद्धतत्वनिर्मलासदांआनंदमय निरउपाधिसस वननेश्रेष्ठ। ऐसेजिनभग
वानकौहमध्यानकरैहैं॥१९॥ सवनकेसाक्षीजोवासुदेवजाकृपाकरि॥ यहपुराण॥
संसारतेंछुट्योचाहै। तनतारोब्रह्माकौकहतभयें। ऐसो। जोभगवानजिनकौनमस्कारहै॥२०॥

संसाररूपकर इसेविस्फुरातिकोजोघुडावत भये ऐसेछिनरूपजोगेद्रुछकदेवजूंकोसाष्टांगनम.
स्कारहैं ॥१७॥हे जोगेश॥हेप्रभोजाभांतिजन्मजन्ममें तुह्मारेचरननविषैंभक्तहोयसकैरोजाते
तुमहमारेनाथहो ॥१९॥जिनहरकौनामसंकीर्तन सबपापनकोंनासकरैं औरजिनकोकरि:

॥योगींद्रायनमस्तस्मैछकायवंस्वरूपीणे संसारसर्पदष्टंयोविस्फुरातमसूचरत ॥१८
॥भवेभवेयथाभक्तिंपादयोस्तवजायते तथाकुरुष्वयोगेशानाथस्त्वंयतनः प्रभो ॥१९
॥नामसंकीर्तनंयस्यासर्वपापप्रनासनं प्रणामोदुःखसमनस्तनमामिहरंपरं ॥२०॥
॥इती श्री भागवते महापुराणेर्घापार्महंसस्संहितायांवैयासिक्यांद्वादसस्कंधेत्रयोदशोध्या॥

दंडोतसवदुःखनकोनाशकैरै ऐसेतिनश्रेयहरिकौनमस्कारहैं ॥२०॥ इतीश्रीभागवतेम:
हापुराणेर्घापार्महंसस्संहितायांवैयासिक्यांद्वादशस्कंधेत्रयोदशोध्याया ॥१३॥ श्रीद[illegible] म[illegible]
मितीकार्तिकक्रुष्ण ॥१२ सोमवार ॥लिष्यतंमिश्रछोटेलाल पठनार्थंविहारीभैगामवारो [illegible]

॥श्रीकृष्णायनमः श्रीसरस्वत्यैनमः राजापरीक्षतप्रश्नकरैहैं हेमुनेयदुवंशकोभूषणरूप ऐसेश्रीकृष्णजब
अपनेश्रेष्ठधामकोगए तबपृथ्वीकौनकोवंसहोतभयो यहहमसोंकहो १ श्रीशुकदेवजीकहैहै हेराजन्बृहद्र
थकेवंसकेअंतमें पुरंजयनाम राजाहोतभयो ताकोमंत्रीशुनकभयो सोतापुरंजयकोमारिकैं प्रद्योतनामाअ

परीक्षतउवाचः स्वधामानुगतेकृष्णेयदुवंसविभूषणे कस्यवंशोभवेतपृथ्वीमेतदाचक्ष्वमेमुने १
श्रीशुकउवाच: योन्त्यःपुरंजनोनामाभविष्योबार्हद्रथः तस्यामात्यस्तुशुनकोहत्वास्वामीनमात्मजः
प्रद्योतसंज्ञराजानंकर्तायत्पालकःसुत: १ विशाखयूपस्ततपुत्रोभविताराजकस्ततः नंदिवर्द्धनस्तत्सुतः
पुत्रःपंचप्रद्योतनाइमे अष्टत्रिंशोत्तरशतंभोक्ष्यंतिपृथ्वीनृपाः २ शिशुनागस्ततोभाव्यः काकव
र्णस्तुतत्सुतः क्षेमधर्मातस्यसुतःक्षेत्रज्ञःक्षेमधर्मजः ३

पनेपुत्रकौराजाकरैगो ताकेपालकपुत्रहोगो ताकेराजकपुत्रहोगो ताराजककेनंदीवर्द्धनपुत्रहोगो ताकेक्षे
मधर्मापुत्रहोगो एपांचप्रद्योतनामराजा अठतीसउपरसौवर्षताई पृथ्वीकोभोगकरैगें तिनकेपाछेशिशुनामरा
जाहोगो ताकेकाकवर्णापुत्रहोगो ताकेक्षेमधर्मापुत्रहोगो ताकेक्षेत्रज्ञपुत्रहोगो २ श्रीकृष्णजीसहाय

ताके विधिसार पुत्र होयगो ताके अजातसत्रु पुत्र होयगो ताके दर्भक पुत्र होयगो ताके अजय पुत्र होयगो ताके नं
दवर्द्धन पुत्र होयगो ताके महानंदि पुत्र होयगो ४ ए सिसुनागादि करिके दस राजा साठि उपर तीनसै वरस ताई
पृथ्वीवीको भोग करैगे हे कुरुवंसमें श्रेष्ठ कलियुगमें ५ हे मतराराज महानंदकौ पुत्र शूद्रीके गर्भमें भयो वडो पराक्र
मी महापद्मसेनाकोपति नंदननाम क्षत्रीनकोनाशकरनहारो होयगो ६ तानंदतें शूद्रप्राय अधर्मी राजा होयगे सोनं

विधिसारसुतस्तस्याजातशत्रुर्भविष्यति दर्भकस्तत्सुतोभावीदर्भकस्याजयः स्मृतः नंदवर्द्धन आजेयो
महानंदसुतस्ततः ४ शिशुनागादशैवैतेषष्ट्युत्तरशतत्रयम् समाभोक्ष्यंति पृथिवीं कुरुश्रेष्ठ कलौ नृपा ५
महानंदसुतोराजन् शूद्रीगर्भोद्भवोबली महापद्मपतिः कश्चिन्नंदः क्षत्रविनाशकृत् ६ ततोनृपाभविष्यं
तिशूद्रप्रायास्त्वधार्मिका सएकच्छत्रांपृथिवीमनुल्लंघितसासना ७ सासिष्यतिमहापद्मोद्वितीयइवभार्गवः
८ तस्यचाष्टौभविष्यंती सुमाल्यप्रमुखाः सुताः यइमांभोक्ष्यंतिमहीराजन्स्मशतंसमाः ९

दपृथ्वीमें एकहीक्षत्रधारी होयगो कोऊ ताकी आज्ञाको उल्लंघन नकरै मानो दूसरो परसराम है ८ तानंदके सुमाल्यादि
क आठ पुत्र होयगे ते सब राजा हूकैं सो वर्षताई या पृथ्वीको भोग करैगे ९ अपने अनुगत ननवनंदनको कोई एक ब्रा
ह्मण मारेगो तिनके मरे पीछे कलजुगमें मौर्जनाम राजा पृथ्वीको भोग करैगे १० नवनंदको मारनवारो सो

ह्मांणएाचंद्रगुप्तमोर्जकौराजविषैंअविसेककरैगो ११ ताचंद्रगुप्तकेवारसारपुत्रहोगो ताकेअशोकवर्धन
पुत्रहोगो ताकेसुजसापुत्रहोगो ताकेसंगतपुत्रहोगो ताकेशालिशूकपुत्रहोगो ताकेसोमशर्मापुत्रहोगो १२
ताकेवृहद्रथपुत्रहोगो एदसमोर्जराजाकलजुगमैतीसउपरसोवर्षताईपृथ्वीकौभोगकरैगे हेकोरवनमेश्रे
ष्ठ १३ इनसवमोर्जननमैपहैलेएकदसरथनामभोर्जहोतभयोयहजानवेहे १४ तदनंतरअग्निमित्रराजा

नवनंदानवद्विजःकश्चित्प्रपन्नानुद्धरिष्यति: तेसामभावेजगतीमोर्जाभोक्ष्यंतीवैकलौ १० सएव
चंद्रगुप्तंवैद्विजोराज्येऽभिषेक्ष्यति: ११ ततसुतोवारसारस्तूततश्चाशोकवर्द्धनः सुयसाभविताततः
संगतःसुयशःसुतः १२ शालिशूकस्ततस्तस्यासोमसर्माभविष्यति शतधन्वास्ततस्तस्यभविताव
हद्रथा १३ मौर्याह्येतेदशनृपाः सप्तत्रिंशच्छतोत्तरम् समाभोक्ष्यंतिपृथिवीकलौकुरूकुलोद्वह
अग्निमित्रःसुतस्मात्सुज्येष्ठोभवितततः वसुमित्रोभद्रकश्चपलिंदोभवितासुतः १५ ततोघोषःसु
तःतस्माद्वज्रमित्रोभविष्यती ततोभागवतस्तस्मादेवभूतिःकुरूद्वह १६ शुंगादशैतेभोक्ष्यंतिद्व
शवर्षशताधिकम् ततःकण्वानियंभूमिर्यास्यत्यल्पगुणान्नृपा १७

होगो ताकेसुज्येष्ठपुत्रहोगो ताकेवसुमित्रपुत्रहोगो ताकेभद्रकपुत्रहो ताकेपुलिंदपुत्रहोगो १५ ताकेघो
षपुत्रहोगो ताकेवज्रमित्रपुत्रहोगो ताकेभागवतपुत्रहोगो ताके देवभूतपुत्रहोगो १६ एदसशुंगाकहा
ये दसउपरसोवर्षताईपृथवीकौभोगकरैगे हेकोरवनमेश्रेष्ठ ईनसवनमैशुंगाराजापहिलैभयो यहजा

देवभूतिनामश्रृंगाकोमंत्रीबडोबुद्धिमानवसुदेवहैनामजाको सोमापरस्त्रीगामीदेवभूतश्रृंगाकोमारकेंआपही॰
राज्यकरैगो ताकेभूमित्रपुत्रहोगो १८ ताकेनारायणपुत्रहोगो ताकेसुसर्मापुत्रहोगो येसवहीकन्वहीकहैंगे पैंता॰
लीसऊपरतीनसेवर्षतांईकलयुगमेंपृथ्वीकोभोगकरेंगे १९ सुसर्माकण्वकोमारिकेंकछुवर्षतांईपृथ्वीभोगकरैगो
सुसर्माकन्वकोकोईकभृत्यनमें अन्ध्रनमेंनीच असत्तमबलीनामसोताकूंमारिकेंराज्यकरैगो २१ तदनंतरताबलीको॰

शुंगंहत्वादेवभूतिंकण्वोमात्यस्तुकामिनं स्वयंकरिष्यतेराज्यंवसुदेवोमहामतिः १८ तत्रपुत्रस्तुभूमित्रस्तस्यना
मू.२ना. रायणस्सुतः नारायणस्यभवितासुसर्माविततस्सुतः १९ काण्वायनाइमेभूमिंचत्वारिंशच्चपंचच शतानीत्रि॰
णिभोक्ष्यंतिवर्षाणांचकलौयुगे २० हत्वाकण्वसुसर्माणंतद्भृत्योवृषलोबली गांभोक्ष्यत्यंध्रजातियः कंचित्का॰
लमसत्तमः २१ कृष्णनामाथतद्भ्राताभवितापृथिवीपतिः श्रीशांतिकर्णिस्तत्पुत्रः पौर्णमासस्तुतत्सुतः २२ लं॰
बोदरस्तुतत्पुत्रस्तस्माच्चिविलिकोनृपः मेघस्वातिश्चविविलिकात्पटमानस्तुतस्यच २३ अनिष्टकर्माहालेयं
स्तलकस्तस्यचात्मजः पुरीषभीरुस्तत्पुत्रस्ततोराजासुनंदनः २४

भैयाकृष्णनामायापृथ्वीकोपतिहोयगो २२ ताकेशांतकर्णिपुत्रहोयगो ताकेपौर्णमासपुत्रहोगो ताकेलंबोदर
पुत्रहोगो ताकेचिविलिकपुत्रराजाहोगो ताकेमेघस्वातिपुत्रहोगो ताकेपटमानपुत्रहोगो २३ ताकेअनिष्ट॰
कर्मापुत्रहोगो ताकेहालेयपुत्रहोगो ताकेतलकपुत्रहोगो ताकेपुरीषभेरुपुत्रहोगो ताकेसुनंदनपुत्रहोगो २४

भा·छ· नाकेचकोरपुत्रहोंगो नाकेवटकपुत्रहोंगो नाकेशिवस्वातिपुत्रहोयगो हेऊपरिंदनाकेगोमतीपुत्रहोंगो नाकेपुरीमानपु
३ त्रहोपगो नाकेमेदसिरापुत्रहोयगो नाकेशिवस्कंधपुत्रहोंगो नाकेजज्ञश्रीपुत्रहोंगो नाकेविजयपुत्रहोंगो नाकेचंद्रभा
व्यपुत्रहोंगो नाकेसलोमधीपुत्रहोयगो २६ एतीसराजाछपनउपरचारसेवरषताई प्रथ्वीकोंभोगकरेंगें हेकुरनंद

चकोरोवटकौयत्रशिवस्वातिररिंदमः तस्यापिगोमतिपुत्रपुरीमानभवतासुतः २५ मेदशिराः
शिवस्कंधोयज्ञश्रीस्ततस्सुतस्सतः विजयस्ततस्तोभाव्यश्चंद्रविज्ञस्वलोमधीः २६ एतेत्रिंशत्नृपत्तयश्च
त्वार्यब्दशतानिच षट्पंचाशच्चपृथ्वीभोक्ष्यंतीकुरुनंदनः २७ सप्ताभीराश्चावभृत्योदशादर्गभिनोनृपः
कंकाःषोडशभूपालाभविष्यंतीःचलोलुपाः २८ ततोष्टौयवनाभाव्याचतुर्दशतुरुष्कराः भूयोदशगुरं
डाश्चमौनाएकादशैवतुः २९ एतेभोक्ष्यंतिपृथ्वीदशवर्षशतानिच नवाधिकांचनवतिंमौनाएका
दशक्षितिं ३० भोक्ष्यंत्यब्दशतान्यंग्रत्रीणितैःसंस्थितेततः किलकिलायांनृपतयोभूतनंदाथवंगिरी
शिशुनंदीश्चतद्भ्राताचयशोनंदीप्रवीरको इत्येतेवैवर्षशतंभविष्यंत्याधिकाषट् ३०
नंतनदनंतरआवभृत्यनगर
मेसातआभीरराजाहोंगे तदनंतरदशगर्दभराजहोयगो सोरहकेकराजाहोइगे लोलुपहोइगे २८ तदनंतरआ
ठजवनराजाहोंगे तदनंतरचौदहचतुरुष्कराजाहोंगे तदनंतरदशगुरंडराजाहोंगे ग्यारहमौनीराजाहोंगे मौन
नविनाएपेसठराजाएकवर्षघाटग्यारहवर्षताईपृथ्वीभोगेंकरेंगे तेमोनतीनसेवर्षताईपृथ्वीकोभोगकरेंगे
तदनंतरकिलकिलानगरीमेंभूतनंदनगिरशिशुनंदनअरतिनकेभैयाजसनंद प्रवीरकरासवछेउपरसोवर्ष

[illegible]

३

तीन शिशुनंदन के तेरह पुत्र होइगें ते सब बाल्हीक ही कहावेंगे और एक पुष्यमित्र नाम राजा होगो ताके
दुर्मित्र पुत्र होइगो ३१ सात तो अंध्र सात कौशल और एक वेदुर्ज नगर को पति नैषध राजा सब षंड
मंडलेश्वर राजा एकही कालमें होगें ३२ तदनंतर मागधदेश में विश्वस्फूर्जि पुरंजय नाम राजा होगो

तेषां त्रयोदश सुता भवितारश्च बाल्हिकाः पुष्यमित्रोथ राजन्यो दुर्मित्रोऽस्य तथैव च ३१ एक
काला इमा नृपाः सप्तांध्राः सप्त कौशलाः वैदूर्यपतयो भाव्या नैषधास्तत एव हि ३२ मागधा
नां तु भविता विश्वस्फूर्जः पुरंजयः करिष्यति परा वर्णान् पुलिंदयदुमद्रकान् प्रजाश्चाब्रह्मभू
यिष्ठाः स्थापयिष्यति दुर्मति ३३ वीर्यवान् क्षत्रमुत्साद्य पद्मवत्यां स वै पुरीम् अनुगंगमाप्र
यागं गुप्तां भोक्ष्यति मेदनी ३४ सौराष्ट्रावंत्याभीराश्च शूरा अर्बुदमालवा व्रात्या द्विजा भविष्यंति शूद्रप्राया

सो बडो वरात्र मी दुर्मति होइगो पुलिंद यदु मद्रक इन म्लेच्छ प्राय वर्णन को करेगो और ब्रह्मबल रहित
प्रजान को स्थापन करेगो ३३ क्षत्रीन को नाश कर पद्मावती नाम पुरीमें वसिके हरिद्वार और प्रयाग ता
ई पृथ्वी को भोग करेगो ३४ सोरठ उज्जैन आभीर शूर अर्बुद मालवा ई न सब देसन के वासी जन ते उ
क्रियान करहीन शूद्र प्राय ए सब ब्राह्मण राजा होइगो ३५.

भा॰ द्वा॰ सिंधु चंद्रभागा के तीर कास्मीर इन सब देसन में शूद्र क्रिया न करि हीन म्लेछ प्राय वेद मर्यादा के छोड़े
४ उन ता देस राजा होंगे ३६ हे राजन् ए सब एक ही काल में म्लेछ प्राय अधर्मी झूठ परायण अल्प दाता बड़े
क्रोधी स्त्री बालक गौ ब्राह्मण इनके मारन वारे परस्त्री पर धन के हरन वारे उपजेंगे और मरेंगे

सिंधोस्तटं चंद्रभागां कौंती काश्मीर मंडलं भोक्ष्यंति शूद्रा व्रात्याद्या म्लेछाश्चाब्रह्मवर्चसः ३६
तुल्यकाला इमे राजन् म्लेछ प्रायाश्च भूभृतः एतेधर्मानृत पराः फल्गुदास्तीव्रमन्यवः ३७
स्त्रि बाला गो द्विज घ्नाश्च परदाराधना दृतो उदितास्तमित प्राया अल्प सत्वाल्पकायुषः ३७
असंस्कृताः क्रीयाहीना रजसा तमसावृताः प्रजास्ते भक्षयिष्यंति म्लेछा राजन्य रूपिणः ३८
तन्नाथास्ते जनपदास्तच्छीलाचार वादिनः अन्योन्यतो राजभिश्च क्षयं यास्यंति पिडिताः ३९
इति श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे नाम प्रथमोध्याय १

अल्प पराक्रमी अल्प आव बल एषे होइगे ते सब संस्कार क्रिया न करि हीन रजोगुण तमोगुण करि आवृत
म्लेछ राजान को रूप धरें प्रजान को दुख दाई होइगे ३७ ये राजा है पालक जिन के ऐसे ते सब देसनि ही राजा
न के स्वभाव और आचरन के अनुसार को आपस में और राजान करि पीड़ित है क्षय को प्राप्त होंगे ३८ इति प्रथमोध्याय १

श्रीशुकदेवजी कहैहै हेराजन् तदनंतर दिन दिन बलवान् कलियुग करि धर्म सत्य सौच छमा दया आ
युर्दा बल स्मृति ए आदि ए सब घटेंगे १ कलियुग विषे मनुष्यन के धर्म जन्म आचार गुण एक धन तें होहै
धर्मन्यायकी व्यवस्थाके विषैं बलीहीजीतैं २ व्याह एक अभिपति ही मेर देंगे व्यौहार कपट ही सौं है स्त्रीपुरु

श्रीशुक उवाच: ततश्चानुदिनं धर्मः सत्यं सौचं क्षमा दया कालेन बलिना राजान्नंक्ष्यत्यायुर्बलं
स्मृति: १ वित्तमेव कलौ नृणां जन्माचारगुणोदय: धर्मन्यायव्यवस्थायां कारणं बलमेव ही २
दांपत्येऽभिरुचिर्हेतुर्मायैव व्यावहारिके स्त्रीत्वे पुंस्त्वे च हि रतिर्विप्रत्वे सूत्रमेव हि ३ लिंगमेवाश्रमा
ख्यातावन्योन्यापत्तिकारणं अवृत्त्या न्यायदौर्बल्यं पांडित्ये चापलं वच: ४ अनाढ्यतैवासाधुत्वे
साधुत्वे दंभ एव च: स्वीकार एव चोद्वाहे स्नानमेव प्रसाधनम् ५

षमें प्यार ही हैं तहां जाति कुलको विचार नहीं ब्राह्मण के जनेउ मात्र ही हैं आचार नहीं आश्रम चिन्ह मात्र ही
कर जानें जात हैं आपसमें प्यार कहूं न हीं धनहीन न्यायमें हारें हैं वहोत बोलै सोई पंडित धनाधिकारि जो
हीन सोई असाधु है दंभी साधु है व्याह एक स्वीकार ण मात्र ही है और स्नान हो सब आसिंगार है ३ ४ ५

भा०द्वा० दूरि जलहीनैं तीर्थमानैंगे गृहसेवनमें रुचि नहीं जेयाधारणसुंदरता उदरभरवोही सब स्वार्थनकी सिद्धि
५ तारेटीहती सत्यवादीतें कुटुंबकेभरनहीं चितधारैतें जसतीकेलोपेधर्मकोंनरैतें जे ४ याभांति दुष्टि प्रजानकारजवपृ
थ्वीमंडलव्याप्तहोगो तवजालएसत्रीवेश्यपुरुषनमैंजोवलीसोईराजाहोगो ५ लोभीनिरदईलडेरीयासोराजानक

दूरेवार्यपनं तीर्थलावण्येकेशधारणम् उदरंभरितास्वार्थसत्यत्वेधार्ष्ट्यमेवही दासेकुटुंबभरणं
यशार्थोधर्मसेवनम् ४ एवंप्रजाभिर्दुष्टाभिराकीर्णेक्षितिमंडले ब्रह्मविट्क्षत्रशूद्राणांयोवलीभवे
तान्नृपः ५ प्रजाहीलब्धेराजन्यैर्निर्घृणैर्दस्युधर्मभिः आछिन्नदारद्रविणायास्यंतिगिरिकाननम्
शाकमूलामिषक्षौद्रफलपुष्पादिभोजनाः ६ अनावृष्ट्याविनंक्ष्यंति दुर्भिक्षकरपीडिताः शीतवा
तातपप्रावृड्हिमैरन्योऽन्यतःप्रजाः क्षुत्तृड्भ्यांव्याधिभिश्चैवसंताप्येनचचिंतया ७ ११

छिपिवायलेइगें स्त्रीधनजिनकी ऐसीप्रजापर्वतनमैंवनमैंजाइकैं शाकमूलफलमांसमधुपुष्पबीजइनसों
उदरभरनकरेंगें ६ अनावृष्टिअकालराजानकरिपीडित शीतघाम धूपवर्षाकुहर इनसवनकरदुषितहैं
औरअपावसमेंपीडलहैं प्रजानष्टहोगी भूषप्यास रोग संतापचिंता इनकरदुःखहोइगे ७ ११ श्लोकभरोजाप

मनुष्यनकी कलियुगविषै वीसवर्षकी अथवा तीसवर्षकी वडी आवर्दा होइगी जब कलियुगके दुषनकरि नरनके दे
ह छीन होइगे १२ और वर्णाश्रमवारे मनुष्यनको वेदमार्ग नष्ट होइगो पाषंड धर्म तो वढैगो राजा लुटेरे पाप होइगे चोरी झूठ
वृथा हिंसा नाना वृत्ति को करेंगे ऐसे मनुष्य होइगे १३ वर्ण सब शूद्रप्राय होइगे गाय छेरी सी होगी चारो आश्रम गृहस्थप्राय होंगे
स्त्री के भैया ते घरसो प्यार करेंगे १४ सब गृहस्थ होंगे अन्न सब छोटे होंगे वृक्ष सब छोंकरा से होंगे मेघन में वीजुरी बहुत चमकेगी
वर्षा थोरी होइगी गृहस्थनके घर सूने प्राय होंगे १५ या भांति कलियुग में जन गधा से होइगे तब धर्म की रक्षा के लीये भगवान्स

त्रिंशाद्विंशति वर्षाणि परमायुः कलौ नृणां क्षीयमाणेषु देहेषु देहिनां कलिदोषतः १२ वर्णाश्रमवतां धर्मे नष्टे वेदपथे
नृणां पाषंडप्रचुरे धर्मे दस्युप्रायेषु राजसु चौर्यानृतवृथाहिंसानानावृत्तिषु वै नृषु १३ शूद्रप्रायेषु वर्णेषु छागप्राया
सु धेनुषु गृहप्रायेष्वाश्रमेषु यौनप्रायेषु बंधुषु १४ अणुप्रायास्वोषधिषु शमीप्रायेषु स्थास्नुषु विद्युत्प्रायेषु मेघे
षु शून्यप्रायेषु सद्मसु १५ इत्थं कलौ गतप्राये जनेषु खरधर्मिषु धर्मत्राणाय सत्वेन भगवानवतरिष्यति १६
चराचरगुरोर्विष्णोरीश्वरस्याखिलात्मनः धर्मत्राणाय साधूनां जन्म कर्मापनुत्तये १७ शंभलग्राममुख्यस्य ब्राह्म
णस्य महात्मनः भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति १८ अश्वमाशुगमारुह्य देवदत्तं जगत्पतिः असिना
ऽसाधुदमनमष्टैश्वर्यगुणान्वितः १९

द्र सत्व मूर्ति करि प्रकट होइगे १६ चराचर के गुरु सब के आत्मा ईश्वर जो
से विष्णु सो जन्म साधनके धर्म की रक्षा के और कर्मनके नाश के लीये १७ संभल ग्राम में मनुष्य महात्मा ऐसे विष्णुजस ब्रा
ह्मणके घर में कलिकी भगवान् प्रगट होइगे १८ देवतान करि दीयो शीघ्रगामी ऐसो घोड़ा पे चढ़िकै षड्ग लेके असाधन के धम
न करवे आठो सिद्धिन करि युक्त जगतपति निरउपम कांति ऐसे भगवान ता घोडा के दोरावते पृथ्वी में विचरते

तदनंतर वासुदेव के अंगराग की अति पुन्यरूप सुगंध युक्त पवन को परस भयो जिनको ऐसे तिन नगर देसन के मन उज्वल होइंगे अब नगर देसन में सब चोर भगवान् ने मारे जाइंगे २१ और तिन नगर देसवासीन के हृदे में शुद्ध सत्व मूर्ति भगवान् वासुदेव स्थित होहिंगे तब तिन प्रजान के उत्पत्ति उत्तम पुष्ट होइंगी २२ यदावतीर्णो भगवान् जब

विचरन्नाशुना क्षोण्यां हयेनाप्रतिमद्युतिः नृपलिंगछदो दस्यून् कोटिशो निहनिष्यतिः २० अथ तेषां भविष्यंति मनांसि विशदानि वै वासुदेवांगरागातिपुण्यगंधानिलस्पृशां २१ यदावतीर्णो भगवान् कल्कि र्धर्मपतिर्हरिः कृतं भविष्यति तदा प्रजासूतिश्च सात्विकी २२ यदा चंद्रश्च सूर्यश्च तथा तिष्य बृहस्पती एकराशौ समेष्यंति भविष्यति तदा कृतं २३ येतीता वर्तमाना ये भविष्यंति च पार्थिवाः ते त उद्देशतः प्रोक्ता वंशीयाः सोमसूर्ययो २४ आरभ्य भवतो जन्म यावन्नंदाभिषेचनं एतद्वर्षसहस्रं तु शतं पंचदशोत्तरं २५ सप्तर्षीणां तु यौ पूर्वौ दृश्येते उदितौ दिवि तयोस्तु मध्ये नक्षत्रं दृश्यते यत्समं निशि २६ तेनैव ऋषयो युक्तास्तिष्ठंत्य

धर्म के पालन कल्कि भगवान् हरि अवतीर्ण होइंगे तब सतयुग होइगो और प्रजान की संतान सात्वकी होंगी २३ जब चंद्र सूर्य बृहस्पति ये सब पुष्य नक्षत्र के योग वारी एकराशि में प्राप्ति होइंगे तब सतयुग होइगो २४ चंद्र सूर्य वंसी जे राजा होचुके और जे अब हैं और आगे जे होंगे ते सब संक्षेप तें तुम्हारे आगे कहे २५ तुम्हारे जन्म तें लेके नंद के राज ताई सहस्र उपर पंद्रह सै वर्ष कहे २६ आकास विषें सप्तऋषिन के मध्य जो द्वै पहिले दीखें तिन दोउन के मध्य रात्रि में तिन दोउन की बराबरी दीखें तिन मध्य के नक्षत्र सहित सातो ऋषि मनुष्य के सौ वर्ष ताईं रहेंगे: २७ १८

तेसातोरिषिअबतुम्हारेहीतसंतंमघाकेआश्रयहैं जपतेजखीसुद्विसतयमहर्षिभगवान् श्रीकृस्नअपनेअप्रगु
टधाममेंगए २८ तवहीकलिजुगनेंयालोकमेंप्रवेसकीयौं याकलिजुगकेप्रवेसहोतेंहीजननकौपापमेंरुचिभई
हेराजन् जवताईरमापतिभगवान् चरणकमलनकरपृथ्वीकोंपरसकरविराजमानहैं २९ तवताईकलिजुगअ

तेत्वदीयेद्विजाकालेअधुनाचाश्रितामघां विस्नोर्भगवतोभानुकृस्नाख्योऽसौदिवंगतः २८ तदाविश
त्कलिर्लोकंपापेयद्रमतेजनः यावत्सपादपद्माभ्यांस्पृसन्नास्तेरमापतिः २९ तावत्कलिर्वैपृथवीपराक्रां
तुंनचाशकत् यदादेवर्षयाःसप्तामघासुविचरंतिहि ३० तदाप्रवृत्तस्तुकलिर्द्वादशाब्दशतात्मकः यदाम
घाभ्योयास्यंतिपूर्वाषाढंमहर्षयः ३१ तदानंदात्प्रभृत्येषकलिर्वृद्धिंगमिष्यति यस्मिन्कृस्नोदिवंयातस्तस्मि
न्नेवतदाहनि प्रतिपन्नंकलिजुगमितिप्राहुःपुराविदा ३२। २५

पकेहू पृथ्वीमेंपराक्रमनकरशक्यौं जवताईमघामेंसातोरिषीवर्तेहैं ३० तवकलिजुगप्रवृत्तहोइकैं देवतान
केवारेसैंवर्षताईरहैहैं २३ जवसातोऋषिमघानतेंनिकसकें पूर्वाषाढनक्षत्रमेंजाइगें ३१ तवनंदकेराजतें
आरंभकरिकैंकलिजुगवढेगौं २४ जाहिनश्रीकृस्नजूअप्रगटभए ताहीदिनकलिजुगयालोकमेंप्रविष्टभ
यौं ऐसेपरिलैरिषीकहैहैं ३२

भा० द्वा० देवतानके हजार १००० द्वैसैवरष २०० संध्यान मैं गयेवर्ष व्यतीत भये पाछे पुनि सत्यजुग होइगो नवनरन
७ केमनमैं आत्माको प्रकाश होगो ३४ हे राजन् याभांति मनुको वंस पृथ्वी मैं होत भयो सोहमनैं तुमसों कह्यो
ऐसें ही ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रनको वंस जुग जुग मैं जानी येहै ३५ नाम तीन्हर जाने जाहिते और

दिव्याब्दानां सहस्रांते चतुर्थे तु पुनः कृतं भविष्यति यदा नृणां मन आत्मप्रकाशकं ३४ इत्येष मा
नवो वंशो यथा संख्यायते भुवि: यथा विट्शूद्रविप्राणां तास्ता ज्ञेया युगे युगे ३५ एतेषां नामलि
गानां पुरुषाणां महात्मनां कथामात्रावशिष्टानां कीर्तिरेव स्थिता भुवि ३६ देवापिः शांतनोर्भ्रा
ता मरुश्चेक्ष्वाकवंशजः कलापग्राम आसाते महायोगबलान्वितौ ३७ ताविहैत्य कलेरंते वा
सुदेवानुशिक्षितौ वर्णाश्रमयुतं धर्मं पूर्ववत् प्रथयिष्यत: ३८

कथाही मात्र रहिनको रही जिनकी ऐसे महात्मा पुरुषनकी कीर्ति ही पृथ्वी मैं रही ते नहैं ३६ चंद्र
वंशी सांतनको भैया देवापी इक्ष्वाकुवंसी मरुत ए दोउ बडे जोगबल करि कलापग्राम मैं हैं ३७ ते दोउ
कलिजुग के अंत मैं भगवान् सिखापायके पहलैं से सब वर्णाश्रमके धर्मको विस्तारेंगे ३०।३८ ७

सतयुगत्रेताद्वापरकलियुगयेच्यारोयुगक्रमकरकैपृथ्वीकैविषैं प्राणीनमेवर्त्तैंहै ३९ हेराजन् एसेजे
राजाहमकरकेहैं औरहूजे भएतेसवयाभूमिकेममताकरिकैं ताभूमिकोंछोडिकैंप्रापनासकोंप्राप्तभ
भए ४० कमविडूस्मसंपंनेराजान्मोपिजासरीकोराजानामहैताशरीरकेंग्रंतमेंकमविछाराषयेनर

कृतंत्रेताद्वापरंचकलिश्चेतीचतुर्युगं अनेनक्रमयोगेनभविप्राणिषुवर्त्तते ३९ राजन्नेते
मयाप्रोक्तानरदेवास्तथापरे भूमौममत्वंकृत्वांतेहित्वेमांनिधिनंगता ४० कमिविट्भस्म
संज्ञंतेराजन्नाम्नोपियस्यच भूतभुक्ततत्कृतेस्वार्थंछिवेदनिरयोपतः ४१ कथंसेयम
खंडाभूः एवेमेंपित्सैईहिता मत्पुत्रस्यचपौत्रस्यमत्पूर्वांवंशजस्यच ४२ तेजोवन्नमयं
कायंगृहीत्वात्मानपाभुधाः महीममतयाचोभौहित्वातेदर्शनंगता ४३

कोई मरोइहै ऐसेसरीरकेलीयेंजोंप्राणीसोंद्रोहकरैसोस्वारथकोंनहीजानैहै ४१ जाद्रोहतेनरकहोहकैं
सेयहसवभूमतमारेपुरुषानपालीहै अववेसीभांतमारेपुत्रपौत्रवंसीनकोंहोगीयहमनोरथकरते
रहे ४२ तेमहात्मानीपंचभूतमययासरीरकों अपनोमानकेंपृथ्वीसोममताकरिकेंग्रंतमेहोउनकोंछोडकेंआप

पुराण ४३३

हे राजन् जे जे पृथ्वीपति भए ते अपने पराक्रमसों भोग करत भये या कालमैं तिन की कथाही मात्र रहन कों
राषी ३६ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे टीकायां नाम द्वितीयोध्यायः २ श्रीशुकदेवजी कहतहैं
हे राजन् अपने जीतवे के लीयें प्रति आगरहत्र राजानकों देखिवें यह भूमि हसे है कैसें हसे है अहो रा

येये नृपतयो राजन् भुंजंति भुवमोजसा। कालेन ते कृताः सर्वे कथामात्राः कथासु च ३६ इति श्री
मद्भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे वंशानुकीर्तनं द्वितीयोध्यायः २ श्रीशुक उवाच। दृष्ट्वात्मनि
जये व्यग्रान् नृपान् हसति भूरियं अहो मां विजिगीषंति मृत्योः क्रीडनका नृपा १ काम एष नरेंद्रा
णां मोघः स्याद्विदुषामपि येन फेनोपमे पिंडे येतिविश्रंभिता नृपाः २ पूर्वं निर्जित्य षड्वर्गं जे
ष्यामो राजमंत्रिणः ततः सचिवपौराप्तकरींद्रानस्य कंटकान् ३

अहो मृत्यु के खिलौना राजा मोकूं
जीत्यौं चाहे हैं १ जा काम ना करि भूष्ट बुद्धान तुल्य या सरीर विषें जिन राजान कों विश्वास उपजायो तिन वि
द्वान राजान हू कौ सो काम ना निष्फल है २ पहले या चई इंद्रीयन सहत छठे मन कों जीते तदनंतर मंत्री और सचिव और
पुरवासीन कों और कुटुंबादिकन कों मत्तापथ कों इन सबन कों वस करिकें तदनंतर सेना सहित वैरीन कों जीतेंगे ३

यात्रम क्तारि सम सहृदपर जेतपृथ्वी मोजीतेंगे ऐसी आसा करि वधें हैं हृदय जिनके ऐसें ने सब राजा निकट र
हन हारे काल कों नहीं देखें हैं ४ समुद्रकरि आवृत ऐसी मोकों पराक्रम सों जीत कें अपनी आत्मा करि समहृद हकों
जीतें हैं ऐसी औरमन मों जीते कौ इतफल नहीं मुक्तीफलतें ५ जाकों मो छोडि के मनु औरमनु के पुत्र जात भये

एवं क्रमेणजेष्यामः पृथ्वीं सागरमेखलां इत्यासावद्धहृदयानपश्यंति केनक्रमः ४ समुद्रावर्णं
जित्वा माविपातपाद्धिमोजसा कियदात्मजयस्येतन्मुक्तिरात्मयजेफलं ५ यांविसृज्जैवमनवस्त
त्सुताश्चकुरुरघव गता यथागतं पुद्रे तां मा जेष्यंत्य बुद्धयः ६ मत्कृते पितृपुत्राणां भ्रातृणां चापि
विग्रहः जायते ह्यसतां राज्ये ममतावृहचेतसां ७ ममैवेयं मही कृत्स्ना न ते म्रदे इति वादिनः स्पर्द्धमा
नामिथो घ्नंति म्रीयंते मत्कृतेनरा ८

तामोकों कुबुद्धि पुरुषमें जीत्यो चाहेंते हैं कौरवनमें अेष ऐसें पृथ्वी कहते हैं ६ जा राजान विषें बाधी है ममता
जिनने ऐसें असत्य राजा मेरे लिये पिता पुत्र भैया आपसमें कलह करें हैं ७ हे मूढ यह पृथ्वी मेरी है तेरी
नहीं यह कहत आपसमें स्पर्द्धा करत मेरे लीये राजा मारे मरे हैं ८

भा॰ द्वा॰ हेराजन् पृथु पुरूर्वा गाधि नहुस अर्जुन भरथ मांधाता सगर राम षट्वांग धुंधमार रघु तणविंदु:
६ जजाति सर्जाति सांतनु गय भागीरथ कुवल पाश्व काकुस्थ नैषध नगराजा हिरण्यकश्यप वृत्रासुर राव
ण मुचकुंद नरकासुर संवर हिरण्याक्ष तारक और हूं बहोत दैत्यराजा वडेवडेवलीसवहीसवके जाननहारे:

पृथुपुरूर्वीगाधिर्नहुषोभरतोर्जुन: मांधातासगरोराम:खट्वांगोधुंधुहारघु: तणविंदुर्यया
तस्यशर्याति:शांतनुर्गय: भगीर्थ:कुवलयाश्वककुत्स्थोनैषधोन्नृग: हिरण्यकश्यपुर्वृत्रो
रावणोलोकरावणा: नमुचीशंवरोभौमोहिरण्याक्षोऽथतारका: अन्येचवहवोदैत्याराजा
नोयेमहेश्वरा: सर्वेसर्वविद:शूरा:सर्वेसर्वजितोजिता: ममतांमय्यवर्त्तन्त कृत्वोच्चैर्मर्त्यध
र्मिणा: कथावसेष:कालेन: ह्यकृतार्था: कृताविभो १३

वडेस्सूरसवहीसवकेजीतनहारे ऐसेंसवहीअजीतहोतभए तेमवंतनधर्मीहमविषैंवडीममताकर
वर्त्तते तेसवमनोरथपूरणभए विनाहीकालकेगालमैंगये तिनकीकथाहीमात्रहीरहीहै समर्थ
याभांतिपृथ्वीहसतकहतभई २। १३

हे विभो लोक विषै जस को विस्तार करि आप परलोक कों जात भए ऐसे बडे बडे राजान की कथा तुमसों क
ही विज्ञान वैराग के लीयें सो केवल वानी को विलास ही है परमारथ न ही अमंगल न के नास करनो उत्तमश्लोक
तिनके गुनान को कवि सदा गावै है जो कोई कृष्ण विषै निर्मल भक्ति को चाहै सो निरंतर तिन गुणान कों सुनै:

कथा इमास्ते कथिता महीयसां विताय लोकेषु यशः परेयुषां विज्ञानवैराग्यविवक्षया विभो वचोवि
भूतीर्न तु पारमार्थ्यं यस्तूत्तमश्लोकगुणानुवादः संगीयतेऽभीक्ष्णममंगलघ्नः तमेव नित्यं
शृणुयादभीक्ष्णं कृष्णेऽमलां भक्तिमभीप्समानः राजोवाच: केनोपायेन भगवान् कले
र्दोषान् कलौ जनाः विधमिष्यंत्युपचितांस्तन्मे ब्रूहि यथा मुने युगानि युगधर्मांश्च मानं प्रल
यकल्पयोः कालस्येश्वररूपस्य गतिं विष्णोर्महात्मनः शुक उवाच: कृते प्रवर्तते धर्मश्चतुष्पात्त
ज्जनैर्धृतः सत्यं दया तपो दानामिति पादा विभोर्नृपः १८

राजा प्रश्न करै है हे भगवान् हे मुने कलियु
ग के बडे दोषन को कली के जन कौन उपाय करि दूरि करैं सो तुमसों कहौ जुग और जुगन को धर्म कहौ और प्रल
य को प्रमाण कहौ और महात्मा काल रूप विष्णु की गति कहौ श्रीशुकदेवजी कहै है हे राजन् सतयुग मै जनन नै
धर्म चार चरण करि वर्ते सत्य दया तप दान ए चार चरण धर्म के है १४।१८ श्रीकृष्णाय नमो नमः ॥

ना०धा० सदासंतुष्टकरुणावान् मित्रताकरियुक्त शांति दांत सहनसील आत्माराम समदृष्टि परमार्थमेंनिरालस ता
१० सतयुगकेजन ऐसे होतभए १५ औरत्रेतायुगविषें झूंठ हिंसा तृष्णा विग्रह इनअधर्मके पापनकरि सत्यदयातपदा
नयेधर्मकेपाई चौथाई हीनभए हैं तहाँ क्रियातपमेंनिपुन अतिहिंसित न औरलंपट नहीं धर्म अर्थ काममेंनिष्ठा वेद
त्रयीधर्मपरायण ब्राह्मणहैंमुख्यजामें ऐसीत्रेताकीप्रजातें नृपहोतें १७ द्वापरयुगविषेंतृष्णा झूंठ द्वेष इनचारअ

संतुष्टाः करुणा मैत्राः शांता दांतास्तितिक्षवः आत्मारामाः समदृशः प्रायशः श्रमणा जना १८ त्रेतायां
धर्मपादानां तुर्यांशो हीयते शनैः अधर्मपादैरनृतहिंसासंतोषविग्रहैः तदा क्रियातपोनिष्ठा नाति
हिंस्रा न लंपटाः त्रैवर्गिकास्त्रयीवृद्धा वर्णा ब्रह्मोत्तरा नृप तपःसत्यदयादानेष्वर्द्धं ह्रसति द्वापरे हिंसा
ऽतुष्ट्यनृतद्वेषैर्धर्मस्याऽधर्मलक्षणैः यशस्विनो महाशीलाः स्वाध्यायाध्ययने रताः आढ्याः कुटुंबि
नो हृष्टा वर्णाः क्षत्रद्विजोत्तमाः कलौ तु धर्महेतूनां तुर्यांशोऽधर्महेतुभिः एधमानैः क्षीयमाणो ह्यन्ते सो
ऽपि विनंक्ष्यति २०।२४

धर्मकेपापन अरदयातपसत्यदान एधर्मकेपाय आधेघटतभए १८ जसस्वी बडेशीलवान् अध्ययनविषेंनिपु
नसंपतिकरियुक्त कुटुंबीहर्षित ब्राह्मणक्षत्रीमुख्यहैंजिनमें ऐसीप्रजाद्वापरविषें होतभई १९ कलियुग
केविषें बढेअधर्मकेपापनकरि धर्मकोपाव हीपावरहैगो सोऊअंतमें नष्टहोइगो २०।२४ स्कं०

तावलियुगमेलोभीदुराचारी निरदयी सुखिलराई लरनवारोदुरभगा वडीतस्नाजाकी शूद्रग्रोरदासनुखीयाजा
मे ऐसीप्रजाहोइगी २१ सत्वरजतमएतीनोंगुण ईश्वरकेआधीनतें कालकरिप्रेरितहु जिवनविशेप्रिहत देषी
येहे २२ जबमनवुद्धईद्रीयसतोगुणमोस्थितहोइ तवसतयुगजानीयेतें जासतगुणकरिज्ञान ग्रोरतपमेरुचहोइ २३

तस्मिन्लुब्धादुराचारानिर्दयाःशुष्कवैरिणः दुर्भगाभूरितर्षाश्चशूद्रदासोत्तराप्रजा २१ सत्वंरजस्त
मइतिदृश्यंतेपुरुषेगुणाः कालसंचोदितास्तेवैपरिवर्त्ततआत्मनि २२ प्रभावंतियदासत्वेमनोवुधी
द्रियाणिच तदाकृतयुगंविद्यात्ज्ञानेतपसियद्रुचिः २३ यदाकर्मस्वकाम्येषुभक्तिर्भवतिदेहिनां
तदात्रेतारजोवृत्तिरितिजानितिवुद्धिमत २४ यदालोभस्तुसंतोषोमानोदंभोथमत्सरः कर्मणांचा
पिकाम्यानंद्वापरंतद्रजस्तमः २५ यदामायानृतंतंद्रानिद्राहिंसाविषादनं शोकमोहौभयंदैन्यंसकलि
स्तामसस्मृताः २६

हेवुद्धिमान् जवसकामकर्मनविषैदेहधारीनकेसर्द्धाहो तवरजोगुणजुक्तत्रेताजुगजानिवेहे २४ जवलोभ
तृष्णागर्भदंभमत्सरता सकामकर्मनविषैंप्रीतीतवरजोगुणतमोगुणमुख्यतें जामेद्वापरजानिवेहे २५
जवकपटझूठीआलस्यनिद्राहिंसादुषशोकमोहभयदीनतायेहोइ तवतमोगुणहैमुख्यजामें ऐसौकलियुगजानौ २६।२८।३०

जाकलियुगके हैतकौ पाइकै जनमंदबुद्धि मंदभागी वडेआहारी कामी धनहीन होइगें और स्त्री असाध्वी
स्वेछाचारणी होंगी २७ जाकलियुगमे चोरनकरदेशउजाड़होंगे वेदपाखंडनकरिदुषित होंगें राजा प्रजानके
लूटनहारे होइगें ब्राह्मण स्त्री लंपट उदरपरायण होंगे २८ ब्रह्मचारी वृत और आचारकरिहीन होइगे॰

यस्मात्क्षुद्रदृशो मर्त्याः क्षुद्रभाग्या महाशनाः कामिनो वित्तहीनाश्च स्वैरिण्यश्च स्त्रियोऽसती २७
दस्यूत्कृष्टा जनपदा वेदाः पाषंडदूषिताः राजानश्च प्रजाभक्षाः शिश्नोदरपरा द्विजा २८ अव्र
ता वटवोऽशौचा भिक्षवश्च कुटुंबिनः तपस्विनो ग्रामवासा न्यासिनोत्यर्थलोलुपा २९ ह्रस्वका
या महाहारा भूर्यपत्या गतह्रियाः शश्वत्कटुकभाषिण्यश्चौर्यमायोरुसाहसाः ३० पणयिष्यंति वै क्षु
द्राः किराटाः कूटकारिणः अनापद्यपि मंस्यंते वार्तां साधुजुगुप्सिताम् ३१ पतिं त्यक्ष्यंति निर्द्रव्यं
भृत्या अप्यखिलोत्तमं भृत्यं विपन्नं पतयः कौलं गाश्चापयस्विनीः ३२।३६

गृहस्थ भिषारी होइगें तपसी ग्रामवासी होहिगें संन्यासी धनके लोभी होइगें २९ ठेंगने शरीरकी वहुत भोजन
करनहारी और वहुत संतान उपजावनहारी लज्जाकरहीन सदा कटुक बोले चोर ढीठ कपटन [illegible] साहसन
ऐसी स्त्री जाकलियुगमे होंगी॰ ३० तुछ किराता हिकपटी व्यौपारी होगें आपदाविना हीनि दनी वणको उत्तम मानें
गे ३१ धनहीन उत्तम पतिकौं स्त्री त्याग करेगी भृत्य स्वामी कौ त्याग करैंगे रोगी भए ऐसे संतनके भृत्य कौं स्वामी छोड़ि देंगे॰

कौ
पिता मैया सुहृद ज्ञात इनकौं छोडिकैं स्त्री के नातेवारेन सौं प्यार करैंगें और स्त्री जीवतन कौ पुत्र स्त्री मैया सा
रौ ता सौं मतो करैंगें दीन स्त्री लंपट ऐसे नर होइगें कलियुग मे ३३ सूद्र नपसी कौ भेष धरें जीवका करत प्रतिग्रह
लेइगें आप बडे धर्मी उत्तम आसन पै बैठिकें और नकौ धर्म कौ उपदेश करैंगें ३४ हे राजन् नित्य उद्विग्न है मन
जिनके अकाल और राजानके दंड करि पीडित अन्नकरि हीन पृथ्वी में अनावृष्टि के भय तें आतुर होंगे गो वस्त्र अन्न

पितृभ्रातृसुहृज्ज्ञातीन्हित्वा सौरतसौहृदा ननान्दृश्यालसंवाददीनाः स्त्रैणाः कलौ नराः ३३ शूद्रा
प्रतिग्रहीष्यंति तपोवेषोपजीविनो धर्मं वक्ष्यंत्यधर्मज्ञः अधिरुह्योत्तमासनं ३४ नित्यमुद्विग्नम
नसो नित्य दुर्भिक्षकर्षिताः निरन्ने भूतले राजन्ननावृष्टिभयातुराः ३५ कलौ काकिलकेप्यर्थे
विगृह्य त्यक्तसौहृदाः त्यक्ष्यंति प्रियान्प्राणान् हनिष्यंति स्वकानपि ३६ नरिक्षंति मनुजा
स्थविरौ पितरावपि पुत्रान् सर्वार्थकुशलान् क्षुद्राः शिश्नोदरंभरा ३७

षणकरहीन षान पान स्नान सेन स्त्री संग इन स्नषन करहीन पिसाच से दीषें ऐसी प्रजा कलियुग मैं हो
गी ३५ ता कलियुग मै वीष कौडीन के लीये सोहृद छोडिकै लराई करि आपुस में मारें मरेंगे ३६ ता कलियुग में
जन वृद्ध माता पिता कौं पालन न करैंगें सब अर्थन मे निपुन ऐसे पुत्रहू कौ रक्षा न करैंगे केवल स्त्री संग
कें उदर परायण ऐसी क्षुद्र प्रजा होगी ३७

हे राजन् सब जगत के परमगुरु और त्रिलोकी के नाथ ब्रह्मादिकन करि पूजियें चरणकमल जिनके ऐसे
भगवान् अच्युत कों कलियुग में मनुष्यधर्मजन पाखंडन करि दूषित है बुद्धि तें पूजन न करेंगे ३८ मरती बिरीयां
आतुर हुये अथवा ऊंचे तें गिरतें मारग में खिसलतें विवस हुये जिन कों नाम लेतें ही पुरुष कर्मबंधन तें छू-

कलौ न राजन् जगतां परं गुरुं त्रैलोक्यनाथानतपादपंकजं प्रायेण मर्त्या भगवंतमच्युतं यक्ष्यंति
पाखंडिविभिन्नचेतसः ३८ यन्नामधेयं म्रियमाण आतुरः पतन् स्खलन् वा विवशो गृणन् पुमा-
न् विमुक्तकर्मार्गल उत्तमां गतिं प्राप्नोति यक्ष्यंति न तं कलौ जनाः ३९ पुंसां कलिकृतान् दोषान्
द्रव्यदेशात्मसंभवान् सर्वान् हरति चित्तस्थो भगवान् पुरुषोत्तमः ४० श्रुतः संकीर्तितो ध्या-
तः पूजितश्चादृतोपि वा नृणां धुनोति भगवान् हृत्स्थो जन्मायुताशुभं पुरुषोत्तमः ४१

टि के उत्तम गति कों प्राप्ति होइ है ऐसे तिन भगवान कों कलियुग में जन पूजन न करेंगे ३९ द्रव्य तें देस तें
शरीर तें भये जु कलियुग के दोष तिन सबन कों पुरुषोत्तम भगवान् पुरुष के चित्त में स्थित होइ कें हरलें
करेंगे ४० श्रवण कीर्तन पूजन ध्यान आदर करत मात्र ही भगवान् जनन के हृदे में स्थित होइ कें दश हजार वर्ष के अ-
शुभन कों दूरि करेंगे ४१

जैसै आग्नि हेम मे स्थित होइकैं और धातुन के मिले हरे वर्णकौं दूरि करैं ऐसैंही विष्णु जोगीन के हृदय मै स्थित होइकैं सब अशुभ वासनान कौं दूरि करैगें ४२ विद्या करीयें प्रान देव कौ उपसमान तप प्राणायाम मित्रता तीर्थ स्नान ब्रत दान तप इन सब न करि तैसो मन न शुद्ध न होई जैसो अनंत भगवान् हृदय मैं स्थित भए तें मन शुद्धी होइ है ४३

यथा हेम्नि स्थितो वह्निर्दुर्वर्णं हंति धातुजं एवमात्मगतो विष्णु योगिनामशुभाशयन् ४२ विद्या
तपःप्राणनिरोधमैत्रीतीर्थाभिषेकव्रतदानजप्यैः नात्यंतिशुद्धिं लभतेऽन्तरात्मा यथा हृदिस्थे
भगवत्यनंते ४३ तस्मात्सर्वात्मना राजन् हृदस्थं कुरु केसवं म्रियमाणो ह्यवहितस्ततो या
तिपरां गतिम् ४४ म्रियमाणैरभिध्येयो भगवान्परमेश्वरः आत्मभावं नयत्यंग सर्वात्मा
सर्वसंश्रयः ४५

तातें हे राजन् म्रियमाण तुम सावधान होइकैं सर्व प्रकार करिकैं सब कौं हृदय मे धारौ तदनंतर परम गति कौ प्राप्ति होइगे ४४ और सब न के आश्रय सबन के आत्मा ऐसे परमेश्वर भगवान् कौं म्रियमाण मनुष्य करि जो भली भांत ध्याइयें तो अपन पै विषें तिन कौं भाव उपजावे ४५ हरे कृष्णाय नमो नमः

हेराजन् कलिदोषनकीषांनहैं परंतुयामें एक बडोगुणहै जातेंश्रीकृष्णकोकीर्तनकरतमात्रतेंबंधनतेंछुटिकैतिनतौश्रीकृष्णकौंजायप्राप्तहोइहैं ४६ सतयुगमैंविष्णुकोध्यानकरेतेंजोगतिफलहोई त्रेतामेंजज्ञनकरिजजनकरेतेंजोफलहोइ द्वापरमेंपरिचर्याकरेंजोफलहोइ तिनसबनकौफल कलियुगमें

कलेर्दोषनिधेराजन्नस्तिह्येकोमहान्गुणः कीर्तनादेवकृष्णस्यमुक्तबंधःपरंव्रजेत् ४६
कृतेयद्ध्यायतोविष्णुंत्रेतायांयजतोमखैः द्वापरेपरिचर्यायांकलौतद्धरिकीर्तनात् ४७ इति
श्रीमद्भागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेयुगवर्णनंनामतृतीयोध्यायः ३ श्रीशुकउवाच ।
कालस्तेपरमाण्वादिर्द्विपरार्द्धावधिर्नृपः कथितोयुगमानंचशृणुकल्पलयावपि । १

हरिकौकीर्तनतेंप्राप्तिहोइहै ४७ श्रीइतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेभाषाटीकायांतृतीयस्कंधेनामतृतीयोध्यायः ३ श्रीशुकदेवजीकहैंहैं हेनृपपरमानतेंलेद्विपरार्द्धताईकालतुमसोंकहिआएहैं जुगनकोपरमानहूंकहिआएहैं अबकल्पप्रलयकोपरमानकहैंतुमसावधानह्वैकैसुनो १

हेप्रजानकेपालकहजारचोकरीजुगकौजोब्रह्माकौदिनसोईकल्पकहावेहै जाकल्पमेंचोदहमनुहोहै २ तदनं
तरप्रलैहहजारचोकरीकीहोइहै सोब्रह्माकीरात्रिहै जारात्रीविषेंयालोकनकीप्रलैयहोजाइहै ३ इहतानैमित्तकप्रलैकहीहै
जाप्रलयमेंविश्वस्रष्टाहरिब्रह्मासहितयाविश्वकोंआपमेंलेकेंअनंतसिज्यामेंसोइरहेहैं ४ परमेष्ठीब्रह्माकेद्वीपरार्द्ध

चतुर्युगसहस्रंतुब्रह्मणोदिनमुच्यते सकल्पोयत्रमनवश्चतुर्दशविशांपते २ तदंतेप्रलयस्तावन्
ब्राह्मीरात्रिरुदाहृता त्रयोलोकाइमेयत्रकल्पंतेप्रलयायहि ३ एषनैमित्तकःप्रोक्तःप्रलयोयत्रविश्व
सृक् शेतेऽनंतासनोविश्वमात्मसात्कृत्यचात्मभूः ४ द्विपरार्द्धेत्वतिक्रांतेब्रह्मणःपरमेष्ठिनःतदा
प्रकृतयःसप्तकल्पंतेप्रलयायवै ५ एषप्राकृतिकोराजन्प्रलयोयत्रलीयते अंडकोशस्तुसंघातो
विघातउपसादिते ६ पर्जन्यःशतवर्षाणिभूमौराजन्नवर्षति तदानिरन्नेह्यन्योन्यंभक्ष्यमाणाःक्षु
धार्दिताः क्षयंयास्यंतिशनकैःकालेनोपद्रुताःप्रजाः ७

कौजबअंतहोइहै तबमहत्तत्वअहंकारपंचतत्वतन्मात्राइनसातोंप्रकृतनकीप्रलयहोहै ५ हेराजन् इहप्रकृति
प्रलैकही जाप्रलयमेंब्रह्मांडसबलीनहोजायहै ६ हेराजन् सोमेघसोवर्षतांईनवर्षे तबअन्नहीनभूमिभए
तें क्षुधासेपीडितह्वे परस्परभक्षणकरेंतेकालआधिनप्रजाहोलेहोलेछयकोंप्राप्तहोगी ७

भा॰ टी॰ तदनंतर प्रलयकालकौ सूर्य घोर किरननकरि समुद्र देह भूमि इनकेरस कौं खेंचलेगो छोडेगो नही ८ तदनंत
५५ र संकर्षणके मुखमें स्थित प्रलयकी अग्निपवनके वेगसों ऊंचे पाताल मंडलकौ सातों लोकपालनसहित जारि
१४ वैगी ९ तदनंतर ऊपर नीचें सब ओर अग्नि ओर सूर्यकी ज्वालासों जरके यह ब्रह्मांड षोभित होगो जैसें जरगौ

समुद्रदेहभौमं रसं सांवर्त्तको रविः। रश्मिभिः पिबते घोरैः सर्वं नैव विमुंचति ८ ततः संवर्त्तको वह्निः
संकर्षणमुखोत्थितः। दहत्यनिलवेगोत्थः शून्यान्भूविवरानथ ९ उपर्यधः समंतात्तु शिखाभिर्व
ह्निसूर्ययोः दह्यमानं विभात्यंडं दग्धगोमयपिंडवत् १० ततः प्रचंडपवनो वर्षाणामधिकं शतं परिसं
वर्त्तको वाति धूम्रखं रजसावृतं ११ ततो मेघकुलान्यंग चित्रवर्णान्यनेकशः शतं वर्षाणि व
र्षंति नदंति रभसस्वनैः १२

उपराषोभित होइ १० तदनंतर प्रलयकालकी अग्नि प्रचंड पवन कछुक अधिक सौ वर्षताई चलैगो ता
ससे रजकरि प्रबल आकास धूम्रवरन होगो ११ हे अंग तदनंतर विचित्र वर्ण अनेक मेघ तीव्र गर्जनाश
ब्द करत सौ वर्षताई वर्षेगो तापीछें इह ब्रह्मांड फूटि टूटकें सब विश्व जलमय होइगो १२

तासमैभूमिकौगंधगुणजलग्रस्तभयौसोभूमिकंधनव्है होइकैं प्रलयकौप्राप्तिहोइगौ १३ जलकौरसगुण
तेजतत्वनेग्रसोसोजलनीरसहोइकैं प्रलइकौप्राप्तिहोइगौ १४ तेजकौरूपगुणवायग्रसलेइगौ सोतेजरूपहीन ज
होइकैपवनमेलीनहोइगौ पवनकौस्परसगुणआकासग्रसलेइगौ सोपवनगुणहीनहोइकैंआकासमैंली
नहोइगौ हेराजन् तदनंतरआकासकौशब्दगुणताकौ तामसअहंकारग्रसलेइगौ सोआकासगुणहीनहोइ

ततोंडकोदकंविश्वंब्रह्मांडविवरांतरं १३ तदाभूमेर्गंधगुणंग्रसंत्यापउदप्लवे ग्रस्तगंधातुपृथवी
प्रलयत्वायकल्पते १४ अपांरसमथोतेजस्तालीयंतेऽथनीरसा ग्रसतेतेजसोरूपंवायुस्तद्रहितं
तदा १५ लीयतेचानिलेतेजोवायोःखंग्रसतेगुणम् सवैविशतखंराजन्ततश्चनभसोगुणं१६
सब्दंरसंग्रसतभूतानिर्नभस्तमनुलीयते तेजसश्चेंद्रियाण्यंग देवावैकारकोगुणै १७ महान्
ग्रसत्यहंकारंगुणाःसत्वादयश्चतं ग्रसतेव्याकृतंराजन्गुणान्कालेनचोदितम् १८

केतामसअहंकारमेलीनहोइगौ राजसअहंकारचातिनसहितइंद्रीयनकौग्रसलेइगौ सात्वकअहंकारइंद्री
यनकेदेवतानकौग्रसलेइगौ १७ हेराजन् अहंकारकौमहतत्वकौ ~~अहंकारइंद्रीयनकेदेवतानकौ~~
सत्वादिकतीनौगुणग्रसैगे तिनगुणनकौकालेकरप्रेरितहूमायाग्रसलेगी १८

भा॰ द्वा॰ एकदिना कालके अंगन करि माया या वढन होइवैं जानें सो माया या आदि अंत करि हीन तें अव्यक्त तें नित्य है एकर

१५ रसतें जगत कारन है १७ तहां वानी मन सत रज तम तीनो गुण महतत्त्वादिक नहीं है और प्राण बुद्धि इंद्री नके देवता विश्वकी रचना यह नहीं है जाग्रत स्वप्न सुषुप्त आकाश पवन अग्नि जल भूमि सूर्ज एहु नहीं सुषुप्त सून्यसी महा अतर्क्य मूल पद ताको कवि सब अनंत कहै है १८ प्राकृत प्रलय इह नहीं जा प्रलै मैं पुरुष प्रकृति

न तस्य कालावयवैः परिनामादयो गुणाः अनाद्यनंतमव्यक्तं नित्यंकारणमव्ययं १७ न यत्र वाचो न मनो न सत्त्वं तमो रजो वा महदादयोऽमी न प्राणबुद्धींद्रियदेवता न वा सन्निवेशः खलु लोककल्पः न स्वप्नजाग्रन्न च तत्सुषुप्तं न खं जलं भूरनिलोग्निरर्कः सुसुप्तवच्छून्यवदप्रतर्क्यं तन्मूलभूतं पदमामनंति १८ लयः प्राकृतिको ह्येष पुरुषाव्यक्तयोर्यदा शक्तयः संप्रलीयंते विवसा कालविद्रुता १९ बुद्धींद्रियार्थरूपेण ज्ञानं भाति तदाश्रयम् दृश्यत्वाव्यतिरेकाभ्यां माद्यंतवदवस्तु यत् २० दीपश्चक्षुश्च रूपं च ज्योतिषो न पृथग्भवेत् एवं धीः खानि मात्राश्च न स्युरन्यतमादृतात् २१

की शक्ती सव कालकर प्रेरत विवस है कै लीन होते १९ अव आत्यंतक प्रलै कहै है विवस बुद्धि इंद्री य विषै रूप इ नसव न को आश्रय ज्ञान ही भासमान है जाते अन्वय व्यतिरेक करि जो आदि अंत वान है सो सव अवस्तु है २० जैसे दीयो नेत्र रूप ये सव ज्योति तें न्यारें नहीं है ऐसें ही बुद्धि इंद्री य तन्मात्रा ब्रह्म तें न्यारे नहीं सो ब्रह्म सवतें न्यारो है २१

देशाजन्य जाग्रतस्वप्नसुषुप्तएतीन्योंवुद्धितीकीवृत्तितें ग्रह्मब्रह्मविषेयह सवनानात्वमायामात्रहीहै २२ जैसें मेघआकासविषें सववहतेहोति सकूनहोई एसेंहीब्रह्मविषैइहजगतसववहतोहोति सवहनहीं जातेंजेईश्वरतें २३
सकअवयवीजजगतमेंअवयव एककारन जोब्र सोईसत्यहें जातेंअवयवीजोजगत ताजगतविनाहअवयवसो ब्रह्मविराजमानहें जेसेंपटवीजनाहतंतुविराजमानहें २४ कार्जकारणमिलतेंजोकछूहोई सोभ्रमतेहे

बुद्धेर्जाग्रतं स्वप्नं सुषुप्तिरिति चोच्यते मायामात्रमिदं राजन् नानात्वं प्रत्यगात्मनि: २२ यथा जलधरा व्योम्नि भवन्ति न भवन्ति च ब्रह्मणीदं तथा विश्वमवयव्युदयाऽपयात् २३ सत्यं ह्यवयवा: प्रोक्ता: सर्वावयविनामिह विनार्थेन प्रतीयेरन् पटस्येवांग तंतव: २४ यत्सामान्यविशेषाभ्यामुपलभ्येत स भ्रम: अन्योन्यापाश्रयात्सर्वमाद्यन्तवदवस्तु यत् २५ विकारः ख्यायमानोपि प्रत्यगात्मानमन्तरा: न निरूप्योऽस्त्याः एउरपि स्याच्चित्समयात्मवत् २६ नहि सत्यस्य नानात्वमविद्वान्यदि मन्यते नानात्वं छिद्रयोर्यद्वत् ज्योतिषोर्वातयोरिव: २७

जातेंएस्पर आश्रयतें आदिअंतवान जोकछूहें सोसव अवस्तुहें २५ विकारमयपत सवजगत प्रकासमानहूहे परंतुब्रह्मविनाप्रकाशमान नहीहें औरजोंब्रह्मविनाप्रकाशतहोइतोंसोब्रह्महीहे २६ एकसत्वब्रह्मकेअनेकपनहीं रजोअतकोई अनेकत्वमानें तोजेसेंवुहोआकासअरुघटाकासओरजेसेंआकासकोरूपओरजलकोरूपएसबउपाधरी
ल

भा. द्वा. जैसेसुवर्णमनुष्यकेव्यौंहारादिविषें कडाकुंडलादिरूपनकरिअनेकभांतिभाषेहैं ऐसेहीभगवान्अधोक्षज
९६ ननकौलौकिकवैदिकवानीनकरिअनेकभांतिभासेहैं २८ जैसेसूर्यतेंउपज्यौऔरसूर्यहीकरप्रकाशमयजोमे
घसोतासूर्यकेअंसरूपचक्षुनकोआछादनकरैहै ऐसेहीब्रह्मतेंउपज्योऔरब्रह्महीकरप्रकाश्योजोअहंकारसोब्रह्म
केअंसजीवकौतावब्रह्मकेदर्शनकोआवर्णकरै २९ सूर्यतेंउपजेमेघजबविदीर्णहोहिंतबचक्षुसूर्यकौदेखै ऐ

यथाहिरंण्यंबहुधासमियतेनृभिःक्रियाभिर्व्यवहारवर्त्मसु एवंवचोभिर्भगवानधोक्षजोव्याख्यायतेलौ
किकवैदिकैर्जनैः २८ यथाघनोऽर्कप्रभवोऽर्कदर्शितोह्यर्कांशभूतस्यचचक्षुषस्तमः एवंत्वहंब्रह्मगु
णस्तदीक्षितोब्रह्मांशकस्यात्मनआत्मबंधनः २९ घनोयदार्कप्रभवोविदीर्यतेचक्षुःस्वरूपंरविमी
त क्षतेतदा यदाह्यहंकारउपाधिरात्मनोजिज्ञासयानश्यतितर्ह्यनुस्मरेत् ३० यदैवमेतेनविवेकहेतिना
मायामयाहंकरणात्मबंधनम् छित्वाच्युतात्मानुभवोवतिष्ठते तमाहुरात्यंतिकमंगसंप्लवं ३१ नित्यदास
र्वभूतानांब्रह्मादीनांपरंतपः उत्पत्तिप्रलयावेकेसूक्ष्मज्ञाःसंप्रचक्षते ३२

सेहीअहंकाररूपउपाधीजबतत्वविचारकरिनष्टहोइतबयहजीवअनेकब्रह्मस्वरूपकूंदेखै ३० याभांतिअवि
वेकरूपखड्गकरिमायामयअहंकारआत्माकेबंधनकोकाटिकेजबअच्युतब्रह्मकोअनुभोगकरिस्थितहोयतब
ताकौकविसबआत्यंतिकप्रलयकहैहैं ३१ हेवैरीनकौतापदेनहारेसूक्ष्मवेताकोईकब्रह्मादिकसबप्राणीन
कीउत्पत्तिप्रलयकोंकहैहैं ३२

कालनदीके प्रवाहवेगकरि नित्यतारिहैं आयुर्बलजिनकी ऐसें देहादिकनकी अवस्था नित्य जन्म मरणको
कारण जैसें नदीको प्रवाह और दीयाकी ज्वालाकी अवस्था ३३ आदिअंतकरिहीन ईश्वरकी मूर्ति ऐसें कालकरि
होहि जो प्राणीनकी सूक्ष्म अवस्था सो नहीं देषें जैसें आकासमैं नक्षत्रादिकनकी चाल लखीन जाय ३४ नित्य
नैमित्यक प्राकृत आत्यंतक ए चारौ प्रलैं तुमसों कही और कालकी गति है कही ३५ हे राजन कौरवनमें श्रेष्ठ जगत

कालश्रोतोजवेनाशु ह्रियमाणस्य नित्यदा परिणामिनामवस्थास्ता जन्मप्रलयहेतवः ३३ अनाद्यं
तवतानेन कालेनेश्वरमूर्त्तिना अवस्था नैव दृस्यंते वियति ज्योतिषामिव ३४ नित्यो नैमित्यकश्चैव त
था प्राकृतिको लयाः आत्यंतकश्च कथिता कालस्य गतिरीदृसी एताः कुरुश्रेष्ठ जगद्विधातुर्नाराय
णस्याखिलसत्वधाम्ना लीलाकथास्ते कथितास्समासतः कार्त्स्न्येन नाजोऽप्यभिधातुमीशः ३६
संसारसिंधुमतिदुस्तरमुत्तितीर्षोर्नान्यः प्लवो भगवतः पुरुषोत्तमस्य लीलाकथारसनिषेवण
मंतरेण पुंसो भवेद्विविधदुःखदवार्दितस्य ३७

प्रा करता सर्वप्राणीनके आश्रय ऐसे नारायणकी यह लीला कथा संक्षेप तुमसों कही सबकहिवेकों ब्रह्माहू समर्थ नहीं है ३६
जे अनेक दुःखरूपी अग्निकरि पीडित या संसारसमुद्रको तरयो चाहें तिनको भगवान पुरुषोत्तमकी लीला
कथासेवा बिना और नौका नहीं है यातें या भवसागरको यह जीव पार है जाय ३७

भा० द्वा० अथ अथ श्रीनारायण रिषि: इह पुराण संहिता पहलैं नारदजी कौं कहत भये सो नारदजी श्रीव्यासदेवजी सौं कहत भए हे
१७ महाराज सो भगवान व्यास नें प्रीत ह्वै कें सब देवन कौं जु त्यनु इह भागवत संहिता मो सौं कहत भये २८ हे कौरवनमें श्रेष्ठ
नैमिसारण्य क्षेत्र बिषें वर्त्तमान हते कहनहारे श्रीसनकादि रिषि जब पूछेंगे तब सूतजी तिन रिषिन सौं इह भागवत कहेंगे २९

पुराणसंहितामेतामृषिर्नारायणोऽव्ययः नारदाय पुरा प्राह कृष्णद्वैपायनाय सः २८ स वै मह्यं महाराज भगवान्
बादरायणः इमां भागवतः प्रीतः संहितां वेदसंमितां २९ इमां वक्ष्यत्यसौ सूत ऋषिभ्यो नैमिषालये दीर्घसत्रे कु
रुश्रेष्ठ संपृष्टः शौनकादिभिः ३० इति श्रीभागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे चतुर्थोऽध्यायः ४ श्रीशुक उवाच: अत्रा
नुवर्ण्यतेऽभीक्ष्णं विश्वात्मा भगवान् हरिः यस्य प्रसादजो ब्रह्मा रुद्रः क्रोधसमुद्भवः १ त्वं तु राजन्मरिष्येति पशु
बुद्धिमिमां जहि न जातः प्रागभूतोऽद्य देहवत्त्वं न नंक्ष्यसि २ न भविष्यसि भूत्वा त्वं पुत्रपौत्रादिरूपवान् बी
जांकुरवद्देहादेर्व्यतिरिक्तो यथानलः ३

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे चतुर्थोऽध्यायः ४ श्रीशुकदेवजी कहत हैं हे राजन् या भागवत विषें निरंतर
भगवान् विश्वात्मा हरी कौं वर्णन है जा हरि के रजोगुण तें ब्रह्मा भयो तमोगुण तें रुद्र भयो १ हे राजन् तुम मरैंगे इह पशुबुद्धि ५
छोड़ि देउ या देह सौं न तुम पहिलें उपजे न नसौगे २ पुत्रपौत्र रूप ह्वै पुनि तुम न होउगे बीज अंकुर सें जा तें तुम देह तें
न्यारे हौ जैसें अग्नी काष्ठ तें न्यारी है ३

जैसें कोई सपनो स्वप्नविषें मुंड कटैबो देषें जैसें ही जगत मैं देह के मरवे को देखें तातें ये सब आत्माविषें नमरें कातें तें
आत्मा नित्य अजन्मा है ४ जैसें घट के फूटे तें घट के आकाश पायहिलें बड़े आकाश को जाइ मिले असे ही देह नष्ट भए तें जीव ब्रह्म
निर्मल मैं जाय प्राप्ति होहै ५ आत्मा के देह गुण कर्म मन को मन ही सृजै मन को माया सृजै ना ही तें जीव को संसार है ६

स्वप्ने यथा शिरश्छेदं पंचत्वाद्यात्मनः स्वयं यस्मात्पश्यति देहस्य तत आत्मा ह्यजोऽमरः ४ घटे भिन्ने यथाकाश
आकाशः स्याद्यथा पुरा एवं देहे मृते जीवो ब्रह्म संपद्यते पुनः ५ मनः सृजति वै देहान् गुणान् कर्माणि चात्मनः
तन्मनः सृजते माया ततो जीवस्य संसृतिः ६ स्नेहाऽधिष्ठानवर्त्यग्नि[1]संयोगो यावदीयते ततो दीपस्य दीपत्व
मेवं देहकृतो भवः ७ रजसत्वतमोवृत्त्या जायतेऽथ विनश्यति न तत्रात्मा स्वयंज्योतिर्यो व्यक्ताव्यक्तयोः परः
आकाश इव चाधारो ध्रुवोऽनंतोपमस्ततः ८ एवमात्मानमात्मस्थमात्मनैवामृश प्रभो बुध्यानुमान
गर्भिण्या वासुदेवानुचिंतया ९

[1] अग्नि:

जवताईं तेल सरवा बाती इन को संयोग रहैं तवताईं ही बालतावें असें ही जवताईं आवे पूर्व देह को संजोग है
तवताईं संसार है ७ इत देह ही सत रज तम गुणन करि जन्मैं मरैं आत्मा न जन्मैं न मरैं जातें स्थूल सूक्ष्म दोउ देह
नतें परें स्वयंप्रकाश देहादिकों आश्रय तैं नित्य है निर्विकार है अनंत है निरुपम है ८ हे प्रभो प्रत्यक्ष अनुमान ज्ञा
बुद्धि करि वासुदेव को चिंतवन करि जैसें शरीर मैं स्थित ऐसें ब्रह्म आत्मा को मन कर विचार करै ९ श्री हरे नमः

मृत्युजौंमृत्युईस्वरतुमकौ तवब्राह्मनएजीवां गीकरप्रेरितहूं तक्षकनजरावैगो ऽ ग्रोरमृत्युहूनजरावेगी १०

 जोरमरैं सोईपरमधामब्रह्मतैं सोईहमहैं इहविचारकरतेनिरउपाध ब्रह्मविषैं तुमअपनेपेजोंराषिकैं ११ विष

उगलतमुखनकरिअपनेपावकौ डाठतलातलकसपनोंनदेषैगो नयासरीरकौंदेखैगो ऽ ग्रोर ऽ आत्मातेन्यारेविश्वकौं

नदेखोगे १३ हेतातहेनृप विश्वकेआत्माहरिकोचरित्रतुमजोतकछूपूछ्यो सोहमतुमसोंकह्यो ऽ अवतुमग्रों

नोद्दितोब्रह्मवाक्येनानत्वां धक्ष्यतितक्षकः मृत्यवोनोपधक्ष्यंतिमृत्यूनांमृत्युमीश्वरः १० ऽ अहंब्रह्म

परंधामब्रह्माहंपरमंपदं एवंसमीक्ष्यचात्मानमात्मन्याधायनिष्कले ११ दशंतंतक्षकंपादेलेलि

हांनविषाननैः नद्रक्ष्यसिसरीरंचंविश्वंचपृथगात्मनः १२ एतत्तेकथितंतातयथात्मापृष्टवांन्हरिः

विश्वात्मनश्चेष्टांकिंनृपःश्रोतुमिच्छसि १३ इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेपंचमो

ध्यायः ५ सूतउवाचः एतंन्निसम्यमुनिनाभिहितंपरीक्षित् व्या[illegible]त्मजेननिखिलात्मदृशासमेनः

तत्पादपद्ममुपसृत्यनतेनमूर्ध्नाबद्धांजलिस्तमिदमाहसविष्णुरातः १

रकहातुम्हेंकहाकहेसोग्रोरकहौं १३ इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेटीकायांद्वादश ऽ पंचमोध्यायः ५ सूतजी

कहतेहे येसोनकहो सबजीवनिकोजाननहारेनिर्वाणपरायणग्रेसेव्यासजीकेपुत्रमुनिग्रेवचनसुनकैविं

ष्णुरातपरीक्षितनम्रमाथोकरतिनमुनिकेचरनकमलको स्परसकैहाथजोरकैबोलतभयो १

हे मुने करुणावान् आपने हमकौं बडो अनुग्रह कीयो जाते आदि अंत करि हीन ऐसे साक्षात हरि कों हमकुं सु-
नायो ताते हम सिद्ध भये २ तापन करि तप्त ऐसे प्राणीन कों अज्ञ तिन विषै हे मनजीन कों ऐसे महात्मन कों जो अनुग्रह
करवो ताकौ अद्भुत नहीं मानें हैं ऐसे हे महात्म कृपाल हो हैं याते ३ यह पुराण संहिता तुम तें हम सुनि संहिता वि-
षे उत्तमश्लोक भगवान कौ निरंतर वर्णन है ४ हे भगवान् तक्षकादि मृत्यु तें हम नहीं डरपें जाते तुम करि दिषा-

राजोवाच। सिद्धोऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि भवता करुणात्मना श्रावितो यच्च मे साक्षादनादिनिधनो हरिः २
ख नात्यद्भुतमहं मन्ये महतामच्युतात्मनां अज्ञेषु तापतप्तेषु भूतेषु यदनुग्रहः ३ पुराणसंहितामेता
मश्रौष्म भवतो वयं यस्यां खलूत्तमश्लोको भगवाननुवर्ण्यते ४ भगवंस्तक्षकादिभ्यो मृत्यु
भ्यो न बिभेम्यहं प्रविष्टो ब्रह्मनिर्वाणमभयं दर्शितं त्वया ५ अनुजानीहि मां ब्रह्मन् वाचं यच्छाम्य
धोक्षजे मुक्तकामाशयं चेतः प्रवेश्य विसृजाम्यसून् ६ अज्ञानं च निरस्तं मे ज्ञानविज्ञाननिष्ठया
भवता दर्शितं क्षेमं परं भगवतः पदं ७ सूत उवाच। इत्युक्तस्तमनुज्ञाप्य भगवान्बादरायणी जगाम भि
क्षुभिः साकं नरदेवेन पूजितः ८

यो निरभय परमानंद रूप ऐसे ब्रह्म कौं हम प्राप्त भए हे ब्रह्मन् अब मोकौं आज्ञा देउ तौ वानी कौ रोकि कें निष्का-
म चित्त कौं अधोक्षज विषें राषि कें प्राण कौ छोडुं ६ ज्ञान विज्ञान की निष्ठा करि हमारो अज्ञान गयो जाते मं-
गलरूप भगवान को परमपद आपने हम कौं दिषायौ ७ परिक्षित कौं यह वचन सुनि कें भगवान् बादरायणज् प
राजा करि पूजित हुते तिन सों आज्ञा मागी कें मुनिन सहित चलत भये ८

भा॰द्वा॰ तदनंतरराजऋषिपरिहतबुद्धिकरिमनकौंभगवान्मेराषिकैंतिनहीकौध्यानकरतौंनिश्चलदेहैरहतभयो
१६ जैसेंदूठदृखतीसीनाईगंगाकेकूलमेंएकेप्रकारेजिनकें ऐसेंकुशासनविषैंउत्तरकौंमुखकरबैठिकेंकाटिगएहैं
सबसंसयजाके निःसंगहै माहाजोगीपरब्रह्मविषैंतदाकारहोतभयो ९ हेविप्रहोत्रोध्यौब्राह्मणकेपुत्रकरप्रेरित
हैतसकराजाकोंकाटिवेकीइछाकरिचलतमार्गमेंतक्षकजीकौदेखतभयो १० विडरकरनिहारेताकौतक्षककौंध

परिक्षिदपिराजर्षिरात्मन्यात्मानमात्मना समाधायपरंदध्यावस्पंदासुर्यथातरुः प्राक्कूलेबर्हिष्यासी
नोगंगाकूलउदङ्मुखः ब्रह्मभूतोमहायोगीनिःसंगश्छिन्नसंशयः ९ तक्षकःप्रहितोविप्रा
क्रुद्धेनद्विजसूनुना हंतुकामोनृपंगच्छन्ददर्शपथिकश्यपम् १० तंतर्पयित्वाद्रविणैर्निवर्त्यविष
हारिणम् द्विजरूपप्रतिच्छन्नःकामरूपोदशन्नृपम् ११ ब्रह्मभूतस्यराजर्षेर्देहोहिगरलाग्निना बभूवभस्मसात्सद्यःपश्यतांसर्वदेहिनाम् १२ हाहाकारोमहानासीद्भुविखेदिक्षुसर्वतः
विस्मिताह्यभवन्सर्वेदेवासुरनरादयः १३

नतरसकरिनिवृत्तिकरिकैंइछारूपीसोतक्षकब्राह्मणकौंरूपधरिआयकैंछिपायकैंराजाकौंकाटतभयो ११
२ ज ब्रह्मस्वरूपऐसेंराजर्षिकीदेहविषकीअग्निकरिसबनकेदेखतवेगहीभस्महोतभयो १२ तासमेंपृथ्वीआ
काशदिशासबओरतेंहाहाकारहोतभयो देवताअसुरमनुष्यादिकसबआश्चर्यजुक्तहोतभए १३ श्री १८

देवतानकीदुंदभीवाजतभई गंधर्वअपसरा गावतभई धन्यधन्य कहदेवताफुलनकीवर्षाकरतभऐं १४
जन्मेजयतक्षकरि अपनोपिताभक्ष्यौं सुनिकैंक्रोधयुक्त ह्वैकें ब्राह्मणनकोबुलायकैं नानासर्पसत्रयज्ञविषैंसर्प
नकोहोमकरावतभयो १५ तायज्ञकीप्रज्वलताअग्निमैंवडेवडेसर्पनकुजरत देखिकैंतक्षक भयसोंव्या
कुलह्वैइंद्रकीसरणजातभयो १६ परीक्षतकोपुत्रराजाजन्मेजय तहांतक्षककोनदेखिकैंब्राह्मणसोंवोलो

देवदुंदभयोनेदुगंधर्वाप्सरसोजगु ववृषुःपुष्पवर्षाणिविबुधाःसाधुवादिनः १४ जन्मेजयस्व
पितरंश्रुत्वातक्षकभक्षितं यथाजुहावसंक्रुद्धःसर्पानसत्रेसहद्विजैः १५ सर्पसत्रेसमिद्धाग्नौदह्य
मानानमहोरगान् दृष्ट्वेंद्रभयसंविग्नास्तक्षकःसरणंययौ १६ अपश्यंस्तक्षकंतत्रराजापरीक्षितो
द्विजान् उवाचतक्षकःकस्मान् नदह्येतोरगाधमाः १७ तंगोपायतिराजेंद्रसक्रःसरणमागतं तेन
संस्तंभितःसर्पास्तस्मान्नाग्नौपतत्यसौ १८ परीक्षितइतीश्रुत्वाप्राहर्त्विजउदारधीःसहेंद्रस्तक्षकोवि

सर्पनमेंअधमसोतक्षकयहांआयकैंकाहेमेंनतीजरैहैं १७ तदनंतरब्राह्मणसववोले हेनरेंद्रसरणाग
ततक्षककीइंद्ररक्षाकरैहैं इंद्रनेंराख्योतामैंसोतक्षकअग्निमैंनतीपरैं १८ ब्राह्मणनकोइहवचनसुनि
कैं उदारवुद्धराजातिनब्राह्मणनसौंवोलोंब्राह्मणसोइंद्रसहित् जानतक्षककौंक्योंनतीअग्निमैंडारदेउ ॥
कताईतनीसामर्थतुमेंनतीहैं १९

भा॰द्वा॰ यह सुनि ब्राह्मणन सब इंद्र सहित ता तक्षक कों होम करत भये तक्षक इंद्र सहित वेगसों या अग्नि में आय परें
२० इसी आहुत मंत्र पढत भये २० ब्राह्मणन के इन आक्षेप वचन करि इंद्र स्थानतें चलायमान हैं कैं विमान औ
और तक्षक सहित भ्रमत भये २१ विमान और तक्षक सहित आकास तें गिरतें ता इंद्र को देषि कैं अंगिरा को पु

तच्छ्रुत्वाजहुर्विप्राः सहेंद्रंतक्षकंमखे तक्षकाऽऽशुपतस्वेहसहेंद्रेणमरुत्वता २० इतीब्रह्मोदिता
क्षेपैःस्थानादिंद्रःप्रचालितः बभूवसंभ्रांतमतिःसविमानःसतक्षकः २१ तंपतंतंविमानेनसह
तक्षकमंबरात् विलोक्यांगिरसःप्राहराजानंतंबृहस्पतिः २२ नैषत्वयामनुष्येंद्रवधमर्हतिसर्पराट्
अनेनपीतममृतंमथवाअजरामरः २३ जीवितंमरणंजंतोर्गतिःस्वेनैवकर्मणा राजंस्ततोऽ
न्योनान्यस्यप्रदातासुखदुःखयोः २४ सर्पचौराग्निविद्युद्भ्यःक्षुत्तृड्व्याध्यादिभिर्नृपः पंचत्वमृच्छतेजंतुर्भुंक्ते

बृहस्पति राजा सों बोलत भयो २२ हे मनुष्यन के इंद्र यह सर्पराज तुम करि वध की नो जोग नहीं हैं इन नें अ
मृतपान कीयो हैं तातें अजर अमर हैं २३ हे राजन् प्राणीन कों जीवो परलोक अपने कर्म ही करें हैं तातें सुख
दुःखकों दाता और कोई नहीं २४ हे नृप चोर अग्नि बीजुरी भूख प्यास रोगादिकन कर प्राणी मरे सो प्रारब्ध कर्म ही तें

हेराजनयातेंयहजनअपनेंआदिश्रृष्टीकोभोगकरैंहैं तातेंयाअभिचारजन्यतेंनिवृत्तहोउ जाजज्ञविषैनिरअपराध
अनेकसर्पजरे २६ वानीकेपतिकोइहवचन सुनि राजाताहीभांति तिन महर्षिकेवचनकोंसनमानकरिके
विभचारजन्यतेंनिवर्तहैं तिनवृहस्पतिजूकीपूजा नकरतभयो २७ काहूकरलषिनजाय ऐसी ताविष्णुकीमा
याकाहुभांतिकाहुकरनिवारननहोय जामायाकरितिनहीविष्णुकेअंसजीवअपनीदेहमें तीनोगुणनकी

तस्मात्सत्रमिदंराजन्संस्थियेनाभिचारिकं सर्प्पाअनागसोदग्धाजनैर्दिष्टंबुभुज्यते २६ इत्युक्तःसत
थेत्याहमहर्षेर्मानयन्वचः सर्पसत्रादुपरतःपूजयामासवाक्पतिम् २७ सेसाविस्नोर्महामायाबाध
यालक्षणायया मुह्यन्त्यस्यैवात्मभूताभूतेषुगुणवृत्तिभिः २८ नयत्रदंभीत्यभयाविराजतामायात्म
वादेसकृदात्मवादिभिः नयद्विवादोविविधस्तदाश्रयोमनश्चसंकल्पविकल्पवृत्तियत् २९ क्रीलसः

वृत्तिकरियाहीतेमोहितहूं संसार मेंभ्रमत रहैं २८ तत्ववादीनकर तत्वविचारकरियैं ताकोऐसेविष्णु
केपदविषैं लोकनकीवंचनाकरनहारी मायातैंनिरभैंविराजमानहोय सोमायारहैकारणजिनको
तहांऐसेअनेकविवादतहांनहीहैं औरसंकल्पविकल्पजोवृत्तीतिनहूकरमनहूनहांनहीहैं २९

सघके करनहारे सबकारन और कर्मइनदोकू नकरिसिद्धि भये जे फल इनतिननसहित अहंकार जूत जीव
जाविस्नुपदविषैं पीडादेनहारो अरु पीडनयहदोनों जहांनती अहंकारादि उर्मी नके छोडनहारे मुनिनाई
विस्नुपदविषैं विशेषकरेरमणकरैहैं ३० नहीहै ओरछोरसोऽरद जिनकों ऐसे विवेकीउरनाकों छोडकेनेति
नेतिकहि आत्मा औरसबनकेत्यागनहारे मुनिसब नाविस्नुकोपरमपदकरेहैं ध्यानाश्रिकरसावधानहैं

न यत्र सज्जं सज्जनो भयोपरं श्रेय प्रजीव प्रभिरवीन स्वहं तदेन दुस्साधिन वाध्य वाधकं निसिध्यंचो
रर्मीन् विरमेस्वयं मुनिः ३० परंपदं वै स्वबमामनंतीन घन्तेतिनेतिसतडु नस्सरस्तवः विसज्य दोरम
स्यमनन्यसोहृदाहृदोयगुह्यावसितंसमाहितैं ३१ मरणं रघिगछं ति विस्नोर्यत्परमं पदं अहंममेत
दोर्जन्यं नयेषां देहगेहजं मू ३२ अतिवदांस्तितिक्षेते नावमन्येत किंचनः न चेमं देहमाश्रित्य वैरं कुर्व
तकेनचित् ३३ नमो भगवते तस्मै कृष्णायाकुंठमेधसे यत्पादांबुरुहध्यानात् संहितामधयामि मां म ३४

तन जाकों हृदेमैं धारनकरैहैं ३१ नाविस्नुके परमपदकों तेजन जाहिं जिनके देहगेहविषैं के निमित्त अहंताऽ
ममतारूपदुर्जन नाहीं हैं ३२ अरु जे अतिवादकू सहैं काहूकी अवज्ञान करै और देह गेहके निमित्त काहूसो छोह
नकरैं ३३ अकुंठितलेबुद्धि जिनकी ऐसे तिन व्यासजी कोहमारी नमस्कारहैं । जिनके चरणकमलके ध्याननें
॥ तम यह संहिता पढीहैं ३५ ॥

सोनकऋषिप्रस्नकरैं हे साधु व्यासजूके सिष्य वेदनके आचार्ज महात्मा पैलादिकनकरि वेदनके कितेक विभाग कीये इहवृत्तांत हमसों कहो ३५ श्रीसूतजी कहैं हैं हे ब्रह्मन् एकाग्र है मनजाको ऐसे परमेष्ठी ब्रह्माको हृदै आकासतैं नाद प्रघट भयो जो नाद कानन के मूंदेते सुनीयेहै ३६ हे ब्रह्मन् जा नादकी उपासना करिकैं जोगी सब अध्यात्म अधिभूत अधिदैव मनके इन तीनो मलनकौ हरनकरिकैं जन्मकों प्रामीहो हैं ३७ तदनंतर ता

सौनक उवाच: पैलादिभिर्व्याससिष्यैर्वेदाचार्य्यैर्महात्मभि: वेदाश्च कतिधा व्यस्ता एतत्सौम्याभिदेहीना: ३५ सूत उवाच: समाहितात्मनो ब्रह्मन् ब्रह्मण:परमेष्ठिन: हृद्याकाशादभून्नादो वृत्तिरोधा:द्विभाव्यते ३६ यदुपासनया ब्रह्मन् योगिनोऽमलमात्मना: द्रव्यक्रीयाकारकाख्यं धूत्वायान्त्यपुनर्भवं ३७ ततोभूत्त्रिवृदोंकारोऽव्यक्तप्रभव स्वराट् यतल्लिंगं भगवतो ब्रह्मण:परमात्मन: ३८ श्रृणोति य इमं स्फोटं सुप्तश्रोत्रे च सून्यदृक येन वाग्व्यज्यते यस्य व्यक्तिराकाश आत्मना: ३९।३९

नादतें स्वप्रकास अव्यक्त तीन मात्रायुक्त ॐकार भयो जो ॐकार भगवानको जनाम नतारो है ३८ इंद्री मनविना हीतैं सवग्यानाजिनकूं ऐसे जो भगवान कानन्न के सोये ते ॐकारकों सुनैं जा ॐकारकरि वानी कोविस्तार है ताको प्रघट ब्रह्माको हृदै आकास जो है ता आकासतेहै ३९

भा·द्वा·
२२

अपने आछे परमात्मावंहकों साक्षात् बतावनहारो सब मंत्रन कौ रहस्य वेदनको। बीज सनातन ऐसो ओ
ऊंकार है ४० हे भृगुवंसीन मैं श्रेष्ठ ता ऊंकार के अकार उकार मकार ये तीन वर्ण भये। जिन तीन वर्णन करि
कै सत्वादी तीनो गुण। ऋग। यजुर। साम। तिन वेद भूचर अंतरिक्ष ये तीनो लोक जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीनो ऽ
अवस्था भई ४१ भगवान ब्रह्माजु तीन ही वर्णन ते अक्षरन के समूह ह सृज भये सो ई हते स्वरूप चीस स्पर्श चार

स्वधाम्नो ब्रह्मणः साक्षाद्वाचकः परमात्मनः सः सर्वमंत्रोपनिषद्वेद बीजं सनातनंम् ४० तस्य ह्या
स्त्रयो वर्णा अकाराद्या भृगुद्वह धार्यन्ते यैस्त्रयो भावा गुणनामार्थवृत्तयः ४१ ततो ऽक्षरसमाम्ना
यमसृजद्भगवानजः अंतस्थोष्मस्वरस्पर्शह्रस्वदीर्घादिलक्षणं तेनासौ चतुरो वेदाश्चतुर्भिर्वदनै
र्विभुः सव्याहृतिकान्सोंकारांश्चातुर्होत्रविवक्षया ४२ पुत्रनध्यापयत्तांस्तु ब्रह्मर्षीन्ब्रह्मकोविदान्
तेतु धर्मोपदेष्टारः स्वपुत्रेभ्यः समादिशन् ४३

उष्मा एते सब ह्रस्व दीर्घ की हाम्रली करीयुतं है भगवान ब्रह्माजू तिन तिन अक्षरन कर च्यार मुखन ते
छंदन तें ऊंकार सहित चार वेदन कों रचन त भयो चारहोत्र के मिलें लीये अथर्वन युजुर्वेदी उद गाथा साम
वेदी होता रिग्वेदी ब्रह्मा आधारु न ड्रारे ४२ तदनंतर सो ब्रह्माजू वेदन के उच्चारादिकन मैं चतुर ऐसे ब्रह्म
ऋषि अपने पुत्रन कों तें वेद पढावत भये ते सब धर्मन के उपदेश अपने पुत्रन को पढावत भये ४३

तेसब वेदनकेधारन हारे व्रतधारी सिष्यनकर परंपराय चारों जुगनमें चली आई द्वापरके अंतिमें महात्मा ऋषिनिनवेदनके विभागकरत भये ४४ हृदेमें स्थित अच्युतकरि प्रेर नहूं तेसब ब्रह्मरिषि कालकर छिन्न आर्बल अरु शक्ति जिनकी तुच्छ ऐसे जननकूं देषिकें विभागकरतभए ४५ हे ब्रह्मन् या मन्वंतर विषें लोकनके पावन करनहारे भगवान् धर्मकी रछ्याकेलीयें ब्रह्मा शिवादि लोकपालनकर जव प्रार्थित होतभए हे

तेपरंपरयाप्राप्तास्तत्तच्छिष्यैर्धृतव्रतैः चतुर्युगेष्वथव्यस्ताद्वापरादौमहर्षिभिः ४६ क्षीणायुषःक्षीणसत्वान्दुर्मेधानवीक्ष्यकालतः वेदान्ब्रह्मर्षयोव्यस्यन्हृदीस्थाच्युतचोदिता ४५ अस्मिन्नप्यन्तरेब्रह्मन्भगवान्लोकभावना ब्रह्मेशाद्यैर्लोकपालैर्याचितोधर्मगुप्तयेपराशरात्सत्यवत्यामंशांशकलयाविभुः अवतीर्णोमहाभागवेदंचक्रेचतुर्विधं ४६ ऋग्यथर्वयजुःसाम्नांराशीनुद्धृत्यवर्गशः चतस्रःसंहिताचक्रेमंत्रैर्मणिगणाइव॥४७॥ श्रीरामजी॥

महाभागवतनव सोविभु भगवान् अंसकलाकर परासरतें सत्यवतीविषें अवतीर्ण होकें वेदच्यार विभागकरतभयें ४६ रिग जजु साम थर्वन इननें मंत्रनको उद्धारकें तिन मंत्रनके वर्गकें चार संहताकरत भये जैसे अनेकमणिननें उद्धारकें पद्मरागादि मणिनकी रचनाकरी है ४७

भा॰द्वा॰ हे ब्रह्मन सो महामति व्यास अपने चार सिष्यनकों बुलायकें एकएकनकों एकएक संहिता देत भएं ४८ पैल नाम सि
२४ ष्यकों बह्वृच नाम हैं जाते तातें बह्वृच नाम है जिनकों असी ऋग्वेद की संहिता देत भएं निगदा नाम जजुरवेद की संहि
ता वैसंपायनकों देत भएं ४९ छंदोग नाम संहिता जैमिनकों पढावत अंगीरस नाम अथर्वणवेद की संहिता

नसांस चतुरः शिष्यानुपाहूय महामतिः एकैकां संहितां ब्रह्मन्नेकैकस्मै ददौ विभुः ४८ पैलाय संहि
तामाद्यां बह्वृचाख्यामुवाच हः वैसंपायनसंज्ञाय निगदाख्यं यजुर्गणम् ४९ साम्नां जैमिनये प्रा
ह तथा छंदोगसंहितां अथर्वांगिरसीं नाम स्वशिष्याय सुमंतवे ५० पैलः स्वसंहितामूचे इंद्रप्र
मितये मुनिः बाष्कलाय च सोऽप्याह शिष्येभ्यः संहितां स्वकां चतुर्धा व्यस्य बोध्याय याज्ञवल्क्याय
भार्गवं परासराग्निमित्रे इंद्रप्रमितिरात्मवान् अध्यापयत्संहितां मांडुकेयमृषिं कविं ५१

जैमनकों पढावत भये अंगिरस नाम अथर्वणवेद की संहिता सुमंतकों पढावत भएं ५० पैलमुनि
अपनी संहिता इंद्रप्रमीत रु बाष्कल इन दोउनकों देत भएं सो बाष्कल अपनी संहिता के चार वि
भाग करिकें बोध्य जाग्यवल्क्य परासर अग्निमित्र इन चारोंनकों देत भएं बुद्धिवान इंद्रप्रमित अपनी
संहिता कवि मंडुक ऋषि कों देत भएं ५१ २६

२३

सो मंडूक देवमित्र कौं पढ़ावत भयो देवमित्र सौभरादि रिषिन कों देत भयो ५२ मंडूक को पुत्र साकल्य अपनी संहिता के पां
च विभाग करि कै वात्स मुद्गल वासी मालीय गोखल पिसिर इन पांचौंन कों देत भयो ५३ तिन साकल्य कौ सिष्य
जातुकर्ण मुनि निरुक्त सहित अपनी संहिता बालक पैज वैताल विरज इन चारन कौं देत भयो ५४ बाष्कल को पुत्र स

नस्य सिष्यो देवमित्रः सौभार्यादिभ्य उचिवान् ५२ साकल्यस्तत्सुतः स्वां तु पंचधा व्यस्य संहिताः वात्स्यमुद्गल
शालीय गोखल्य सिसिरेष्वधात ५३ जातुकर्ण्यश्च तच्छिष्यः सनिरुक्तां स्वसंहिताः बालाकपैजवैताल वि
रजेभ्यो ददौ मुनी: ५४ बाष्कलिः प्रतिशाखाभ्यो वालखिल्याख्य संहितां चक्रे वालायनिर्भज्यः कासारश्चै
चैव तां दधुः ५५ बहृचाः संहिता ह्येता एभिर्ब्रह्मर्षिभिर्धृता श्रुत्वैतच्छंदसां व्यासं सर्वपापैः प्रमुच्यते ५६
वैशंपायनसिष्याश्च चरकाध्वर्यवोऽभवन् यच्चेरुर्ब्रह्महत्यांहः क्षपणं स्वगुरोर्व्रतं ५७ ।। ५७

व संहिता न ने लयकैं बालखिल्य नाम संहिता करि कै वालयनि भज्य कासार इन तीन सिष्यन कों देत भयो
५५ ये सब बहृच रिषि रिगुवेद की बहृचि नाम संहिता कों धारत भयो जो कोई या वेद के विस्तार कों सुनै सो सब
पाप न ते छुट जाय ५६ वैसंपायन के सिष्य चरकाध्वज होत भए जाने तु सब अपने गुरु के ब्रह्महत्या पाप के
दुरकरन हारे व्रत कौं आचरन करत भए ताते चरकाध्वर्ज नाम होत भए ५७ ।। ५७ ।। ५७ ।।

भा·द्वा· तिनवैसंपायनकोजाज्ञावल्क्यनाम ओरएकसिष्यवोलतभयो हेभगवान अल्पहैधीर्जेजिनके ऐसेइनसवननैं
२४ वलकहावनि·भावैगो याइष्करखुतकोमैकरोंगो ५८ यवचन सुनिकैंगुरुकूं पिनहू बोलि ब्रह्मणनकी अवज्ञाक
रनहारेसिष्यतूहमनैं जोवछुपढोतोकोवेगहीछोडिकैंयहातेंतूजानौरहैं ५९ देवरातकोपुत्रसोजाज्ञवल्क्यजजुर

याज्ञवल्क्यस्तच्छिष्य आहाहो भगवन् कियत् यच्चेतच्छूद्रस्यांहःस्यघ्नं त्वद्गुरोर्व्रतं म् ५८ इत्यु
क्तो गुरुरप्याह कुपितो याह्यलंत्वया विप्रावमंत्रा सिष्येणमदधीतंत्यजाश्विति ५९ देवरातसुतःसोपि
वदित्वायजुषांगणंततो गतोथमुनयोददृशुस्तान् यजुर्गणान् ६० यजुंषितित्तिराभूत्वातल्लोलु
पतयाददुः तैत्तिरीयाइतियजुसाखाआसनसुपेसला ६१ याज्ञवल्क्यस्ततोब्रह्मंछंदांस्यधिगवे
षयन् गुरोरविद्यमानानिसूपतस्थेर्कमीश्वरम् ६२ श्रीरामचंद्रायनमः ६२ ॥ ६२॥

गुरुकोउगारकरजातभयो तातीसमैंमुनिगणआयतिनजजुर्गनकोदेखतभये ६० तदनंतरतेस
वमुनिलोभकरितीतरहूयतिनजजुरगणनकोवेकोईश्वरसूर्जकीउपासनाकरतभयो ६२ आरा
करतभये तातेंताजजुर्वेदकी तितरीनामसुंदरसाषाहोतभई हेब्रह्मणसोजागपवंवल्क्यगुरुतेंतो २४
अधिकवेदकोपावैतोतभयो ६२

याज्ञवल्क्य श्रीसूर्य्यकी अस्तुति करैहैं तीन भगवान गुरूहू ते अधिक वेद के देनहार आदित्य तुमको नमः
स्कार हैं हस्नाते लेकै तृणपर्जंत चारप्रकार प्राणीन के समूह हैं यामैं ऐसे प्राजगनके हृदै विषै जो तुम एक
ही आसके निरउपाधि अंतरजामी रूप हैं अरु बाहर कालरूप हैं। खिनलव नमैं षड़न अंगन करि तुम वर्ष
गणन करन लन को ग्रहण और परत्याग करि परलोक यात्रा करोहौ ६३ नित्य त्रिकाल वेद विधकर उपासना

याज्ञवल्क्य उवाच: ॐ नमो भगवते आदित्याय अखिलजगतामात्मस्वरूपेण कालस्वरूपेण चतुर्विधभू
तनिकायानां ब्रह्मादिस्तंबपर्यंतानामंतर्हृदयेषु बहिरपि चाकाशइवोपाधिनाव्यवधीयमानो भगवने
कएव क्षणलवनिमेषावयवोपचितसंवत्सरगणेनापामादानविसर्गाभ्यामिमांयोक लोकयात्रामनु
वहति ६३ यदुत हवाव विबुधर्षभ सवितरदस्तपत्यनुसवनमहरहराम्नायविधिनोपतिष्ठमानानाम
खिलदुरितवृजिनबीजावभर्जन भगवतः समभिधीमहि तपनमंडलम् ६४ यइह वाव स्थिरचरनि
कराणां निजनिकेतनानां मनः इंद्रियासुगणाननात्मनः स्वयमात्मांतर्यामी प्रचोदयति ६५ श्री ६५

करनहारे जनिन के अखिल पापन के फल दुःखन और बीजन के जरावनहारे देवतान मैं श्रेष्ठ हे सवितः भगवा
न तुम्हारो जो मंडल सब लोकन के प्रकासना कों हम ध्यान करैहैं ६४ तुम्हारे रहवे को स्थान ऐसे स्थावर
जंगमनके समूह तिनके जड़रूप मन इंद्री प्रानगसन कों जो तुम आपही आत्मा अंतरजामी प्रेरन करो हो ।। ६५ ।।

भा॰द्वा॰ अतिभयानक है मुख जाको ऐसैं अंधकार रूप अजगर करि ग्रसें मृतक सैं अचेतन ऐसे लोकन को देखि के परम करु

१५ णा वंत जो तुम तिन चरणारविंद करि तिनको उठाय के नित्य सुमेसमे मैं स्वधर्म रूप कल्यान विषै स्थापन करो हौं और पृथ्वीपति

से आसाधन को भय देते सब ओर फिरो हौं तहां तहां दिसान के पति न की कमल जु कर अंजुली नकरि पूजित हो ६६

यत्रो वैमिलोकमतिकरालवक्त्रान्धकारसंज्ञाजगरग्रहगिलितं मृतकमिवबीविचेतनमवलोक्यानुय

कंपया परमकारुणिक ईक्षयैवोत्थाप्याहरहरनुसवनश्रेयसि स्वधर्माख्यात्मावस्थाने प्रवर्त्तयत्यवनिपः

तिरिवासाधूनां भयमुदीरयन्नटति परेत आशापालैस्तत्रतत्र कमलकोशांजलिभिरूपहृतार्हणः ६६ अथ

ह भगवान चरणनलिनजुगलं त्रिभुवनगुरुभिरभिवंदितमहमयाद्दयाम् ॥ यजुषामनुपसराभिति

६७ ~~सूतउवाच~~: एवं स्तुतः स भगवान् वाजिरूपधरो रविः यजूंष्ययातयामानि मुनयेऽदात्प्रसादतः ६८

यजुर्भिरकरोच्छाखा दशपंच शतैर्विभुः जगृहुर्वाजसंन्यस्ताः काण्वमाध्यंदिनादयः ६९

हे भगवन् त्रिलोक के गुरुन करि वंदिये तुम्हारे चरनकमलन को हम उत्तम यजुर्वेद की कामना करि सरन आये

हैं ६७ सूतजी कहै है याभांति अस्तुत करी जिनकी ऐसे भगवान सूर्ज प्रसन्न होइ के सुंदर यजु गण यापा ज्ञाव

ल्क मुन को देत भये ६८ तदनंतर सो समर्थ मुनि सै करान ता यजु गण की पंद्रह साषा करत भये वाजसन

सन नाम तिन साखान को कन्य माध्यंदिनादि ग्रहण करत भये हैं ६९ श्रीमन्नारायन वासुदेव की जैसे रोय २५

सामवेदकोवेताजैमनुकोपुत्रसुमंतमुनीहोतभयो तिनकोपुत्रसुत्वानसुत्वानतिनकौंजानी औरपुत्रकौंएकएकसंहिता
देतभयो ७० ताजैमिनकोसिष्यसुकर्ममैंनामद्विजवडोबुद्धिमानसामवेदरूपीवृक्षतासंहिताकेभेदकरतभयो
हिरण्यनाभकौशल्यपोष्यंजिऔरवेदवेताआवंत्यएतीनसिष्यसुकर्माकेहोतभए ७१ तिनतीननकेसामवेदके
गामनहारेउदीच्यनामपांचसौशिष्यहोतभए तिनमैंकोईएकप्राचउतकहाये ७२ लौगाक्षिलांगली

जैमिनेः सामगस्यासीत्सुमंतुस्तनयो मुनिः सुत्वांस्तु तत्सुतस्ताभ्यामेकैकां प्राह संहितां ७० सुक
र्मा चापि तच्छिष्यः सामवेदतरोर्महान् सहस्रसंहिताभेदं चक्रे साम्नां ततो द्विजः हिरण्यनाभः
कौशल्यः पौष्यंजिश्च सुकर्मणः शिष्यौ जगृहतुश्चान्य आवंत्यो ब्रह्मवित्तमः ७१ उदीच्याः सामगाः
शिष्या आसन्पंचशतानि वै पौष्यंज्यावंत्ययोश्चापि तांश्च प्राच्यान्प्रचक्षते ७२ लौगाक्षिर्मांग
लिः कुल्यः कुसीदः कुक्षिरेव च पौष्यंजीशिष्या जगृहुः संहितास्ते शतं शतं ७३ कृतो हिरण्यनाभ
स्य चतुर्विंशति संहिताः शिष्य ऊचे स्वशिष्येभ्यः शेषा आवंत्य आत्मवान् ७४ इति श्रीभागवते द्वादश

कुल्यकुसीदकुक्षीएसवपौष्यंजिनकेशिष्यहोइकैंसौसंहितानकौंग्रहणकरतभये ७३ हिरण्यनाभना
कौकृतिनामशिष्यअपनेसिष्यनकौंचौवीससंहिताकहतभयौ औरज्ञानवान् आवंत्यअपनेशि
ष्यनकौंअनेकसाखावढावतभये ७४ इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेटीकायांषष्ठोध्यायः ६॥

भा. द्वा.
२६

सूतजी कहैं हे शौनक तें अथर्वन वेद के वेता सुमंत रिषि अपनी संहिता कवंध नाम शिष्य कों देत भए सो कवं
ध अपनी संहिता के द्वै भाग करि पथ्य और देवदर्श इन दोंउनतें भए १ देवदर्श के शौक्लायन ब्रह्मबलि मोदोष
पिप्पलायनि ए चार देवदर्श के शिष्य होत भए अब पथ्य के शिष्य सुनों कुमुद सुनक जाजलि ये तीनों अ
थर्वन वेद के वेता भए २ सुनक के शिष्य बभ्रु सैंधवायन ए दोउ द्वि संहिता पढत भए बभ्रु सैंधवायण

सूतोवाचः अथर्ववित्सुमंतश्च शिष्यमध्यापयत्स्वकां संहितां सोपि पथ्याय वेददर्शाय चोक्तवान्:
१ शौक्लायनिर्ब्रह्मबलिर्मोदोषः पिप्पलायनिः वेददर्शस्य शिष्यास्ते पथ्यशिष्यानथो शृणु कुमुदः २
शुनको ब्रह्मन् जाजलिश्चाप्यथर्ववित् २ बभ्रुः शिष्योऽथांगिरसः पन एव च सैंधवा ३ ताले अ
थर्वनाचार्या शृणु पौराणिकान्मुने ४ त्रय्यारुणिः कश्यपश्च सावर्णिरकृतव्रणः वैशंपाय
नहारीतौ षड्वै पौराणिका इमे अधीयंत व्यासशिष्यात्संहितां मत्पितुर्मुखात् एकैकामहमेतेषां शि
ष्यः सर्वाः समध्यगाम् ५

द्विन केन सत्र कल्प कश्यप अंगिरादि शिष्य होत भए और रहूसावर्णि आदि होत भए ए सब अथर्वण वेद
के आचार्य तुम सों कहे अब पुराणादि के आचार्य सुनो हे मुने त्रय्यारुणि कश्यप सावर्णि अकृतव्रण वैशं
पायन हारीत ए छै पुराणन के आचार्य होत भए व्यास के शिष्य जो हमारे पिता तिन तें ये सब एक एक संहि
ता पढत भए इन सबन को शिष्य होइ कें सब संहितान पढत भये ५

कश्यप सावर्णि और राम कौ शिष्य अकृत व्रण और हम ए चारौं व्यास के शिष्य तें चार मूल संहिता पावत
भए ६ हे ब्रह्मन् ब्रह्मरिषि पुराणन के लक्षण वर्णन किये हैं वेद शास्त्र के अनुसार ते ताकौं तुम चित लगाय के सुनौ: ७
या विश्व के लक्षण स्वर्ग विसर्ग वृत्ति रक्षा मन्वंतर राजान और वंश तिन वंसी राजान कौ चरित्र निरोध होनआ

कस्यपोहं च सावर्णी रामशिष्यो ऽकृतव्रणः अधीमहीं व्यासशिष्याः चत्वारो मूलसंहिता ६
पुराणलक्षणं ब्रह्मन् ब्रह्मर्षिभिर्निरूपितम् शृणुष्व बुद्धिमाश्रित्य वेदशास्त्रानुसारतः ७
सर्गोऽस्याथ विसर्गश्च वृत्तीरक्षांतराणि च: वंशो वंशानुचरितं संस्था हेतुरपाश्रयः ८
दशभिर्लक्षणैर्युक्तं पुराणं तद्विदो विदुः केचित् पंचविधं ब्रह्मन् महदल्पव्यवस्थया: ९
अव्याकृतगुणक्षोभान्महतस्त्रिवृतोऽहमः भूतमात्रेंद्रियार्थानां संभवः सर्ग उच्यते: १०
पुरुषाःनुगृहीतानामेतेषां वासनामयः विसर्गोयं समाहारो बीजा बीजं चराचरं ११

श्रय ८ हे ब्रह्मण ये दश लक्षण जुक्त पुराण कौं पुराण वेत्ता सब कहते कोई एक पांच लक्षण जुक्त कहैं सो छोटे बडे
विचार करि ९ या माया के गुण क्षोभ ते महतत्व तीन प्रकार कौ अहंकार पंच तन्मात्रा पंच महाभूत ईद्री गण इन सब कन
की उत्पत्ति कौ सर्ग कहै १० ईश्वर के अनुग्रह युक्त सब वासनामय जीवन के समूहन कौ चराचर रूप करि जैसे बीज ते
उपजै ताकौ विसर्ग कहीये ११

चरप्राणीनकी चर अचर जीवका है तिनमैं मनुष्यनकी कछुक स्वभावकछुक वेदविधिकरीहै १२ तिर्यक मनुष्य
रिषिदेवता इनसवनविषैं जुगजुगमैं भगवान् अवतीर्णहोइकैं जोजोलीला याविश्वकी रछ्या करैहैं जिनजिन
अवतार करिवेदकेद्रोहीनकौं मारीयें १३ मनुअरुमनुकेपुत्र देवता इंद्र रिषि हरि अवतार इनछहनकरमन्वं

वृत्तिर्भूतानि भूतानां चराणामचराणि च: कृतास्वेननृणांतत्र कामाच्चोदनयापिवा १२ रक्षा
च्युतावतारेहाविश्वस्यानुयुगेयुगे तिर्यङ्मर्त्यर्षिदेवेषु हन्यंतेयैस्त्रयीद्विषः १३ मन्वंतरंमनु
र्देवामनुपुत्राःसुरेश्वराः ऋषयोंऽशावताराश्च हरेःषड्विधमुच्यते १४ राज्ञांब्रह्मप्रसूतानांवं
शस्त्रैकालिकोऽन्वयाः वंशानुचरितंतेषांवृत्तंवंशधराश्चये १५ नैमित्तिकःप्राकृतिको
नित्यआत्यंतिकोलयः संस्थितिरितिविप्रेंद्रैःप्रोक्ताश्चतुर्विधास्यस्वभावतः १६ हेतुर्जीवोस्यस
र्गादेरविद्याकर्मकारकः यंचानुशायिनंप्राहुरव्याकृतमुतापरे १७

तरकहीयें १४ ब्रह्मातेंउपजेजेराजा तिनकेवंसीनकौं वंशकहीयें तिनवंसीनकौं औरतिनमैं मुखीयानकौं
आचरनताकौं वंशानुचरित्रकहीये १५ नीत्यनैमित्तकप्राकृति आत्यंतिक इनचारप्रकारकीप्रलैकौं
कविसवकोईतौंनिरोधकहैहैं १६ अविद्याकरिकर्मनकेकरनतारेजीवजाविश्वकेस्वर्गादिकौं देतैं जीनजी
वनकौं कोईस्यावसनकहे कोईदूषितकहैहैं १७

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तमायामयजीवनकी जो तीनों वृत्ति तिन विषें जो देह और न्यारे हू हैं ता ब्रह्मकौं प्राप्त होये १८
जैसें घटादी पदार्थन विषें मृत्तिकादि जुक्त हू हैं और न्यारी हू हैं तिनके नाम रूप विषें सत्तामात्र वर्तीयें जैसें ती जन्म
ते ले मरन परजंत ताई तिन अवस्थान विषें ब्रह्म जुक्त हू है: १९ जब मायामय विचार के इन तीन वृत्तीन तें पुरुष
कौ चित्त निरवृत्ति होइ अथवा जोगाभ्यास करि निरवर्त्त होइ तब इह पुरुष अपने शुद्ध स्वरूप कौं जानि के संसार तें छूटै २०

ब्रह्मरेकोऽन्वयो यस्य जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु मायामयेषु तद्ब्रह्म जीववृत्तिष्वपाश्रयः १८ पदार्थेषु यथा द्र
व्यं सन्मात्रं रूपनामसु: बीजादिपंचतांतासु ह्यवस्थासु युतायुते १९ विरमेत यदा चित्तं हित्वा वृत्तित्र
यं स्वयं योगेन वा तदात्मानं वेदेहा या निवर्त्तते २० एवं लक्षणलक्षाणि पुराणानि पुराविदः मुनयो
ऽष्टादश प्राहुः क्षुल्लकानि महान्ति च २१ ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं लैंगं सगारुडं नारदीयं भागवतं
माग्नेयं स्कंदसंज्ञितं २२ भविष्यं ब्रह्मवैवर्त्तं मारकंडेयं सवामनम् वाराहं मत्स्यं कौर्मं च ब्रह्मांडाख्यमि
ति त्रिषट् २३ ब्रह्मन्नेतानि समाख्यातं शाखाप्रणयनं मुनेः शिष्यशिष्यप्रशिष्याणां ब्रह्मतेजोविवर्द्धनम् २३

ये लक्षण जिन्के ऐसैं छोटे वडे अठारे पुराण कविसब कहते हैं २१ ब्रह्म १ पद्म २ शिव ३ लिंग ४ गरुड ५ नारदीय ६ भागवत ७
अग्नि ८ स्कंध ९ भविष्योत्तर १० ब्रह्मवैवर्त ११ मार्कंडेय १२ वामन १३ वाराह १४ मत्स्य १५ कूर्म १६ ब्रह्मांड १७ विष्णु १८ ए अठारे पुराण कहते हैं २३
हे ब्रह्मन् व्यास के शिष्य तिनके शिष्यन करि वेदन की शाखा न कौ विस्तार ब्रह्मतेज कौ वढावन हारो इह तुम सों कह्यौ २३

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे टीकायां सप्तमोध्यायः ७ शौनिकादिक पूछै हैं हे साधु सूत तुम बक्तानमें श्रे
ष या पार संसार समुद्र में भ्रमनहारे मनुष्यन के पार दिखावनहारे तुम बहुत दिन जीवो पुनः तुमसों कहो १ मृकंडु के
पुत्र ऋषि कों जन सब चिरंजीव कहै हैं जो प्रलय में बचि रह्यो जा प्रलयकार सब जगत ग्रस्त भयो २ भार्गवंसीन में श्रेष्ठ या
ही कल्प में हमारे ही बंस में उपज्यो तब ते लें अब तांई प्राणीन को कोई प्रलय नहीं भई ३ सो वह एकलो ही प्रलै के समुद्र

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे सप्तमोध्यायः ७ शौनिक उवाच। सूत जीव चिरं साधो वद
नो वदतां वरः तमस्यपारे भ्रमतां नृणां त्वं पारदर्शनः १ आहुश्चिरायुषमृषिं मृकंडुजनजं जनः यः कल्पां
ते उर्वरितो येन ग्रस्तमिदं जगत् २ स वा अस्मत्कुलोत्पन्नः कल्पेस्मिन् भार्गवर्षभः नैवाधुनापि भूतानां
सम्प्लवः कोपि जायते ३ एक एवार्णवे भ्राम्यन् ददर्श पुरुषं किल वटपत्रपुटे तोकं शयानं त्वेकमद्भुतम् ४
एष नः संशयो भूयान् सूत कौतूहलं यतः तं नश्छिंधि महायोगी पुराणेष्वपि संमतः ५ सूत उवाच।
प्रश्नस्त्वया महर्षेयं कृतो लोकभ्रमापहः नारायणकथा यत्र गीता कलिमलापहा ६

में भ्रमतो वट के पत्र में सोवत एक अद्भुत बालकरूप को देखत भयो ४ हे सूत हे महायोगी इतनो हमारो बडो सं
सय है पुराणन के वेत्ता तुम या संसय कों काटो ५ सूतजी कहै हैं हे महर्षि तुमने इतनो भारी प्रश्न लोकन के पापन कों
नास करै है जा प्रश्न में नारायण की कथा कलि के दोषन की दूरि करनहारी है ६

क्रम करि पायो है पिता तें द्विजन्मा संस्कार जानें ऐसो जो मारकंडेय अध्यन पुत्र धर्म एवं ब्रू वेदन कौ पढत भयों ते थी
कतीयें वालिक ब्रह्मचारी शांत वल्कलपट रें जटा दंड कमंडल मनेऊ इन कौ धारें मृगचर्म कमलाक्ष जी माला नियम
मसिद्धि के लीयें कुशन कौ धरें अग्नि सूर्य गुरु ब्राह्मण अपने विषे दोउ संध्यान में हरि कौ अरचन करें सांझि सवेरें भिक्षा

प्राप्तद्विजातिसंस्कारो मार्कंडेये पितुः क्रमात् छंदांस्यधीत्य धर्मेण तपास्वाध्यायसंपुता: ७ वृहद्व्रतधरोशांतो
जटिलो वल्कलांवर: विभ्रत्कमंडलं दंडं उपवीतं समेखलं ८ कृष्णाजिनं साक्षसूत्रं कुशांश्च नियमर्द्धने:
अग्न्यर्कगुरुविप्रात्मांग्र संध्ययोर्हरि ९ सायंप्रात: स्वगुरवे भैक्षमाहृत्य वाग्यत: बुभुजे गुर्वनुज्ञाता: सकृ
स्वपे३ न्नोचेदुपोषित: १० तप:स्वाध्यायपरोवर्षाणामयुतायुतं आराधयन् हृषीकेशं जिग्येमृत्युं सुदुर्जनं ११
ब्रह्मभृगुर्भवोदक्षो ब्रह्मपुत्राश्च येपरे नृदेवपितृभूतानि तेनासंनति विस्मिता १२ ८

लाय करि गुरुन कौं निवेदन करि तिन की आज्ञा पाय मौन है एक वेर भोजन करें कबहू तिन की आज्ञा पाये वि
ना व्रत ही करें या भांति तप अरु अध्यापन परायण है कें मार्कंडेय अयुतन के अयुत वर्ष तांई हृषीकेश कौं आराध
ना करत अति दुर्जय मृत्यु कौं जीतत भये ७ ब्रह्मा शिव भृगु दक्ष और हू ब्रह्म के अने क पुत्र मनुष्य देवता पित
र भूतन कौं देखि कें विस्मित होत भये ८

याभांतिनैष्ठिकब्रह्मचारीव्रतकोंधरैं सोमार्कंडेययोगीतपअध्ययनसंजमनिकरिकेंदूरिभयेहै क्लेशजाके ऐसैं मनकरअधोक्षजकोंध्यानकरतभयों ८ याभांतिभगवान्‌विषैलगायोंहैचित्तजानैं ऐसेतामहायोगीमार्कंडेयकों छैमन्वंतरव्यतीतभए १० हेब्रह्मन्‌यहजानिकैं इंद्रसातयेमन्वंतरमैंताकेतपसों संकायुतहैं ताकेतपकोविघ्नकरिवेकों

इत्थंबृहद्व्रतधरस्तपःस्वाध्यायसंयमैः दध्यावधोक्षजंयोगीध्वस्तक्लेशान्तरात्मना: ९ तस्यैवंयुञ्जतश्चित्तंमहायोगेनयोगिनाः व्यतीयायमहान्कालोमन्वन्तरषडात्मकः १० एतत्पुरंदरोज्ञात्वासप्तमेऽस्मिन्कल्पान्तरे तपोविशंकितोब्रह्मन्नारेभेतद्विघातनम् ११ गंधर्वाप्सरसाकामंवसंतमलयानिलौ मुनयेप्रेषयामासारजस्तोकमदौतथा १२ तेवैतदाश्रमंजग्मुर्हिमाद्रेःपार्श्वउत्तरेः पुष्पभद्रानदीयत्रचित्राख्याचशिलाविभो १३

आरंभकरतभयों ११ कैसेविघ्नकरतभयों गंधर्वअपसराकामवसंत मलयपवन रजोगुणकोंप्यारोंउत्रलोभमोहमद इनसबनकोंतामुनिकेपासपठावतभयों १२ हेविप्रतेसबहिमालयकेउत्तर औरतामुनिकेआश्रममेंजातभये जहांपुष्पभद्रानदीहैं औरचित्रानामशिलाहैं १३

औरआश्रमकसौहैं अतिपवित्रसुंदरवृक्षलतानकरिकैसोभितहैं औरसुंदरपक्षीनेसव्दव्यापिहैं औरसुंदर
निरमलजलकेसरोवरकरसुक्तहैं मत्तभमरनकोगुंजारतेजहां औरमत्तकोकिलानकोसव्दहैजहां औमत्त
मोरनकौनृत्यहैजहां औरमत्तपक्षीनकेसब्दहैंजहां सितलजलकेझिरनानकेकनकानतोलेंकेवनपवन
जहांप्रवेसकरहैं उपवनकोपरसकेकंदर्पकोउपजावतवहेहैं १४ चंद्रमाकोउदयहेजामें असेसंध्याकेसमेंसुंदर

तदाश्रमपदंपुण्यंपुण्यद्रुमलताचितम् पुंस्कोकिलकुलाकीर्णंपुष्पमालकलाश्रयं मत्तभ्रमरसंगी
तंमत्तकोकिलकूजितं मत्तबर्हिनटाटोपं मत्तद्विजकुलाकुलं वायुनाविषआदाय शिरोनिर्झरशीकरान्
सुमनोभिःपरिष्वक्तोववावुत्तंभयन्स्मरन् १४ उदयच्छन्द्रनिशावक्त्रःप्रवालस्तवकालिभिः गोपद्रुम
लताजालैस्तत्रासीत्कुसुमाकरः १५ अन्वीयमानोगंधर्वैर्गीतवादित्रयूथपैः अदृश्यतात्तचापेषु
स्वस्त्रीयूथपतिःस्मरः १६ हुत्वाग्निंसमुपासीनंददृशुःशक्रकिंकराः मीलिताक्षंदुराधर्षंमूर्तिमंतमिवा

नवीनपल्लव औरफूलनकेगुछानकेसमूहहैजामें असेंमुनेकसारवा औरवृक्षलतानकरिजुक्तहैं वसंतन
हाप्रगटतभयो १५ गीतवादित्रनसहितगंधर्वहैंवाछेंजाके असअप्सरानकेयूथपतिनकरिकामधनुषवा
णकोहाथनमैंलेकैंमहांदिषाईदेतभयो १६ ताआश्रममेंअग्निहोमकरिकेंबेठे औरघनतैमांनीमूनोमूर्ति
वान्अग्नितें कोतेजस्वी असेंमार्कंडेयजुकोंइंद्रकेकिंकरसबदेषतभये १७

भा॰ टी॰ पुनि तिन मुनिके आगें अप्सरा नाचत भई गायक गावत भए मृदंग वीणा ढोलादिकन करिकें मनोहर वाजे वजावत भए १८ तामें पांच वै छ्रव जाके ऐसे वाणन को काम अपने धनुष में जोरत भयो और वसंत लोभादि ते सव ई ऊके

३० सत मुनि के मन कों कंपावत भए १९ स्तनन के भारतें अतिशय करि चले श्री जाउ कटि जाकी और केशन तें शिथिल है माला जाकी कंदुक करि क्रीडा करत जित जित कंदुक जाय तित तित मैं भ्रमै तें दृष्टि जाकी ऐसी पुंजस्थलीना

ननृतुस्तस्य पुरतः स्त्रियो गोगायकानगाः मृदंग वीणा पणवैर्वाद्यं चक्रुर्मनोहरं १८ संदधेऽस्त्रं स्वधनुषि कामः पंच मुखं तदा मधुर्मनोरजस्तोक ईन्द्रभृत्या व्यकंपयन् १९ क्रीडंत्याः पुंजकस्थल्याः कंदुकैः स्तनगौरवात् भृशमुद्विग्नमध्यायाः केशविस्रंसितस्रजः २० इतस्ततो भ्रमद्दृष्टेश्चलंत्या अनु कंदुकम् वायुर्जहार तद्वासः सूक्ष्मं त्रुटितमेखलम् २० विससर्ज तदा वाणं मत्वा तं स्वजितं स्मरः सर्वं तत्राभवन्मोघमनीशस्य यथोद्यमः २१ त इत्थमपकुर्वंतो मुनेस्तत्तेजसा मुने दह्यमाना निववृतुः प्रबोध्याहिमिवार्भकाः २२

मअप्सरा की मेखला जव तीदूटी तव ती भितीन वस्त्र को पवन हरत भयो २० तासमें काम अपने वस तिन मुनि को मानिके वान छोडत भयो सो ताके ते सव उद्यम व्यर्थ भए जैसे भाग हीन को उद्यम व्यर्थ होति २१ हे मुने या भाति मुनि के अपकार करनहारे कामादि तिन मुनि के तेज करि जरन तहां ते भजत भयो जैसें वालक साप कों जगाय कें फेर भाजे है या प्रकार २२

हे ब्रह्मन् या भांति ईद्र के अनुचर करिकै कीयें उद्यम कों हू यां देषिवें महा मुनि कें अहंकार न उपज्यौ सो यह निश्चय महातन विषें आश्चर्य न ही हें २३ कामन समेत काम कौ निस्तेज देषि कें और ब्रह्मरिषी को प्रभाव सुनि कें भगवान् ईद्र अति विस्मित होत भये २४ या भांति तिन तप अध्ययन संयम न करि कें भगवान् विषें लगे है मन जा कों ऐसे मार्कंडेय पें अनुग्रह करिवे कों नरनारायण हरि तहां आवत भये २५ श्वेत स्याम नवीन कमल से सुंदर नेत्रन जुत चत्रभुजा

इति प्रानुचरैर्ब्रह्मन् धर्षितोपि महामुनिः यन्नागादहमो भावं न तच्चित्रं महत्सु च २३ दृष्ट्वा निस्तेजसं कामं सगणं भगवान् स्वराट् श्रुत्वानुभावं ब्रह्मर्षेर्विस्मयं समगात्परं २४ तस्यैवं युंजतश्चित्तं तपः स्वाध्यायसंजमैः अनुग्रहायाऽऽविरासीन्नरनारायणो हरिः २५ तौ शुक्लकृष्णौ नवकंजलोचनौ चतुर्भुजौ रौरववल्कलांवरौ पवित्रपाणी उपवीतकं त्रिवृत् कमंडलुं दंडमृजुं च वैणवं पद्माक्षमालामुत जंतुमार्जनं वेदं च साक्षात्तप एव रूपिणौ तपत्तडिद्वर्णपिशंगरोचिषा प्रांशू दधानौ विबुधर्षभार्चितौ २६ ते वै भगवतो रूपे नरनारायणावृषी दृष्ट्वोत्थायादरेणोच्चैर्ननामांगेन दंडवत् २७

मृगचर्म वक्कलन के वस्त्र हाथ मैं कमंडल जनेऊ वांस के दंड कौं धरें कमलगटान की माला आसन वैठवे कौ और पेखावेद इन कौं धरें प्रकाशमान विजरी से गौर तेजवारे साक्षात् मूर्तिमान तप ही हें उंचे शरीर श्रेष्ठ देवतान के पूज्य ऐसे ते दोउ ऋषि आवत भए २६ भगवान् के स्वरूप तिन दोउ नरनारायण ऋषिन कौ देषि कें मार्कंडेय जू बहुत आदर सर्व गउठि कें दंड से गिर कें साष्टांग दंडोत करत भये २७

भा०द्वा तिनदोउनके दर्शनके आनंद करि प्राप्तिभई बुद्धि मन ईंद्री जाकों औरु प्रेम भए रोमांच जाकें और आसूनसों र
३१ भरे है नेत्र जाके ऐसो सो मार्कंडेय तिन दोउनकों देषवेकों समर्थ न भयो २८ फेर सनरकैं अंजुलजोर नम्रहै उत्कं
ठासों आलिंगन करत सो तिन दोउ ईश्वरनकों गद्गदवानी करनमोन मोयह बोलत भयो २९ तदनंतर तिन
दोउनकों आसनपै बैठायकें चरणनकों धोयकें अर्घलें धूपमाला इनकरिकें पूजन करत भयो ३० सुषद बैठे

स तत्संदर्शनानंदनिर्वृतात्मेंद्रियाशयः हृष्टरोमाश्रुपूर्णाक्षो नसेहे तावुदीक्षितुम् २८ उत्थायप्रां
जलीप्राह्व औत्सुक्यादाश्लिषन्निवा: नमो नमः इतिसानौ बभाषे गद्गदाक्षरः २९ ततोरासनमादाय:
पादयोरवनिज्यच अर्हणेनानुलेपेन धूपमाल्पैरपूजयत् ३० सुखमासनमासीनौ प्रसादाभि:
मुखौ मुनि: पुनिरानम्यपादाभ्यां गरीष्ठाविदमब्रवीत् ३१ मार्कंडेउवाच: किं वर्णये तव विभो यदु
दीरतेऽसु: संस्पंदते तेन मनवाङ्मन इंद्रियाणि स्पंदंति वैतनुभृतामजसर्वयोश्च स्वस्याप्यथापि
भजतामसभावबंधु: ३२

आसनपै बैठे प्रसन्नहैं मुखजिनकों ऐसे तिन दोउ मुनीनके चरननविषैं पुनदंडोत करिकैं श्रेष्ठ तिन
सों बोलत भयो ३१ हे प्रभो तुम्हारी कहा स्तुति करों जाते तुम्हारे प्रेरेतें ब्रह्मा शिव औरु सब जगतके हमरे ह प्रा
णचेषा करैं तिन प्राणनके पीछें वानी मन ईंद्री एचेषा करैं तथापि सो तुम भजन करनवारेनके आत्मबंधु हो ३२

फिर कैसे हैं विकसत हैं हृदयकमलकी कर्णिका तापै योगेश्वरनें राखे हैं चरणकमल जिनके लक्ष्मी कौं जिनकैं चिह्न कौस्तुभ मणि जिनकी ग्रीवा में नहीं मलीन है शोभा जाकी ऐसी वनमाला करि व्याप्त हैं १० क्षुद्रघंटका अंगूठी बहुत मोलके नूपुर कंकण इन करि विभूषित सचिक्कन निर्मल घूघरवारे केशन करिकैं दीप्यमान जो मुखकमल जामें जो हास ताकरि सुंदर ११ उदारलीलापूर्वक हसन चितवन ताकरि कैं दीप्यमान भ्रूभंग करि भक्तनके उपर सूचित कीयो हैं अनुग्रह जानें चिंता ही कर भक्तन के हृदय में प्रगट होय हैं ता हरि कौं भावना में निरख्यौं करै जब तांई धारणा कर मन लग्यो रहै १२ चरणते लेकैं हसन तांई एक एक भगवान्

उन्निद्रहृत्पंकजकर्णिकालये योगेश्वरास्थापितपादपल्लवं श्रीलक्ष्मणं कौस्तुभरत्नकंधरमम्लानलक्ष्म्यावन
मालयाचितं १० विभूषितं मेखलयांगुलीयकैर्महाधनैर्नूपुरकंकणादिभिः स्निग्धामलकुंचितनीलकुंतलै
विरोचमानाननहासपेशलं ११ अदीनलीलाहसितेक्षणोल्लसत्भ्रूभंगसंसूचितभूर्यनुग्रहं ईक्षेत चिंताम
यमेनमीश्वरं यावन्मनो धारणयावतिष्ठते १२ एकैकशोंगानि धियानुभावयेत् पादादियावद्धसितं गदाभृतः
जितं जितं स्थानमपोह्य धारयेत् परं परं शुद्ध्यति धीर्यथायथा १३ यावन्न जायेत परावरेस्मिन् विश्वेश्वरे द्रष्टरि
भक्तियोगः तावत्स्थवीयः पुरुषस्य रूपं क्रियावसाने प्रयतः स्मरेत १४ स्थिरं सुखं चासनमास्थितो यतिर्य
दा जिहासुरिममंगलोकं देशे च काले च मनो न सज्जयेत् प्राणान्नियच्छेन्मनसा जितासुः १५

के अंग बुद्धि करि भावना करैं जो जो अंग अच्छें हृदय में आय जाय ताहि ताहि छोड़ि और कौं ध्यान करैं त्यों ही त्यों ही बुद्धि शुद्ध होय १३ हे राजन् सगुणनिर्गुणरूप भगवान विषैं जब तांई भक्तियोग न होहि तब तांई नित्यकर्मादिक के अंत में भगवत्स्थूलरूप कौं स्मरण करै सावधान होइ कै १४ जब यह संन्यासी वैराग्ययुक्त या देह कौं छोड्यो चाहैं तब स्थिर होय सुखपूर्वक आसन पै बैठें देशकाल में मन न लगावैं प्राणायाम करि मन सहित प्राणन कौं जीतै १५

औरजोवेसैंनिर्वाहनहोयतौमार्गमेंकहाचीरनहीं औरक्षनेपरोपकारकोंवनाएवृक्षकहाभिक्षानहीदेतैं उनहीकेफलफूलन
मैंनिर्वाहकरैं औरनदीकहासूषगई जवप्यासलगैतवजलउनमैंपीलेहिं औरगुफाकहारुकिगई उनहीमेंसोवैवैठें और
जोकोईवाहिरजगैयाकीवनाईउनवनैंतोहरिकोंहथियारोंवहुतभरोसोराषैं जोसवछोडिजिननेंहरिकीसरणलई तिनेंकहा
हरिरक्षानकरेंगें करैंगेहिं तातेधनकेमदमैंआंधरेजोरजोगुणीतिनकेद्वारेविरक्तकाहेकोंडोलैं वैराग्यकोलाजुलगावै ५
ऐसेंसमझअपनेचितमेंस्वतेहीआत्माप्यारे अर्थरूपभगवान अनंततिनेंनिश्चलहोयातिनकेंभजनवकरिकैं आनंदहोयें

चीराणिकिंपथिनसंतिदिशंतिभिक्षांनैवांघ्रिपाःपरभृतःसरितोप्यशुष्यन् रुद्धागुहाःकिमजितोवतिनोपसन्नान्क
स्माद्भजंतिकवयोधनदुर्मदांधान् ५ एवंस्वचित्तेस्वतएवसिद्धआत्माप्रियार्थोभगवाननंतः तंनिर्वृतोनियतार्थो
भजेतसंसारहेतूपरमश्चयत्र ६ कस्तांत्वनादृत्यपरानुचिंतामृतेपशूनसतीनामकुर्यात् पश्यंजनंपतितंवै
तरण्यांस्वकर्मजान्परितापान्जुषाणं ७ केचित्स्वदेहांतर्हृदयावकाशेप्रादेशमात्रंपुरुषंवसंतं चतुर्भुजंकं
जरथांगशंखगदाधरंधारणयास्मरंति ८ प्रसन्नवक्त्रंनलिनायतेक्षणंकदंबकिंजल्कपिशंगवाससं लसन्म
हारत्नहिरण्मयांगदंस्फुरन्महारत्नकिरीटकुंडलं ९

सोतैंभजनकरैंजाकेभजनकरेंसंसारकोंउपरामहोहै ६ एजीवसंसारवैतरणीमेंपडेंअपनेकर्मफलनकोंभोगेहै
तिनेंदुखियादेख ऐसेंकौनपशुविनाजोहरिकीचिंताछोडिविषयचिंताकरैं ७ कोईएकअपनेदेहकेभीतरप्रादेशप्र
माणचतुर्भुजशंखचक्रगदापद्मधारिभगवानविराजेहैं तिनेंधारणकरिस्मरणकरैंहैं ८ कैसेभगवानप्रसन्नजिन
कोमुखारविंद कमलसेवडेवडेजिनकेनेत्र कदंबपुष्पकेकेशरानहूतपारिजातकेवस्त्रदेदीप्यमान रतननकेजडाऊ
सुवर्णमयहैंवाजूवंदजाके शोभायमान रत्ननजटितहैं मुकुटकुंडलहैंजाकें ९ श्रीकृष्ण

इतनी यह ईश्वररूप भगवान् की अंग की रचना मैंने तेरे आगे कही याकी भगवान के स्थूलरूप में मन अपनी बुद्धि करि लगाइजो हरि याते
रिक्त और कछू है नहीं ३८ जैसें कोई स्वप्न में वहुत देहन कों रचि यह जीव ईन्द्रीयन करि सब कों देखे है ऐसे ही सबन की बुद्धि वृत्तन करि
अनुभव करत हैं सब जानें ऐसें सब के आत्मा सत्य आनंदनिधि भगवान तिन कों भजन करें और जगें न आसक्त होय जाय जाते संसा
र होय ३९ इति श्रीभागवते द्वितीयस्कंधे प्रथमोध्यायः १ पहिलें ब्रह्मा कूं सृष्टि की सुधि भूलि गई ही सो याही धारणा करि हरि कों

इयान सावीश्वर विग्रहस्य यः संनिवेशः कथितो मयाते संधार्यतेस्मिन वपुषि स्थविष्ठे मनः स्वबुद्ध्या न यतोऽस्ति किंचित् ३८
स सर्वधीवृत्त्यनुभूत सर्व आत्मा यथा स्वप्नजनेक्षितैकः तं सत्यमानंदनिधिं भजेत नान्यत्र सज्जेद्यत आत्मपातेः ३९ इति
श्रीभागवते महापुराणे द्वितीयस्कंधे महापुरुषसंस्थानुवर्णनं प्रथमोध्यायः १ श्रीशुक उवाच एवं पुरा धारणयात्मयोनि
र्नष्टां स्मृतिं प्रत्यवरुध्य तुष्टात् तथा ससर्जेदममोघदृष्टिर्यथाप्ययात्प्राग्व्यवसायबुद्धिः १ शाब्दस्य हि ब्रह्मण एष पंथा यन्ना
मभिर्ध्यायति धीरपार्थैः परिभ्रमंस्तत्र न विंदतेर्थान् मायामये वासनया शयानः २ अतः कविर्नामसु यावदर्थः स्यादप्रम
त्तो व्यवसायबुद्धिः सिद्धेऽन्यथार्थे न यतेत तत्र परिश्रमं तत्र समीक्षमाणः ३ सत्यां क्षितौ किं कशिपोः प्रयासैर्बाहौ स्वसि
द्धे ह्युपबर्हणैः किं सत्यंजलौ किं पुरुधान्नपात्र्या दिग्वल्कलादौ सति किं दुकूलैः ४

रिझाय स्मरण पाय पहेली सी नाही विश्व कों सृजत भयो जैसे प्रलय ते पहिलें सजी ही १ वेद हू कों मार्ग यही है जो अर्थशून्य स्व
र्गादि नाम निकरि कें साधन की बुद्धि अनेक ध्यान कों करे है परंतु मायामय मार्ग में सोवत जो जीव सो उपर नीचे लोकन में भ्रमत
सुख सार्थ कूं नहीं प्राप्ति होहै २ याते जो कोई विवेकी कवि निश्चयात्मक ज्ञा की बुद्धि सो नाममात्र जो स्वर्गादिकन के भोग तिन में मन
न देया या भूलोक जितने में अपनो देह निर्वाह होय उतने में संतोष करें सो उ जो देह निर्वाह सहज में होय तो परिश्रम देखि वहुत
में यत्न न करें ३ पृथ्वी वड़ी सी याते याके होतें और शय्या के यत्न करि कहा। अजान के होतें न किया के यत्न करिवो कहा। दिशा वल्क
लायके होतें और वस्त्रन करिकें कहा होहै ४

अंतरीक्ष भगवान के नेत्र हैं सूर्य चक्षुरिंद्रीय हैं दिनरात्रि पलकन कौ लगावो उघरवो है ब्रह्मपद भगवान कौ भ्रूविलास है जल
तालू और रस भगवान की जिह्वा कहे हैं यमराज दंष्ट्रा दांत स्नेह कौं कहत हैं ते तें भगवान की सो ई जनन कौं उन्माद करवे वारी माया है
और भगवान के कटाक्ष कौं मोक्ष पद तें अपार सर्ग है ३१ लज्जा उपर लो होट लोभ नीचे को होट धर्म स्तन अधर्म पृष्ठ भाग हैं प्रजाप
ति मेंढ्र हैं मित्रावरुण वृषण हैं समुद्र कुक्षि हैं परवत अस्थि समूह है ३२ नदी भगवान की नाडी हैं वृक्ष रोम हैं अनंत है बल जाकौं
ऐसे पवन स्वास कहिये काल भगवान कौ गमन है प्राणीन कौं संसार वाकी क्रीडा है ३३ मेघ ईश्वर के केश कहिये और हे राजन्

द्यौरक्षिणी चक्षुरभूत्पतंगः पक्ष्माणि विष्णोरहनी उभे च तद्भ्रूविजृंभः परमेष्ठिधिष्ण्यमापोस्य तालू रस एव जिह्वा ३०
छंदांस्यनंतस्य शिरो गृणंति दंष्ट्रा यमः स्नेहकला द्विजानि हासो जनोन्मादकरी च माया दुरंतसर्गो यदपांगमोक्षः ३१ व्री
डोत्तरोष्ठोऽधर एव लोभो धर्मः स्तनोऽधर्मपथोस्य पृष्ठं कस्तस्य मेढ्रं वृषणौ च मित्रौ कुक्षिः समुद्रा गिरयोस्थिसंघाः ३२
नद्योस्य नाड्योथ तनूरुहाणि महीरुहा विश्वतनोर्नृपेंद्र अनंतवीर्यः श्वसितं मातरिश्वा गतिर्वयः कर्मगुणप्रवाहः
ईशस्य केशान्विदुरंबुवाहान् वासस्तु संध्यां कुरुवर्य भूम्नः अव्यक्तमाहुर्हृदयं मनश्च स चंद्रमाः सर्वविका
रकोशः ३४ विज्ञानशक्तिं महिमामनंति सर्वात्मनोंतःकरणं गिरित्रं अश्वाश्वतर्युष्ट्रगजा नखानि सर्वे मृगाः पशवः
श्रोणिदेशे ३५ वयांसि तद्व्याकरणं विचित्रं मनुर्मनीषा मनुजो निवासः गंधर्वविद्याधरचारणाप्सरः स्वरस्मृतीरसुरानी
कवीर्याः ३६ ब्रह्माननं क्षत्रभुजो महात्मा विडूरुरंघ्रिश्रितकृष्णवर्णः नानाभिधाभीज्यगणोपपन्नो द्रव्यात्मकः कर्मविता

संध्या वस्त्र कहिये हैं चंद्रमा मन है जो मन सब विकारन आश्रय भूत है ३४ महतत्व भगवान कौ चित्त कहे हैं सर्वात्मा प्रभु कौ अंतः
करण रूप है घोडा खच्चर ऊंट हाथी नख हैं और मृग पशु सब नितंब देश में हैं ३५ पक्षी भगवान की विचित्र वाणी है स्वायंभुव मनु
बुद्धि है मनुष्य शरीर भगवान के रहवे की जगा है गंधर्व विद्याधर चारण अप्सरा ये स्वर्ग की स्मृति है असुरन की सेना जाकौं पराक्र
म है ३६ ब्राह्मण जाकौं मुख क्षत्री भुजा वैश्य जंघा नते हैं पाउन तें जाके शूद्र भयो और नाना जिन के नाम ऐसे देवतान के गन करि

जाधारणाकरेतें योगीकोंभक्तिलक्षणयोगहोयहै औरसुखात्मकविषैकोंदेषनवारीमैप्रीतहोहै॥ २१ राजापूछैहै हेब्रह्मन्
जाप्रकारधारणाकरीयें जैसीवहधारणाहैंजामैंकरीयें जोएहषकेमनमैंमैलकोंदूरिकरैहैं नाधारणाकौंकहौ २२ शुकदेव
जीकहैहैं हेराजन् आसनस्वासजीतसंगजितेंद्रीहोय भगवानकेस्थूलरूपमैंमनबुद्धिकरलगावैं २३ बाहिरकोयहविराटदेह
स्थूलनमैंअतिसयस्थूलहैं जामैंभूतभविष्यतवर्तमानसबविश्वदिखाईदेइहै २४ सातआवरणकरियुक्त अंडकोषप्राप्तवर्ती
यहसरीरतामैंविराटपुरुषभगवान्धारणाकोंआश्रयहैं २५ पातालभगवानकोंपादमूलहैं रसातलपाउनकौंअगारीपिछारी

यतःसंधार्यमाणायांयोगिनोभक्तिलक्षणः आशुसंपद्यतेयोगआश्रयंभद्रमीक्षतः २१ राजोवाच यथासंधार्यते
ब्रह्मन्धारणायत्रसंमता यादृशीवाहरेदाशुपुरुषस्यमनोमलं २२ श्रीशुकउवाच जितासनोजितश्वासोजितसं
गोजितेंद्रियाः स्थूलेभगवतोरूपेमनःसंधारयेद्धिया २३ विशेषस्तस्यदेहोयंस्थविष्ठश्चस्थवीयसान् यत्रेदंदृश्यतेवि
श्वंभूतंभव्यंभवच्चसत् २४ अंडकोशेशरीरेस्मिन्सप्तावरणसंयुते वैराजःपुरुषोयोसौभगवान्धारणाश्रयः २५
पातालमेतस्यहिपादमूलंपठंतिपार्ष्णिप्रपदेरसातलं महातलंविश्वसृजोथगुल्फौतलातलंवैपुरुषस्यजंघे २६ द्वे
जानुनीसुतलंविश्वमूर्तेरूरुद्वयंवितलंचातलंच महीतलंतज्जघनंमहीपतेनभस्तलंनाभिसरोगृणंति २७ उरः
स्थलंज्योतिरनीकमस्यग्रीवामहर्वदनंजनोस्य तपोरराटींविदुरादिपुंसःसत्यंतुशीर्षाणिसहस्रशीर्ष्णः २८ इंद्राद
योबाहवआहुरुस्राः कर्णौदिशःश्रोत्रममुष्यशब्दः नासत्यदस्रौपरमस्यनासेघ्राणोस्यगंधोमुखमग्निरिद्धः २९

भगवानकेटकूनाकहीये तलातल
कौभागकहीये महातलपींडुरीकहीयें २६ सुतलभगवानकेदोउघोंटू वितलअतलदोउऊरू घोंटूनकेऊपरमहीतल
भगवान्केजघानमैंनभस्थल भगवानकोदोनाभिसरकहैहैं २७ स्वर्गवक्षस्थलहैं जनलोकमुखहैं तपलोकललाटहैं
सत्यलोकआदिपुरुषसिरकहैहैं २८ इंद्रादिदेवताभगवानकोभुजाकहीयें दिसाकर्णहैं शब्दश्रवणइंद्रीयहैं अश्वनीकुमा

जिनकौं संसारतें निर्वेद भयौं अकुतोभय स्थान चाहैं हैं और ये जोगी हैं तिनकौं यह हरिनामकौं कीर्तन ठीक कह्यौं है ११ असावधानी मैं विगरजानें बहुत वर्ष वितीत भए तौ उनकरि कहा और जो जानि कैं अपने कल्यान कौ जतन करै तौ दोघडी हू बहौत उतने मैं ही सब कछु करै १२ खट्वांग राजा अपनी दोघडी आर्बल जान उतने मैं ही सब छोड अभय हरिकौं प्राप्ति भयौं १३ तातें हे कौरव्य तेरे तौ अबी सात दिन जीवे के वाकी हैं तातें तू अब परलोक कूं सुधारवे कौ कर्म सब करि लै १४ हे राजन अंतकाल कूं प्राप्त पुरुष भय न करैं और वैराग रूपी खड्ग करले ह और पुत्र कलित्रादिकनकी चाह काटि डारैं १५ अंत समय विवेकी

एतन्निर्विद्यमानानामिछतामकुतोभयं योगिनां नृपनिर्णीतं हरेर्नामानुकीर्तनं ११ किं प्रमत्तस्य बहुभिः परोक्षैर्हायनैरिह वरं मुहूर्तं विदितं घटते श्रेयसे यत १२ खट्वांगो नाम राजर्षिर्ज्ञात्वेयत्तामिहायुषः मुहूर्तात्सर्वमुत्सृज्य गतवानभयं हरिं १३ तवाप्येतर्हि कौरव्य सप्ताहं जीवितावधि उपकल्पय तत्सर्वं तावद्यत्सांपरायकं १४ अंतकाले तु पुरुष आगते गतसाध्वसः छिंद्यादसंगशस्त्रेण स्पृहां देहेनु ये च तं १५ गृहात्प्रव्रजितो धीरः पुण्यतीर्थजलाप्लुतः शुचौ विविक्त आसीनो विधिवत्कल्पतासने १६ अभ्यसेन्मनसा शुद्धं त्रिवृद्ब्रह्माक्षरं परं मनो यच्छेज्जितश्वासो ब्रह्मबीजमविस्मरन् १७ नियच्छेद्विषयेभ्योक्षान्मनसा बुद्धिसारथिः मनः कर्मभिराक्षिप्तं शुभार्थे धारयेद्धिया १८ तत्रैकावयवं ध्यायेदव्युछिन्नेन चेतसा मनो निर्विषयं युक्त्वा ततः किंचन न स्मरेत् पदं तत्परमं विष्णोर्मनो यत्र प्रसीदति १९ रजस्तमोभ्यामाक्षिप्तं विमूढं मन आत्मनः यच्छेद्धारण

घरतें वैराग्य लें जाय पवित्र तीर्थ के जल मैं स्नान करैं एकांत पवित्र जगे मैं विधि पूर्वक आसन विछाय वैठैं १६ मन करि शुद्ध जो प्रणव ताकौं उच्चारण करैं मन स्वास रोकि कैं प्रणव बीज ताकौं भूलैं नहीं १७ मन करि सहित इंद्रियन कौं विषयन तें रोकैं कर्म मैं मन करि विक्षिप्त जो मन ताय भगवत् स्वरूप मैं लगावैं १८ एकाग्रचित करि हरि कौं एक एक चर्णादिक अंग न कौं ध्यान करैं निर्विषय मन मैं लगाय ताको छैं कछु स्मरण करैं वह भगवान कौं परमपद जा मैं मन उपशम पावैं रजोगुण तमोगुण करि विक्षिप्त मूढ जो मन ताहि

भा॰टी॰द्वि॰
५

तहांयोगीकोंदोयप्रकारकीमुक्तिहैं एकसद्योमुक्ति एकक्रममुक्तिकहेहैं जोब्रह्मलोकमेंजायोंचाहे अथवादेवतानकीक्रीडा स्थानदेखोंचाहेंवाअणिमादिऐश्वर्यपायोंमें ओसेअस्थानमेंजायोंचाहैं वाब्रह्मांडमेंसर्वत्रहीजायोंचाहैं तोमनइंद्रीनकर सहितजायउनेंछोडेंनहीं २२ पवनस्वरूपयोगेश्वरतिनकीत्रिलोकीकेबाहरभीतरगतिहैं कर्मनकरिवतगतिनहींमिलैहैं जो विद्यातपयोगसमाधिवारेनकोंगतिमिलैहैं २३ आकासमार्गमेंहोइ अग्न्यभिमानीदेवताकोंप्राप्तिहोय ओरब्रह्ममार्गसुषु मनानाडीकरिपापजोकोंदूरिभयोंसोहरिकोंसंबंधीउपरवर्त्तमानशिशुमारचक्रकोंप्राप्तिहोय २४ सूर्यादिकनकोंआश्रयव

यदिप्रयास्यन्नृपपारमेष्ठ्यंवेयाहसानामुतयद्विहारं अष्टाधिपत्यंगुणसन्निवायेसहैवगच्छेन्मनसेंद्रियैश्च
२२ योगेश्वराणांगतिमाहुरंतर्वहिस्त्रिलोक्याःपवनांतरात्मनां नकर्मभिस्तांगतिमाप्नुवंतिविद्यातपोयोगसमा
धिभाजां २३ वैश्वानरंयातिविहायसागतः सुषुम्णयाब्रह्मपथेनशोचिषा विधूतकल्कोथहरेरुदस्तात्प्रयाति
चक्रंनृपशैशुमारम् २४ तद्विश्वनाभिंत्वतिवर्त्यविष्णोरणीयसाविरजेनात्मनैकः नमस्कृतंब्रह्मविदामु
पैतिकल्पायुषोयद्विबुधारमंते २५ अथोअनंतस्यमुखानलेनदंदह्यमानंसनिरीक्ष्यविश्वं निर्यातिसि
द्धेश्वरयुष्टधिष्ण्यंयद्द्वैपरार्द्ध्यंतदुपारमेष्ठ्यम् २६ नयत्रशोकोनजरानमृत्युर्नार्त्तिर्नचोद्वेगऋतेकुतश्चित्
यच्चित्ततोदःकृपयाऽनिदंविदांदुरंतदुःखप्रभवानुदर्शनात् २७

हाविस्नुकोंशिशुमारचक्रवाहिउलंघनकरिसूक्ष्मनिर्मलस्वरूपकरि ब्रह्मवेत्ताजाकोंपूजें ओसेमहरलोककोंजाय कल्पकीजिनकीआरबल ओसेभृग्वादिकजहांरमैंहैं २५ तापीछेंसेसकेमुखकीअग्निकरियाविश्वकोंजलतीदेषिसिद्धेश्वरनकरिसेवतजामेंविमानओसेंब्रह्मलोककोंजाइ जालोककोंसोकजरामृत्युआर्त्तिउद्वेगकछूनहीं एकजोहरिको ध्याननहींजानेहैं तिनकोंवारवारजन्ममृत्युकेंदुःखदेषवेकीचिंताकरैहैं कृपाकरइतनोईदुखहैं २७ रामरामरामजी

निरमल बुद्धि करि मन जीत्यो चाहै बुध्यादिकके द्रष्टा क्षेत्रज्ञमैं लगावैं ताक्षेत्रज्ञकौं सुद्धात्मामैं मिलावै वा आत्माकौं ब्र
ह्ममैं मिलावैं उपशम लैं धीरपुरुष सबकर्मतें विरामकों प्राप्ति होय १६ जा ब्रह्मस्वरूपमें देवतानकों प्रभु ऐसो काल
हूकों जोर नहीं तो देवतानकी उहां गिनती कहा जहां न सतोगुण न रजोगुण न तमोगुण निर्विकार न महत्तत्व न प्रधान ऐ
सो स्थान है १७ जो कोई आत्मा विष्यतिरिक्त पदार्थकों न तिनैं छोडिवो चाहै है ते देहादिकनमें आत्मतत्व छोडिकैं एकात्माह
रहीमें जिनकौं सोहंदता क्षण क्षणमें हरिकै परकों आलिंगन करिवाही परकौं श्रेष्ठ मानै है १८ ऐसें ब्रह्मतत्वमें स्थित चित्ता

मनः स्वबुध्याऽमलया नियम्य क्षेत्रज्ञ एतां निनयेत मात्मनि आत्मानमात्मन्यवरुद्धधीरो लब्धोपशान्तिर्विरमेत
कृत्यात् १६ नयत्र कालोऽनिमिषां परः प्रभुः कुतो नु देवा जगतां य ईशिरे नयत्र सत्वं न रजस्तमश्च न वै विकारो न म
हान् प्रधानम् १७ परं पदं वैष्णवमामनंति तद्यन्नेति नेतीत्यतदुत्सिसृक्षवः विसृज्य दौरात्म्यमनन्यसौहृदा हृदो
पगुह्यार्हपदं पदे पदे १८ इत्थं मुनिस्तूपरमेद्व्यवस्थितो विज्ञानदृग्वीर्यसुरंधिताशयः स्वपार्ष्णिनापीड्य गुदं ततो
ऽनिलं स्थानेषु षट्सून्नमयेज्जितक्लमः नाभ्यां स्थितं हृद्यधिरोप्य तस्मादुदानगत्योरसि तं नयेन्मुनिः २० ततो
ऽनुसंधाय धिया मनस्वी स्वतालुमूलं शनकैर्नयेत तस्माद्भ्रुवोरन्तरमुन्नयेत निरुद्धसप्तायतनोऽनपेक्षः स्थि
त्वा मुहूर्तार्द्धमकुंठदृष्टिर्निर्भिद्य मूर्द्धन् विसृजेत्परं गतः २१

नवल कर जरी हैं विषयवासना जितकी ऐसो मुनि संसारतें उपरामकों प्राप्ति होय सो देहत्यागकों प्रकार हैं अपनी ए
डीसों गुदाद्वार बिना पीछें प्राणवायुकों ऊपर लैं छह ठिकानें चढावें १९ नाभिमें स्थित जो प्राण ताहि हृदयमें लीन करि
उदानगति करि वक्षस्थलमें लावै उहां बुद्धि कर ठहराय तौ ले २ अपने तालुमें लै आवै २० तालुमैं ते भृकुटीके बीचमें
लै आवैं पर बहुत सावधानीसों उहां सात छिद्र हैं ते रोकलें वा समयमें चाहत कोई वस्तु जो न करें उहां घरी भर ठहर ब्रह्मरं
ध्रमें कोर ब्रह्ममें मेल देत इन्द्रियनकों छोडे २१

पूजन करनवारेन कों कल्याण को उदय है जो भगवान के संग करि हरि में अचल भाव करनो ११ जिन कथान के सुनने तें राग द्वेषादि
तरंग नहीं है या लोक परलोक के विषयन में वैराग्य होहै कैवल्य ऐसे संत जो मार्ग भक्तियोग सो जिनतें होइ तिन हरिकथान में ऐ
सो कौन जो प्रीति न करै १२ हे सूत यह वचन सुनि कै राजा परिक्षित ओ शुकदेवजी सों कहा पूछत भयौ सो हे विद्वन् यह हम सुन्यो
चाहैं हैं हमारे आगे तुम कहौ वे कथा जो पहीं जहां परिक्षित से श्रोता शुकदेवजी सरीके वक्ता तिन साधुन के समाज में निश्चै हरिकथा
ही होहै १४ हे राजा परिक्षित परम भागवत जब बालकपने में क्रीडा करते न व और बालिक तो और खेल करते यह केवल कृष्ण की

एतावानेव यजतामिह निःश्रेयसोदयः भगवत्यचलो भावो यद्भागवतसंगतः ११ ज्ञानं यदा प्रतिनिवृत्तगुणोर्मिचक्र
मात्मप्रसाद उत यत्र गुणेष्वसंगः कैवल्यसंमतपथस्त्वथ भक्तियोगः को निर्वृतो हरिकथासु रतिं न कुर्यात् १२ शौनक
उवाच: इत्यभिव्याहृतं राजा निशम्य भरतर्षभः किमन्यत्पृष्टवान्भूयो वैयासकिमृषिं कविम् १३ एतच्छुश्रूषतां वि
द्वन्सूत नोऽर्हसि भाषितुं कथा हरिकथोदर्काः सतां स्युः सदसि ध्रुवं १४ स वै भागवतो राजा पांडवेयो महारथः बाल
क्रीडनकैः क्रीडन्कृष्णक्रीडां य आददे १५ वैयासकिश्च भगवान्वासुदेवपरायणः उरुगायगुणोदाराः सतां स्युर्हि स
मागमे १६ आयुर्हरति वै पुंसामुद्यन्नस्तं च यन्नसौ तस्यर्ते यत्क्षणो नीत उत्तमश्लोकवार्तया १७ तरवः किं न जीवंति
भस्त्राः किं न श्वसंत्युत न खादंति न मेहंति किं ग्रामपशवोऽपरे १८ श्वविड्वराहोष्ट्रखरैः संस्तुतः पुरुषः पशुः न यत्कर्णपथोपेतो

डारूप ही खेल करतौ १५ और भगवान शुकदेवजी हू वासुदेवपरायण है ऐसे साधुन के समागम में हरि के ही गुण उच्चारतो है १६
हे सूतजी यह सूर्य उदय अस्त प्राणिन की आयु खात है परंतु जो क्षण हरिगुणानुवाद में व्यतीत होय ता विना १७ हरिगुणानुवा
द विना वृथा जीवन है जैसे वृक्षन हू जीवें श्वासन की कहि ये तो कहा धौंकनी श्वास नहीं लेहै खायवे की विषय की कहीये तो अजकर कूकर
कहा खाय न ही विषयन नहीं करें तेसें ही विमुखन की सब क्रिया है १८ जाके कर्ण मार्ग में कब हू गदाग्रज भगवान गये बहु कुत्ता शूकर

भक्षभोज्यकीकामनाहोइतौ अदितिकोंभजै स्वर्गकीकामनाहोयतौदेवतानकोंभजैं राज्यकीवृद्धिचाहैतौंविश्वेदेवानकोंभजै देश
कीप्रजानकोंआधीनचाहैतौसाध्यनकोंभजैं ४ बड़ीआरबलचाहैतौअश्वनीकुमारकोंभजैं मोटोंभयोंचाहैतौंपृथ्वीकोंभजैं बडोप्र
तिष्ठाचाहैतौंलोकनकेमावापस्वर्गऔरपृथ्वीउनैंभजै ५ सुंदररूपकीजाकेकामनाहोयसोगंधर्वनकोंभजैं स्त्रीकीकामनाजाकै
सोउरवसीअपसराकोंभजै औरजोसबकोंअधिपत्यचाहैंतौंपरमेष्ठिकोंभजैं यसकीकामनाहोयतौंयज्ञोपाधभगवानकोंभजै ६ द्र
व्यसंचयचाहैतौकुबेरकोंभजैं विद्याकीकामनाहोइतौमहादेवकोंभजैं स्त्रीपुरुषमेंपरस्परप्रीचाहैतौपारवतीकोंभजनकरै७ धर्म

अन्नाद्यकामस्त्वदितिंस्वर्गकामोऽदितेस्सुतान् । विश्वान्देवाश्राज्यकामाः साध्यान्संसाधकोविशां ४ आयुः
कामोऽश्विनौदेवौपुष्टिकामइलांयजेत् प्रतिष्ठाकामपुरुषोरोदसीलोकमातरौं ५ रूपाभिकामोगंधर्वान्स्त्री
कामोप्सरउर्वशीं अधिपत्यकामःसर्वेषांयजेतपरमेष्ठिनं ६ यज्ञेयजेद्यशस्काम:कोशकाम:प्रचेतसां विद्याका
मःस्तुगिरिशंदांपत्यार्थोउमासतीम् ७ धर्मार्थउत्तमश्लोकंतंतुतन्वन्पितॄन्यजेत् रक्षकामापुण्यजनानोजस्का
मोमरुद्गणान् ८ राज्यकामोमनून्देवान्निरृतिंत्वभिचरन्यजेत् कामकामोयजेत्सोममकामःपुरुषंपरं ९
अकाम:सर्वकामोवामोक्षकामउदारधीः तीव्रेणभक्तियोगेनयजेत्पुरुषंपरम् १०

कीवृद्धिचाहैतौंउत्तमश्लोकभगवान्कोंभजनकरैं संतान्कीवढवारचाहैतौंपितरनकोंपूजै अपनीरक्षाचाहैंतौंयक्ष
नकोंपूजैं वलचाहैतौंमरुद्गणनकोंपूजैं ८ राज्यकीकामनाहोइतौंमनुदेवताकोंपूजैं वैरीनकौंमार्योंचाहैंतौंनिरृत
तिराक्षसकोंपूजैं वहुतभोगकीइच्छाहोयतौंचंद्रमाकोंपूजैं औरजोनिष्कामहोयतौंहरिकोंपूजैं ९ औरजोनिष्कामहोइवा
सर्वकामनाहोइ अथवामोक्षकीजाकेंकामनासोप्रवलभक्तियोगकरिहरिकोंभजैं औरदेवतातौंएककामनाकेदेनवारेहैं और
हरिसवकामनादेहैंभक्तहूकीसवकामनापूरीकरैहैं औरनिष्कामकोंअपनपोंदेहै यातेंव

भ
टि
पु
५८

उहां तें आगें लिंगदेह करि पृथ्वीस्वरूपकों पाय तापीछें सब आवरण भेदहैं जलमें जलस्वरूप होय पीछें पीथ्वीमें ज्योतिमय फि
रसमय पाय पवनकों प्राप्ति होय पवनस्वरूप करि आकासकों प्राप्ति होयहै २८ उहां ताई इंद्रीय मनवनेतें सो घ्राण करि श्र
वण करणादस्वरूपता पाय और कर्मेंद्रियन करि हलाक्रियाकों प्राप्ति होयहै २९ सो जोगी भूतसूक्ष्म इंद्रियनकों जामें लय
असो मनोमय देवमय अहंकारकों प्राप्ति होय ताही भांति गुणनकों जामें लय असें महत्तत्वकों प्राप्ति होइहै ३० पीछें प्रधानस्व

ततो विशेषं प्रतिपद्य निर्भयस्तेनात्मनापोऽनलमूर्तिरत्वरन् ज्योतिर्मयो वायुमुपेत्य काले वाय्वात्मना खं
बृहदात्मलिंगं २८ घ्राणेन गंधं रसनेन वै रसं रूपं तु दृष्ट्या श्वसनं त्वचैव श्रोत्रेण चोपेत्य नभोगुणत्वं प्राणेन चा
कूतिमुपैति योगी २९ स भूतसूक्ष्मेंद्रियसंनिकर्षं मनोमयं देवमयं विकार्यं संसाद्य गत्यासह तेन याति वि
ज्ञानतत्वं गुणसंनिरोधम् ३० तेनात्मनात्मानमुपैति शांतमानंदमानंदमयोऽवसाने एतां गतिं भाग
वतीं गतो यः स वै पुनर्नेह विसज्जतेंग ३१ एते सृती ते नृप वेदगीते त्वयाभिपृष्टे च सनातने च ये वै पुरा ब्रह्म
ण आह पृष्ट आराधितो भगवान् वासुदेव ३२ न ह्यतोन्यः शिवः पंथा विशतः संसृताविह वासुदेवे भगवति
भक्तियोगो यतो भवेत् ३३ भगवान् ब्रह्म कार्त्स्न्येन त्रिरन्वीक्ष्य मनीषया तदध्यवस्यत्कूटस्थो रतिरात्मन्

रूप होइ ताही रूप होइ करि आनंदमय सांति होय आनंदरूप हरिकों प्राप्ति होहै या भागवती गतिकों जो प्राप्ति भयो सो
फिर या संसारमें नहीं आवें ३१ श्रीसुकदेवजी कहेहैं हे राजन् ए दोमी मार्ग सद्यो मुक्ति और क्रम मुक्ति जो तैंने पूछी सो तुम
तेरे आगें कहीजे मार्ग पहलें ब्रह्माने पूछी तब वाके आगें नारायण वासुदेवने कहे ३२ याते आगें और कल्याणको मार्ग या सं
सारी जीवको नाहि जे भगवान वासुदेवमें भक्तियोगकों करें ३३ भगवान ब्रह्मा आपनी बुद्धि करि तीनवार वेदनकैं विचार यही नि

भगवान् हरिसर्वप्राणीनमेंअपनेस्वरूपकरिलखियेहैं दृश्यजडजोदेहादिकतिनकोंप्रकाशस्वप्रकाशदृष्टाविनान
हीवनैहैं इनलक्षणकरिजानियेहैं ३५ तातेहेराजन् सवठौरसवकालमें हरिहीश्रवणकोंकीर्तनकोयोग्यमनुष्यनकोंस्म
रणकोयोग्यहै ३६ साधुनकेआत्माभगवान्हरितिनकीकथारूपीअमृतताहिकानरूपीदोनाननमेंभरिकेजेपीवैहैं तेविष
यनकरविगरेजोअंतःकरणतिपवित्रकरैहैं औरवाहरिकेचरणारविंदकेनिकटजाहे ३७ इतिश्रीभागवतेद्वितीयस्कंधे २

भगवन्सर्वभूतेषुलक्षितःस्वात्मनाहरिः दृश्यैर्बुद्ध्यादिभिर्द्रष्टालक्षणैरनुमापकैः ३५ तस्मात्सर्वात्मनाराजन्
हरिःसर्वत्रसर्वदा श्रोतव्यःकीर्तितव्यश्चस्मर्तव्योभगवान्नृणां ३६ पिबंतियेभगवतआत्मनःसतांकथामृतंश्रव
णपुटेषुसंभृतं पुनंतितेविषयविदूषिताशयंव्रजंतितच्चरणसरोरुहांतिकं ३७ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे
द्वितीयस्कंधेद्वितीयोध्यायः २ श्रीशुकउवाच : एवमेतन्निगदितंपृष्टवान्यद्भवान्मम नृणांयन्म्रियमाणा
नांमनुष्येषुमनीषिणां १ ब्रह्मवर्चसकामस्तुयजेतब्रह्मणःपतिं इंद्रमिंद्रियकामस्तुप्रजाकामःप्रजापतीन् २
देवींमायांतुश्रीकामस्तेजस्कामोविभावसुं वसुकामोवसून्रुद्रान्वीर्यकामोथवीर्यवान् ३

हेराजन् जोतेनेपूछोसोमेंकह्यो जोमनुष्यमरणहारहैं तिनहूमेंविचारवानहैं तिनकोंहरिकथाश्रवणादिकहीकह्यो
हैयहीकल्याणकारीहैं १ औरजोकोईकामनाराखैसोदेवतानकोंभजैहै परंतुदेवताएकएकहीवरकेदेवेवारेहैं और
हरिसवमनोरथपूरणकरैहैं सोईकहैहैं जाकेंब्रह्मतेजकीकामनाहोइसोब्रह्माकोंभजे इंद्रियनमेंवडीसामर्थ्यचा
हेतोंइंद्रकूंभजें वहुतपुत्रचाहैतोंदक्षादिकप्रजापतिनकोंभजें २ लक्ष्मीकीकामनाजाकेंसोदुर्गाकूंभजें तेजकीकामनाहोइ
तोअग्निकूंभजें धनकीकामनाहोयतोंवसुनकोंभजें वीर्यकीकामनाहोइतोरुद्रकोंभजे ३